कतरे–कतरे आंसू

; लघुकथा संग्रह

नन्दलाल भारती

सर्वाधिकार–लेखकाधीन

आराधना

लालेन्द्र को पूजा में लीन ,अखबार पर पड़े साम्प्रदायिक खूनी संघर्ष के छींटें देखकर तन्मय बौखलाकर बोला पापा आप किस किस की पूजा कर रहे है ?

लालेन्द्र–बेटा भगवान की ।

तन्मय– शहर खून से लाल हो रहा है । सब अपने अपने धर्म के नाम पर लड़ रहे है । आप सभी भगवानों की पूजा कर रहे हैं ।

लालेन्द्र–बेटा सबका मालिक एक है । कोई भगवान के नाम से,कोई खुदा के नाम से, कोई गाड के नाम से कोई बुध्द कोई महावीर कोई अन्य नाम से अराधना कर रहा है। मै सभी की कर रहा हूं । कोई भी धर्म वैमनस्यता का बीज नही बोता । सच्चा धर्म तो सर्वसमानता की बात करता है । बेटा उन्माद खून बहा रहा है। जिसे स्वार्थ शासित कर रहा है । धर्म से मानवता पुलकित होती है ।

तन्मय–पापा जो धर्म के नाम पर उग्रवाद फैल रहा है खून बह रहा है, एक आदमी दूसरे को मारने के लिये खंजर लेकर दौड़ रहा है । क्या वह धर्म नहीं.... ?

लालेन्द्र–बिल्कुल नही ।वह तो अधर्म है,जो लोग धर्म के नाम पर खून बहा रहे है।वे उग्रवादी है,उन्मादी है।दहश्त फेलाकर राज करना चाहते है । तन्मय–सर्वधर्म समानता, बहुजन हिताया बहुजन सुखाय के भाव में ही कल्याण है पापा..
लालेन्द्र–हां बेटा सच्ची अराधना यही है.....

ईमान

सुबह गदराई हुई थे लोग खुश थे क्योंकि उनके सूखते धान के खेत लहलहा उठे थे, बरसात का पानी पाकर ।इसी बीच राजा बदमाश आ धमका अपने कई साथियों के साथ ।राजा बदमाश और उसके साथियों को देखकर ईमानदेव बोले कैसे आना हुआ राजा बाबू ।
राजा–ईमानदेव नाम तो ईमानदेव है बात बेईमानों जैसी कर रहे हो । गाय तुम्हारे खूटे पर वापस बांध गया था भूल गये ।पैसा वापस लेने आया हूं ।
ईमानदेव–वचन दिया हूं तो पूरा करूंगा थोड़ा वक्त दो । वैसे तो तुम नाइंसाफी कर रहे हो चार माह गाय का दूध खाने के बाद मरणासन्न अवस्था मे मेरे दरवाजे बांध गये ।कोई इज्ज्तदार और समझदार आदमी तो ऐसा नही करता जैसा तुमने किया है राजाबाबू।
राजा–ईमानदेव मुझे वैसे लेने आता है कहते हुए ईमानदेव का गला पकड़ लिया ।यह देखकर असामाजिक इक्ट्ठा होकर ठहाके मार रहे थे राजा मारपीट पर उतर आया । ईमानदेव का दमाद कैलाश लहूलुहान हो गया। राजा के खूनी ताण्डव को देखकर ईमानदेव की पतोहू दुर्गा उठ खड़ी हुई हाथ में चप्पल लेकर इतने में राजा बदमाश और उसके साथी पत्थर फेंकते भागते नजर आये । कुछ देर में पूरी बस्ती के लोग इक्ट्ठा हो गये । बस्ती के लोग ईमानदेव को पैसा न देने की सलाह देने लगे परन्तु उखडें पावं ईमानदेव का ईमान मुस्करा रहा था ।

प्योरहिट

कमलसाहब– क्या बात है लोकेश । खिस्सा कट गया क्या ?
लोकेश–हां साहब कुछ ऐसा ही हुआ है ।
कमलसाहब–सच ?
लोकेश– हां साहब । तीन महीना पहले बच्चों ने वाटर प्योरहिट लगवाया था अट्ठारह सौ रूपये में। लगवाते समय तो कम्पनी वालों ने बताया था

कि बैटरी आठ महीने चलेगी । ये तो तीन महीन में खत्म हो गयी । बैटरी खत्म होते ही मशीन से पानी बहने लगा है ।
कमलसाहब– प्योरहिट कम्पनी में बात करो । ऐसे कैसे ग्राहक का पाकेट काटेगे ये प्योरहिट वाले ?
लोकेश– अपनी बात से मुकर रहे है । हर तीसरे माह चार सौ रूपये का खर्चा बता रहे है । बैटरी बदलने पर ही मशीन से पानी भी बहना बन्द होगा। बैटरी नही बदलवाते है तो मशीन किसी काम की नही । प्योरहिट वालो ने ठग लिया साहब ।
कमलसाहब–सच तुम्हारा खिस्सा काट लिया प्योरहिट वालो ने धोखे से ।

कन्या

मई की तपती दोपहर में शिशु के रोने की आवाज ने सुखवन्त को असीम शीतलता प्रदान कर दी । वे अवतरित हुए शिशु के बारे मे जानने को उत्सुक थे । वही बेटा हरिद्वार बेचैन था पत्नी निर्मला की एकदम से खामोश की वजह से । इसी बीच किवाड़ खुली और रामप्यारीदेवी बाहर निकली । वे एकदम से बोली बधाई हो जेठजी दादा बन गये । हरिद्वार बेटवा तुम तो ससुर बन गये । बहुत बहुत बधाई ।
सुखवन्त–रामप्यारी कन्या का जन्म हुआ है क्या ?
रामप्यारी– हां जेठजी कन्या ।
सुखवन्त–बेटा हरिद्वार खूब खुशी मनाओ । पूरे गांव में मिठाई बांटो। हमारे घर विद्या,धन और बल का अवतरण हुआ है कहते हुए हरिद्वार को छाती से लगा लिये ।
रामप्यारी–क्या..... ?

विद्रोह

बगावती काकी सास दमयन्तीदेवी के सामने थाली पटकते हुए बोली भैंस का चारा–पानी मै कर रही हूं और दूध पुष्पा पी रही है । अम्मा ये बेगानापन क्यों ?
दमयन्तीदेवी– बीटिया तू नही जानती क्या ?पुष्पा के पेट में जानलेवा दर्द हो रहा है । डाक्टर ने पन्द्रह दिन तक खाना देने को मना किया है । बेटी तू ही बता पुष्पा कैसे रहेगी जिन्दा बिना खाये,पीये । कुछ तो चाहिये ना.....
बगावती– सगी पतोहू को दूध पिला रही हो मुझे सूखी रोटी ।

दमयन्ती–बेटी तेरे पति को अपना दूध पिलाकर पाला तो क्या तुझे सूखी रोटी दे सकती हूं । सब तो तेरे हाथ मैं है ना । कभी तुमको रोका है क्या ? क्यों विद्रोह पर उतर रही हो ।
बगावती–विद्रोह के बिना कैसे हक मिलेगा इस घर में ?
दमयन्तीदेवी–कैसा हक चाहती हो बीटिया ?
बगावती–आधे का ।
दमयन्तीदेवी–घर में दीवार..... ?
बगावती–हां.....
इतना सुनते ही दमयन्तीदेवी गिर पड़ी धड़ाम से बेसुध .....

शुभकामना

मित्रवर कहा था भेड़ा मत पालो । उलट कर वार करेगा फिर सम्भल न पाओगे ।
गोपाल–क्या कह रहे हो रंजीत ? भेड़ा नही भतीजा है जीतू ।
रंजीत–तुम्हारा नही भाई का ।
गोपाल – है तो कुल का चिराग । पढलिखकर खानदान का नाम रोशन करेगा ।
रंजीत–रिसता घाव भी देगा ।
गोपाल–हर घाव सह लूंगा पर फर्ज से ना मुकरूगा । अपने बच्चों के साथ भतीजे को भी कामयाब देखना चाहता हूं ।
रंजीत–दोनों हसरतें पूरी होगी तुम्हारी । भतीजा कामयाब भी होगा और घाव भी देगा ।
गोपाल– मेरा भतीजा,भतीजा नही बेटा भी है । मेरी पसीना की कमाई खाकर पला बढा ,पढा है, अपने जनम देने वाले मां बाप से दूर । ईमानदारी की कमाई में खोट कैसे हो सकती है रंजीत ।
रंजीत–तुम्हारा भेड़ा वफादार साबित हो । हार्दिक शुभकामनायें .....

मुंह दिखाई

दीक्षा अपनी जेठानी प्रतिक्षा से –दीदी अशोक की मम्मी कह रही थी कि तुमने तो हमारी बहू को मुंह दिखाई नही दी । मैं तुम्हारी बहू को क्या दूंगी ?
प्रतिक्षा– तुमने क्या जबाब दिया ?
दीक्षा– दीदी ने इक्कावन रूपया तो दिया है ।

प्रतिक्षा–तब क्या कहा सुभौता दीदी ने ?
दीक्षा–वे बोली तुम्हारी जेठानी ने दिया है, तुमने तो नहीं ?
प्रतिक्षा– बाप रे कैसी कैसी साजिश रचती है सुभौतीदेवी । तुमको कहना था दीदी मत बांटो हमें । मत देना हमारी बहूओं को ।

पुत्र–मोह

बहू –बेटो ने दुखीबाबा का जीवन नरक कर दिया था। कई दिनों से मरणशैय्या पर पड़े हुए थे । दुखीबाबा कराहते हुए बड़े बेटे गोपाल से विनती भरे स्वर में बोले बेटा जमींदार जगदीश बाबू को बुला देता । मुलाकात की बड़ी इच्छा है ।
गोपाल–डपट दिया ।
दुखीबाबा गांव के एक लड़के जीतेन्द्र को भेजकर जमींदार जगदीश बाबू को बुलवाये । जगदीशबाबू आये । दुखीबाबा ने जगदीशबाबू को पास बैठने का इशारा किया और उखड़ती सांस में बोले बाबू मैं तो जा रहा हूं । मेरे बच्चों पर दया–दृष्टि बनाये रखना और दुखीबाबा की सांस सदा के लिये थम गयी ।
गोपाल–अवाक् था पिता के अन्तिम क्षण के पुत्र–मोह को देखकर ।

सेवा शुल्क

जसवन्ती–क्या जमाना आ गया है जहां देखो वही रिश्वतखोरी ।
जसोदा–कौन रिश्वत मांग रहा है
जसवन्ती–बिना रिश्वत के कोई काम होता है,चाहे कोई प्रमाण बनवाना हो या अन्य काम । अस्पताल में चाय पानी के नाम पर रिश्वतखोरी कई विभाग तो पहले से ही बदनाम है।
जसोदा–रिश्वतखोरी ने ईमान को लहुलूहान कर दिया है । कर्म पूजा है को लतिया दिया है ।
जसवन्ती– हा बहन बिना रिश्वत के तो काम नही होता । सेवा भावना का कत्ल की दिया है रिश्वत ने।
जसोदा–पच्चास साल पहले मुझे दस रूपया की रिश्वत ली थी सरकारी बाबू ने चाय पानी के नाम । मैने सबके सामने दस रूपया का नोट हाथ पर रख दिया था । रिश्वतखोर बाबू हक्का बक्का रह गया था । माथे से पसीना चूने लगा था । माफी मांगा था ।
जसवन्ती– रिश्वत सेवा शुल्क हो गया है ।

जसोदा–बहन रिश्वत न देने की कसम खानी होगी ।

जांच

जयनरायन को लम्बी बेरोजगारी के बाद एक कम्पनी में नौकरी मिली पर योग्यता से काफी नीचे । मरता क्या ना करता जयनरायन ईमानदारी से नौकरी करने लगा । कहते है ना मुसीबत को जब पता मालूम हो जाता है तो बार बार वही पहुंचती है । जयनरायन के साथ भी ऐसा ही हुआ । एक मुसीबत से उबर नही पाता दूसरी दबोच लेती । इसी बीच जयनरायन की घरवाली मायादेवी का बड़ा आपरेशन हो गया । आपरेशन की स्वीकृति जयनरायन ने कम्पनी से ले लिया था । निर्धारित समयावधि में बिल भुगतान के लिये प्रस्तुत हो गया । अपने से अधिक पढे लिखे और विषय विशेषज्ञ जयनरायन से खार खाये मैनेजर;प्रशासनद्ध सुरेन्द्र बाबू ने बिल पर नोट लगाया–दवाई अधिक ली गयी, सस्ती दवाई की जगह महंगी दवाई खरीदी गयी, एवं ऐसी अनेक बिना सिर पैर कमियां निकालक जयनरायन को जांच के कटघरे में ला दिये पर सच्चे जयनरायन के उपर आंच तो नही आयी पर सुरेन्द्रबाबू के उपर खूब अंगुलिया उठी द्वेषपूर्ण रवैये को लेकर ।

हिस्सा

गोकुल पच्चास का नोट थमाते हुए –बेटा राहुल एक अधा तो ला दे ।सिर चकरा रहा है ।

राहुल–पापा अब मै नही जाऊंगा ।

गोकुल–पापा का कहना नही मानेगा ?

राहुल–नहीं ।

गोकुल–एक झापड़ दूंगा तो भागते हुए जाओगे ।

राहुल–अभी तक दिया ही क्या है ? नही जाउंगा । चाहे तो अजमा लो ।

गोकुल–क्यो हठ कर रहा है ? क्या लेगा तू रे ?

राहुल–हिस्सा ।

गोकुल– हिस्सा । कैसा हिस्सा रे ?

राहुल– दो पैग लूंगा । मंजूर हो तो जाऊ ?

गोकुल– नहीं । कभी जरूरत नही पड़ेगी अब । तुम्हारे हठ ने मेरी आंखे खोल दी बेटा।

होली

कुन्दनबाबू होली मुबारक हो कहते हुए गौतम बाबू के उपर रंग भरी पिचकारी तान लिये । तनी हुई पिचकारी को रोकने का आग्रह करते हुए गौतम बाबू बोले भइया तनिक रूको तो सही हमें भी तो मौका दो रंग पिचकारी लाने का

कुन्दनबाबू– क्यों नही ।ले आइये बाल्टी भर रंग ।

गौतम बाबू झट से घर में से थाली में फूल लेकर आये और कुन्दन बाबू को फूल देते हुए बोले होली मुबारक हो कुन्दनबाबू ।

कुन्दनबाबू–फूल से होली ?

गौतमबाबू– हां पानी बचाना है ना ।

गाली

इस देश के लोग तरक्की नही कर सकते। स्कूटर सवार मालवा मिल,मुक्तिधाम की ओर मुडते हुए बोला । पिछली सीट पर बैठी पाश्चात्य रंग–रोगन में नख से शीश तक डूबी महिला ने कहां– येस,यू आर राइट । यह बात साइकिल सवार के कान में जैसे पिघला शीशा डाल दी हो । वह चिल्लाकर बोला अरे वो बिलायतिबाबू हम तो आदर्श,सभ्यता,उच्चसंस्कार ,मर्यादा और मान–सम्मान की रोटी को असली तरक्की कहते है। तुम अपनी अर्धनग्नता और फूहड़ता को तरक्की मानता है तो तेरी तरक्की तूझे मुबारक पर अपनी मां को गली तो मत दें ।

कोयला

रेखा–लाली क्यों दुखी रहती हो । गोद में सुन्दर सी बेटी है, हंस बोल कर रहा कर । माां–बाप की याद में कत तक तपती रहोगी । मायका एक दिन छूट ही जाता हर लड़की का ।

लाली–आण्टी ये बात नही हैं ।

रेखा–क्या बात है ?

लाली– बाप के जाति के अभिमान ने मुझे तबाह कर दिया । पश्चाताप की आग में जल रही हूं । चैन की रोटी को तरस रही हूं आण्टी इस बड़े घर में।

रेखा– क्या कह रही हो लाली ?
लाली– आण्टी बिल्कुल सही कह रही हूं । मेरी दीदी छोटी जाति के लड़के से ब्याह कर दुनिया का सुख भोग रही है और मै नरक। जातिपाति के ठीहे पर मार्डन युग के पढे लिखे लड़के–लडकियों के भविष्य का कत्ल कहां तक उचित है ? काश मैं अपने भविष्य का फैसला खुद ली होती दीदी की तरह तो अपने पांव पर खड़ी होती । आण्टी अर्न्तजातीय ब्याह की इजाजत होनी चाहिये आज के आधुनिक युग में। लड़के–लड़की को एक दूसरे के योग्य और स्वाधर्मी होना चाहिये । हां विवाह कानूनी तौर पर हो और समाज को मान्य हो ।
लाली की छटपटाहट और पश्चाप को देखकर रेखा को ऐसा लगा जैसे उसके गले में किसी ने गरम कोयला डाल दिया हो ।

अवसरवादी

जयेश–आदमी कितना अवसरवादी हो गया है ? मौंका पाते ही डंक मार देता है ।
रत्नेश–किसने किसको डंक मार दिया जयेश भाई.. ?
जयेश–अरे मैं ही डंक का शिकार हूं छोटा कर्मचारी जो ठहरा ।
रत्नेश– क्या ?
जयेश– हां ।
रत्नेश– वो कैसे ?
जयेश–छोटा होना ही गुनाह है । जहां मैं काम करता हूं वहां के लोग अवसरवादी है । वैसे तो मैं सहयोग के लिये तैयार रहता हूं । कुछ अवसरवादी मुझे काम में व्यस्त देखकर विभागाध्यक्ष से शिकायत भरे लहजे में कहते है साहब जयेश को बोलिए मेरा काम कर दे । कुछ लोग तो फील्ड के कार्यकर्ता है और सभी कामों के लिये पैसा भी मिलता है । लेते भी है पर काम मुझे करना होता है । तनिक विलम्ब हुआ तो ये अवसरवादी विभागाध्यक्ष के पास पहुंच जाते है । विभागाध्यक्ष सब कुछ जानते हुए भी रौब मेरे उपर ही छाड़ते है ।
रत्नेश–सच ये अवसरवादी लोग अन्याय कर रहे हैं ।

भूत

दिन के उजाले में घूरती निगाहें रात के सन्नाटे में डराता भूतहाघर । मेनगेट पर खड़ी भारीभरकम काया डरा देती है । हर आदमी निगाहें फेरने को मजबूर हो जाता है ताकि मतलबियों की कागदृष्टि ना लगे ।
लालाली– घर भूतहा नही है बसने वाले लोग भूतहीप्रकृति के है ।
निखारचन्द–अहंकार का भूत सिर चढ जाता है तो आदमी खुद भूत और घर भूतहा हो जाता है ।
तोतलादास–तुम्हारे सामने वाले घर की कहानी चल रही है क्या ?
लालाजी–स्वार्थी लोग भूत से कम नही और उनका निवास मरघट सरीखे है,जिसे लोग भर आंख भी देखना नही चाहते प्रेत छाया न छुये ।
निखारचन्द–कहानी नही हकीकत है सामने वाले घर की जहां लोग स्वार्थ और अहंकार के झूले में झूलते है ।रात के अंधेरे में भी एक जीरोवाट के बल्ब से घर रोशन करते है । भीषण गर्मी में एक गिलास किसी को पानी तक नही देते जबकि उनके ट्यूबवेल में भरपूर पानी है ।
तोतलादास –बाबू भूतहाघर घर में रहने वाले मतलबी लोग आदमी के वेष में भूत है।

रिटायरमेण्ट

रूपचन्द– सर दिल्ली वाले साहब रिटायर हो गये ? कई सालों से एक्सटेंशन पर चल रहे थे ना।
दीपक– हां हो तो गये । वेलफेयर पार्टी भी हो गयी ।
रूपचन्द–सर आपको पूरी खबर है क्या ?
दीपक– कैसी खबर रूपचन्द ?
रूपचन्द–साहब एक कुर्सी छोड़कर दूसरी पर चिपक गये यह रिटायरमेण्ट तो हुआ नही ? संस्था के बडे पद पर रहकर करोड़ो की कमाई कर सात पीढियों के गुजर बसर का इन्तजाम करने के बाद भी बडे साहब का पद और दौलत का मोह कम नही हुआ, बढता जा रहा है। साहब पांच साल पहले रिटायर होकर भी नही हुए । अब रिटायर होकर पैकेज पर रहेगे । सर बड़े साहब कब तक योग्य लोगों का हक छिनते रहेगे और कितने बेरोजगार पैदा करते रहेगे।
दीपक– आखिरी दम तक कहकर माथा ठोंक लिये ।

प्रमोशन

विनय– सर बधाई हो ।
ब्रांच हेड–कैसी बधाई विनय साहब ।
विनय–राष्ट्रीय विभाग प्रमुख कल रिटायर हुए आज फिर ज्वाइन कर लिये कम्पनी में विशेष प्रमुख के रूप में यह प्रमोशन हुआ न सर ।
ब्रांच हेड–प्रमोशन ही हुआ विनय साहब ।
विनय– जो रात दिन काम कर रहे है,अच्छे पढे लिखे विषय विशेषज्ञ है उनका प्रमोशन तो हो ही नही रहा है ,उल्टे नौकरी से निकालने की धमकी । कर्मठ योग्य लोग सताये गये और सताये भी जायेगे विद्रोही साहब की कंटीली छांव में सर । देखो विद्रोही साहब की राजनीति कब्र में पैर लटकाये हुए भी प्रमोशन पर प्रमोशन लिये जा रहे है । बाकी लोगों को अट्ठावन साल में ही बाहर किया जा रहा है। विद्रोही साहब के लिये उम्र की कोई सीमा ही नही रही ।
ब्रांच हेड–हां विनय साहब कुछ सामन्ती राजाओं और कुछ आज की पोलिटिक्स का असर है।
विनय–सर ऐसे में नवजवानों का भविष्य कैसे सुरक्षित रह पायेगा ?असन्तोष पैदा होगा ?
ब्रांच हेड–होना भी चाहिये तभी तो होगा प्रमोशन ।

आंसू

चपरासी के बाहर निकलते ही घण्टी बजी । चपरासी पुनः अधिकारी के कक्ष में गया और उलटे पांव शंकर बाबू को दूर से बोला सर साहब बुला रहे है । किसी युध्द जीते योध्दा की तरह बलखाता हुआ चला गया । शंकर हाजिर हुआ । साहब बोले शंकर रोतेन्द्र को क्यों गाली देते हो । वह तुम्हारी बार–बार शिकायत करता रहता है । अपना व्यवहार सुधारो । कब पहिया लग जाये पता नही लगेगा ।
शंकर बोला –सर क्या रोतेन्द्र आगन्तुकों अब पानी नही पिलायेगा ? आगन्तुक को पानी पिलाने के लिये चार बार बुलाया था पानी लेकर आया नही । बीस मिनट के बाद पांचवी बार बुलाया तो क्रोध में आया और आगन्तुक के सामने बदतमीजी करने लगा था ।
अधिकारी–मैं कुछ नही सुनना चाहता । यदि पहिया लग गया तो कोई हाथ नही लगा पायेगा । आइन्दा शिकायत नही आनी चाहिये ।

अधिकारी की बातें सुनकर शंकर को सांप सूघ गया । वह आंखों में आसूं लिये बाहर निकला यह सोचते हुए कि क्या जी हजुरी में भलाई है ? क्या दुर्व्यववहार का विषपान करना ही अच्छा होने का सबूत है ?क्या अतिथि देवो भवः की परम्परा झूठी हो गयी है । क्या बाजारवाद के युग में आदमी पत्थर हो गया है ?

सलाह

कैलाश–अरे रजिन्दर तेरे चेहरे से थकान झलक रही है ।नींद नही आयी क्या ?

रजिन्दर– नहीं आयी ?

कैलाश–हां भाई बेटी बड़ी हो गयी है ? चिन्ता तो होगी ही ।

रजिन्दर–बेटी के ब्याह की नही बात कुछ और है ।

कैलाश– क्या बात है ?

रजिन्दर–मेरा बेटे को लगता है उसके साथ अन्याय हो रहा है ।

कैलाश–कया ? कौन से बेटे को .....

रजिन्दर–बीच वाले को ।

कैलाश– दो ही है ना तीसरा कौन आ गया । कोई बाहर वाली है क्या ?

रजिन्दर–नही यार । भाई का बेटा है ।चलना भी नही सीखा था तब से साथ है घरवाली के त्याग से । अब अट्ठारह साल के आसपास का हो गया है दोस्तों के बहकावे में आ रहा तनिक सी आय में क्या–क्या करूं ? उसकी बड़ी बड़ी ख्वाहिशे कैसे पूरी करूं । बच्चों के साथ भतीजे के उज्जवल भविष्य का मेरा सपना है और यही चिन्ता भी ।

कैलाश–अपनों के साथ भाई के बच्चे के भविष्य का भागीरथी प्रयास इसके बाद भी ये हाल। जिस डाल पर बैठा है वही काट कर रहा है । कैसे भविष्य बनेगा ।

रजिन्दर–भाई के पास आय का कोई पुख्ता स्रोत नही है। भाई, घर–परिवार सब हमें देखना है। इतनी बड़ी जिम्मेदार अपना परिवार ।

कैलाश–खानदान सुधारने का बीड़ा उठाया है तो अपनी हैसियत के अनुसार करो। अंगुलियां तो उठेगी जहां तक हो सके अपनी छांव दो पर दोस्त चिन्ता की चिता में खुद ना सुलगो । यही मेरी सलाह है तुमको।

वेटिंग टिकट

सुबह सुबह मोबाईल की घण्टी बजी मि.कृष्ण बोले लो राधिके बीटिया का फोन आ गया ।
राधिका– अरे मोबाईल बजती रहेगी क्या ? उठाओ भी ? कब से घण्टी बज रही है ?
मि.कृष्ण–हां..... बेटा कैसी रही यात्रा ?
गरिमा–बहुत दुखदायी पापा ।
मि.कृष्ण– टिकट कन्फर्म नही हुआ ?
गरिमा–नहीं हुआ ना पापा ।आज मै वेटिंग टिकट के दर्द को समझ गयी ।
मि.कृष्ण– वो कैसे बेटा ?
गरिमा– कन्फर्म टिकटधारी वेटिंग टिकट वालों को तो जैसे अपराधी समझते है और शंका भरी नजरो से देखते हैं। पूरी रात खड़ी रह गयी पर किसी यात्री का दिल नही पसीजा । लोग कितना संवेदनाहीन हो गये है । रेलमन्त्री श्री लालूयादव को यह करना चाहिये कि वेटिंग टिकट कन्फर्म नही होने पर पैसेन्जर को जनरल टिकट थमा दे ताकि आर्थिक हानि से बेचारा पैसेन्जर बच जाये ।

फांका

गनेश–काका तुम विवाह समारोह में नहीं गये ।
धरम–घर के सभी तो गये है । मै नही गया तो क्या फर्क पड़ेगा ?
गनेश– काका खाना ?
धरम– फांका..... और क्या ? बहन लालच में अपने पास रखी है । घरवाली छोडकर भाग गयी । एक्सीडेण्ट में पैर क्या कटा अपने पराये हो गये बाबू । रोटी को मोहताज हूं.....
गनेश– घर के सभी मारूति वैन से गये है तुमको नही ले गये । काका कार में बैठो खाना खिलवा कर लाता हूं । इतना सुनते ही धरम की आखों में सावन–भादो उमड़ पड़े । वह बोला भगवान किसी को अपाहिज न बनाये । बहुत दुख होता है जब सगे बोझ समझने लगते है ।
गनेश–काका तुम बोझ कैसे ? आओ चले रात के बारह बज चुके है ।
धरम–अपाहिज का फांका तुडवाने के लिये धन्यवाद गनेश बेटा।

फिजूलखर्ची

आण्टी आपके गले में घमौरियां हो रही है ।

मधु–हां रिया कुलर पंखा सब चलाने के बाद भी ये हाल है । शहर का टमप्रेचर कितनी तेजी से बढ रहा है । कल तो टम्प्रेचर 44.6 था ।
रिया–क्या आण्टी .. ?
मधु– हां ।
रिया–अच्छा तो रात मे मेरा ऋभ इसलिये रो रहा था ।
मधु–तुम्हारे यहां तो ए.सी.है ना ।
रिया–जब मैनेजर साहब सप्ताह में एक दिन के लिये आते है तब चलती ।
मधु–क्या कह रही हो रिया ?
रिया–हां आण्टी छः दिन के लिये ए.सी.बन्द हो जाती है । आठ महीने के ऋशभ को लेकर पंखे की हवा में सोती हूं । सासूजी देखते रहती है, जहां मुझे नींद लगी काली बिल्ली की तरह दबे पांव पंखा बन्द कर जाती है । कहती है क्या फिजूलखर्ची करना ? भगवान ना जाने किस जन्म के पाप का फल दे रहे है मुझे कसाई के खूंटे में बंधवाकर ।
मधु–सास है या डायन ?

पानी

क्यों क्या हुआ बड़ी दुखी लग रही हो ललिताबाई ।
ललिताबाई–क्या बताऊं करीना मैडम । मकान मालिकन ने नाक में दम कर रखा है ।
करीना–क्या हुआ खाली करने को बोल रही है ।
ललिताबाई–नहीं ।
करीना–तब क्या तकलीफ है ?
ललिताबाई–पानी की ।
करीना–पानी की किल्लत से पूरा शहर जूझ रहा है ।
ललिताबाई– कहती है बोरिंग में पानी नही आ रहा है । मैडम तुम्हारी भी बोरिंग तो सूख गयी है । तुम तो पानी का टेंकर बुलवाते हो पैसा देकर। कभी–कभी एकाध बाल्टी मैं भी ले जाती हूं । बिना पानी के कैसे काम चलता होगा इतने बड़े परिवार का ।
करीनामैडम–हममें भी तो कभी एक लोटा पानी नही दी। उसकी बोरिंग खराब हो गयी थी तो मेरे यहां से ले जाती थी ।

ललिताबाई–कब सूखेगी कंजूस की बोरिंग ? मै गन्दा पानी चाट्ते हुए देखना चाहती ।
करीनामैडम–ललिताबाई बुरा मत सोचो । करनी का फल मिलता है।

कमाई

गोपाल–भईया चिन्तानन्द क्यों माथे पर हाथ धरे बैठे हो ।
चिन्तानन्द–परिश्रम और योग्यता हार गयी है श्रेष्ठता के आगे ।
गोपाल–शोषण के शिकार हो गये है ।
चिन्तानन्द–हां,सामाजिक व्यवस्था और श्रम की मण्डी में भी।
गोपाल– युगों पुराना घाव है। कारगर इलाज नही हो रहा है सब मतलब के लिये भाग रहे हैं । कमजोर के हक की कमाई पर गिध्द नजर टिकी हैं। आतंक और शोषण से कराहते लोगो की कराहे अनसुनी हो रही है ।
चिन्तानन्द–यही दर्द ढो रहा हूं ।
गोपाल– तुम भी भइया।
चिन्तानन्द–हां ।
गोपाल –समझ रहा था कि हम अनपढ और असंगठित मजदूरों का बुरा हाल है ।पढे लिखे भी शोषण के शिकार है ।
चिन्तानन्द–हां भइया चौथी श्रेणी का कर्मचारी हूं ।काम भी मुझे से कोल्हू के बैल सरीखे लिया जाता है। काम हम करते है। हमारी कमाई में बरक्त नही होती उखड़े पांव आंसू पीने को बेबस हो गया हूं ।
ओवरटाइम और प्रतिपूर्तिभत्ता श्रेष्ठ ,चापलूस और रूतबेदार लूट रहे है। उनकी कमाई में चौगुनी बरक्त हो रही है ।
गोपाल–हक के लिये संगठित होकर जंग छेड़ना होगा भइया चाहे सामाजिक हक हो या परिश्रम की कमाई का.....

ऐसा क्यों

पापाजी की देहावसान हो गया का समाचार एकदम फेल गया । पापाजी उच्चअधिकारी के पिताजी थे ,भले इंसान थे । पापा के अन्तिम संस्कार में विभाग के सभी लोग दफ्तर के वाहन से गये । हां बीमार छोटेबाबू से परहेज किया गया । छोटे बाबू आसूंओं से भरी आखें लिये अन्तिम संस्कार में शामिल हुये । उठावना के दिन तो दफ्तर में मीटिंग हुई दफतर की गाड़ी से सभी लोगों के परिवारजनों के लोग दफतर में इकट्ठा किये गये इसके बाद उठावना में शामिल हुए दफतर की गाड़ी से ही।

इस बार भी छोटेबाबू को अछूत समझकर नजरअंदाज कर दिया गया । तेरहवी के दिन में ऐसा ही छोटेबाबू के साथ हुआ । दफतर में हो रहे भेदभाव से बौखलाकर छोटेबाबू के मुंह से निकल पडा....मेरे साथ ऐसा क्यों ? यह सुनकर दफतर के छोटे–बडे सभी श्रेष्ठजनों के होंठ पर जैसे ताले पड़ गये , चेहरा तमतमा गया और उखड़े पांव छोटे बाबू के चेहरे पर विजयी मुद्रा ....।

जलसा

कार्यमुक्ति और कार्यभार ग्रहण का जलसा राजधानी में आयोजित हुआ । जलसे के खर्चे के लिये विभाग के छोटे बड़े सभी कर्मचारियों से राशि भी ली गयी और सभी श्रेष्ठ लोगों को जलसे में शामिल होने के लिये आमन्त्रित किया गया बस रतन को छोडकर । आना जाना रहना सब विभागीय खर्चे पर था ।रतन विभाग में दोयम दर्जे के आदमी के नाम का दुखता खिताब पा चुके थे । यह खिताब उनकी छाती को बोझ बन चुका था । छोटे बडे सभी कार्यक्रमों से रतन को दूर रखने की कोशिश की जाती । श्रेष्ठ लोग हर साजिश में कामयाब भी होते थे । जलसों से भी रतन को मिलता था एक और नया घाव । विभागीय जलसे के दिन भी श्रेष्ठ और कमजोर के बीच संवरती दीवार को देखकर उखड़े पांव रतन के मुंह से निकल ही जाता ये कैसा जलसा.... कैसी श्रेष्ठता ....जहां कमजोर आदमी को दूर ढकेल दिया जाता है।मौका पाते ही रतन पूछता क्या आदमी के बीच दीवार खीचना समाज अथवा संस्था के लिये लाभकारी है। उत्तर नही में ही मिलता तो वह कहता क्यों लकीर के फकीरे बने हुए है । उखड़े पावं रतन की बातें मौन कर देती श्रेष्ठजनों को भी.....

सवाल

निरंजन–मेरे एक सवाल का जबाब दोगे क्या कृपा बाबू.....
कृपाबाबू–कैसा सवाल.....
निरंजन–कुर्सी पाते हैं आदमी निरंकुश खून क्यों चूसने लगता है ?
कृपाबाबू–लगता है शोषण के शिकार हो रहे हो ।भइया शोषण करने वाले आदमी के रूप में हैवान होते हैं।

निरंजन–ठीक समझे ।शोषण का शिकार हो रहा हूं । बेगुनाही की सजा पा रहा है । आदमी होकर आदमी के सुख से वंचित किया जा रहा हूं ।मेरी तरक्की के रास्ते बन्द किये जा रहे है ।

कृपाबाबू–इस सवाल का जबाब तो अब कुर्सी की जंग में शामिल हो गया है । बेचारा भुगतभोगी धोबी का कुत्ता होकर रह गया है ।समय के साथ सवाल भी हल हो जायेगा पर हमें भी कुछ तो करना पड़ेगा अपने स्वाभिमान के लिये ।

निरंजन–सब कुछ तो कर रहा हूं पर काले श्रेष्ठ अंग्रेजों को भाता नही ।सब ओर से हारकर सामाजिक श्रेष्ठता की ढाल थाम लेते हैं ।

कृपाबाबू–सामाजिक श्रेष्ठता की ढाल अधिक दिन नही टिकने वाली ।सद्कर्म की राह बढते चलो। अच्छा दोस्त फिर मिलेगे.....

टैंकर

पानी की दिक्कत से बेचैन नेकचन्दक को टैंकर को देखकर प्यास बुझने की तनिक उम्मीद लगने लगी ।वे बाल्टी लेकर परिवार के साथ दरवाजे पर खड़े होकर इन्तजार करने लगे । पर क्या टैंकर उनके घर के सामने रूका नही कुछ दूर जाकर रूका। नेकचन्द बाल्टी लेकर दौड़ें । बाल्टी टैकर के नल के नीचे लगाते हुए बोले भइया थोड़ा पीछे कर लिये होते तो हमारे यहां भी पानी भर जाता । इतना सुनते ही खलासी गाली देते हुए तेरे को ही पानी चाहिये बहोत बोलता है चल पीछे हट कहते हुए ईंटा उठा लिये नेकचन्द को मारने के लिये ।नेकचन्द को उनके बच्चे घर लेर आये । कुछ ही देर में गुण्डों की फौज नेकचन्द के घर को घेर ली । खलासी पास के एक गुण्डा किस्म के रहवासी का साला था । बेचारे नेकचन्द के घर मातम पसरा हुआ था । उनकी आंखे पानी से लबालब भर चुकी थी । छोटे बच्चे रो रहे थे । पत्नी ढांढस बंधा रही थी । उखड़ेपांव नेकचन्द के हृदय पर रहिमन का दोहा..... रहिमन पानी राखिये पानी बिन सब सून दस्तक दे रहा था । भगवानचन्द,खोटाचन्द,धोखाचन्द,फरेबचन्द और आसपड़ोस के लोग पड़ोसी के धर्म को भूलकर गीत गा गाकर पानी भरने में लगे हुए थे।

जनून

टाईवाला व्यक्ति दयाबाबू से क्यों घमण्डी साहब है ।

दयाबाबू–इस नाम को तो यहां कोई नही हैं ।

टाईवाला व्यक्ति– बहुत बदतमीज हो कहते हुए दफतर के दूसरे कमरे में प्रविष्ट हुआ ।
मखनसाहब से दयाबाबू की शिकायत किया।टाईवाले के शिकायत पर मखनसाहब आग बबूला होते हुये दयाबाबू की सीट तक आये और जनून मेंबोले दया तुम को तमीज नही है किससे कैसी बात करनी चाहिये ।मालूम है कौन है वह होटल का मैनेजर है।
दयाबाबू–ज्यादा तो मालूम नही पर इतना दावे के साथ कह सकता हूं कि उस आदमी में आदमियत नही है ।मखन साहब हमें कम्पलीमेण्टरी लंच,डिनर नही चाहिये ना ही किसी और तरह की रिश्वत । हम तो मीठे बोल के भूखे है वही बांटते रहते हैं ।
मखनसाहब–दया बहुत चिल्लाने लगे हो नतीजा जानते हो ।मखनसाहब की बात सुनकर दफतर के दूसरे कमरे से रहीस चपरासी जनून में बोला बहुत आदमियत का पाठ पढाता है मार दो..... आदमियत से खिस्सा भरता है क्या ?
उखड़े पांव नेकचन्द माथा ठोंक लिये..... ।

इलाज

आचार्य–लाल साहेब आपने खबर सुनी क्या ।
लाल साहेब–कौन सी खबर आचार्य जी ।
आचार्य–नेहरू नगर में एक कुत्ता पच्चास लोगो को काट लिया ।
लाल साहेब–आचार्य जी बस पच्चास ।
आचार्य जी–लाल साहेब कैसी बात कर रहे हो। एक कुत्ता पच्चास को काट लिया । आप खुशी मना रहे हो।
आचार्य जी–मैं बहुत दुखी हूं ।मैं कोई हनुमान नही हूं कि छाती फाडकर दिखा दूं।आपको मालूम हैं वह कुत्ता पागल था । एक बात और आपको बता दूं कुत्ता के काटने का इलाज है । आज का आदमी जो होशो हवास में उखड़े पांव आदमियो को काट रहा हैं उसका कोई इलाज है ।
आचार्य जी–नही । सचमुच बहुत जहरीला हो गया है आदमी आज का ।

एडस

भ्रष्टाचारी, ठग बेइमान,दंगाबाज किस्म के लोग कामयाबी पर जश्न मनाने में लगे रहते हैं । कर्मठ,परिश्रमी,उखडे पांव नेक लोग आंसू से रोटी गीली

करते रहते हैं।जबकि जगजाहिर है कि दंगाबाजी से खडी की गयी दौलत की मीनार ज्वालामुखी हैं। मेहनत सच्चाई से कमाई गये चन्द सिक्के भी चांद की शीतलता देते है ।सकून की नींद देते है। कहते हुए बाबा शनिदेव धम्म से टूटी काठ की कुर्सी में समा गये ।

जगदेव–बाबा दगाबाज लोग पूरी कायनात के लिये अपशकुन हो गये है।बाबा ये दगाबाज बेईमान मुखौटाधारी आदमियत के विरोधी लोग समाज और देश की तरक्की की राह में एडस हो गये है ।

शनिदेव–बेटा वक्त गवाह हैं दगाबाज खुद की जिन्दा लाश ढो ढो कर थका है । खुद के आंसू की दरिया में डूब मरा है । जमाना दगाबाजो के मुंह पर थूका हैं ओर थूकेगा भी ।

उपदेश

बकसर बाबू ठगी बेइमानी अमानुषता का पर्याय बन चुका हैं ।उपदेश तो ऐसे देता हैं जैसे कोई सदाचारी । क्या लोग हो गये हैं ।मन में राम बगल में छुरी कहते हुए कुमार बाबू माथा पकड कर बैठ गये ।

अवतार बाबू–आजकल तो ऐसे लोगेा का ही जमाना हैं ।बकसर बाबू जब किसी बडे आदमी की चौखट पर माथा टेक कर आता हैं तो और भी अधिक चटखारे लेकर उपदेश देता हैं जैसे सामने वाला नासमझ हो । सब जानते हैं बकसर बाबू की काली करतूत को ।वह अमानुष नेक बनने का ढोंग करता है । सब जानते है।

कुमार बाबू–काश बकसर बाबू जैसे ठग ढोगी अमानुष किस्म के लोगो की शिनाख्त कर जनता बहिष्कार कर देती ।इसी में समाज संस्था और देश का हित है और उखड़े पाव लोगों का भी।

गुमान

गुलामदीन बीडी का कश खीचते हुए केशव बाबू से बोला बाबूं हम गरीब हाडफोड कर मुश्किल से चूल्हा गरम कर पा रहे हैं । दूसरी ओर कुछ लोग धन के पहाड जोडते जा रहे है ।क्या हम भय भूख और जाति धर्म की लकीरो पर तडपते मरते रहेगे ।ये कैसी आजादी हैं ।

केशव बाबू–हमारा देश अंग्रेजी हुकुमत से आजाद हो गया है ।तुम भी तरक्की करोगे ।

गुलामदीन–कब केशव बाबू । भ्रप्टाचारियों की ना कभी भूख मिटेगी ना हमारी तरक्की होगी । काश हम भी सामाजिक और आर्थिक रूप से तरक्की कर पाते आजाद देश में ।
केशव बाबू–गुलामदीन तुमको नही लगता कि तुम आजाद हो ।
गुलामदीन–बाबू जिस दिन हम दीन दुखियों की गली से तरक्की होकर गुजरेगी तब हम असली आजादी महसूस करेगे ।बाबू देश की आजादी पर गुमान हैं । तभी तो भय भूख जातिधर्मवाद से पीडित तरक्की से दूर उखड़े पांव होकर भी आजाद देश की आजाद हवा पीकर स्वाभिमान के साथ बसर कर रहा हूं ।

परदेसी

सफेद की कालिख तो जगजाहिर हो चुकी है। अब ये कालिख रिश्तों की जडों तक पहुंचने लगी है । नतीजन परिवार टूटने लगे हैं। विश्वास कमजोर होने लगा है के मुददे पर चिन्ता जाहिर करते हुए कालीचरण बाबू जर्जर सोफे में धंस गये ।कालीचरण बाबू की हां में हां मिलाते हुए ध्यानचरण बाबू बोले लाख टके की बात कह रहे हो बाबू।मुझे ही देखो उम्मीद के आक्सीजन पर ही तेा जी रहा हूं।नन्ही सी नौकरी घर परिवार की बडी बडी ख्वाहिशे, महंगाई की त्रासदी,बच्चों की पढाई खान खर्च का भारी भरकम बोझ इन सबके बावजूद पेट काटकर घर परिवार को देखने के बाद भी गांव घर परिवार को अविश्वास का भूत पकडे ही रहता हैं । वे सोचते है शहर जाकर स्वार्थी हो गया हैं ।बेचारा परदेसी शहर में अकेला मुश्किलो से जूझता है।बडी मेहनत के बाद तनख्वाह मिलती हैं और पन्द्रह दिन के बाद उधारी पर काम चलने लगता है।क्या बाल बच्चो को भूखे रखकर हर महीने मनिआर्डर करना ही अपनापन है ।
कालीचरण बाबू–परदेसी की पीडा को गांव घर परिवार वाले कहां समझते हैं । उनकी रोज रोज की मांगों की पूर्ति करते रहो पेट में भूख लेकर तब श्रवणकुमाार हो वरना नालायक ।
ध्यानचरण–गांव घरपरिवार वालो को परदेसी के दर्द को समझना होगा।तभी रिश्ते का सोंधापन बरकरार रह पायेगा । गांव से हजारो किमी दूर परदेसी वनवासी का जीवन जीता है।इसके बाद भी परदेसी के दर्द को लोग नही समझते बस रूपया रूपया रूपया.....।
कालीचरण–कुटुम्ब के लिये त्याग करना तपस्या है भइया ।

ध्यानचरण– कुटुम्ब के लोग उखड़े पांव परदेसी के दर्द को समझे ,विश्वास करे तब ना ।

राखी

मम्मी चाचा का गांव से फोन है कहते हुए रागिनी फोन अपनी मम्मी शोभा के हाथ में थमी दी।

शोभा–प्रेम बाबू रोशनी बीटिया की राखी नही भेजे क्या ।उसके तीनो बडे भाई जान खा रहे हैं ।कह रहे हैं रोशनी की राखी नही आयी ।

प्रेमबाबू–भेजी तो है पन्द्रह दिन पहले ।भौजी रोशनी की मां से बात करो ।

रोशनी की मां सुधा –दीदी क्यो नाराज हो रही हो । बडी दीदी तो बोल रही थी कि भाई साहेब का पता ठिकाना उनके पास नही है ।कैसे राखी भेजती । रोशनी ने तो भेज दी है ।

शोभा–क्या जब जरूरत पडती हैं तो पता मिल जाता है ।राखी भेजने के लिये पता नही है । वाह रे ननद लोग।भाई बहन का तो यही एक उत्सव होता है जिससे भाई बहन के स्नेह की डोर और मजबूत होती है ।इस पवित्र त्यौहार की याद ना आयी ।जिन भाइयो की बहने नही वे रो रहे हैं । जिन बहनो के भाई है उन बहनों को याद ही नहीं ।

सुधा–दीदी राखी का शौक तुमको भी चढ गया ।

शोभा–होश में तो हैं सुधा । भाई बहन के इस पवित्र त्यौहार को शौक कह रही है । तुम अपने भाइयों को राखी नही बांधती क्या कहते हुए फोन रख दी ।

रूपइया

सम्भवतःपुत्र मोह से बडा प्राण मोह हो गया है ।बाप द्वारा बेटा के लिये प्राण आहुति इतिहास हो चुका है ।इस वाक्या को चरितार्थ किया दीदारचन्द्र ने ।गांव के नीम हकीमो ना दीदारचन्द्र को डायबटीज का पेशेण्ट बता दिया । वे घबराकर मरणासन्न स्थिति में आ गये ।अब मरे या तब की स्थिति में उन्हे शहर लाया गया ।शहर मे कुशलचन्द्र ने उनका इलाज करवाया अच्छे डांक्टर से ।इलाज के बाद वे बिल्कुल ठीक हो गये परन्तु उन्हे डायबटीज थी ही नही ।जबकि कुशलचन्द्र डायबटीज की बीमारी का आतंक कई बरसो से झेल कर नन्ही सी तनख्वाह से श्शहर से गांव तक देख रहा था । आर्थिक तंगी एवं श्बीमारी से जूझते हुए बेटे की हाल

पूछने की फुर्सत दीदारचन्द को कभी ना मिली ।हां दीदारचन्द बेटे को तब जरूर कोसते जब उन्हे रूपये की जरूरत पडती ।सच रूपइया हर रिश्ते का आका हो गया है बाजारवाद के युग में ।

घमण्ड

मैडम रोहिनी कुत्ते को सम्भालते हुए आदिवासी महिला से पूछ बैठी क्यो बाई आज छुट्टी कर ली क्या ।

बाई–हां मैडम जी आज भगवान का जन्मदिन है । आज तो छुट्टी कर ली पूजा पाठ के लिये।रोज रोज तो हाडफोडती ही रहती हूं परिवार के साथ ।मेहनत मजदूरी से रोटी तो मिल ही जाती है । रोज काम तो करना ही है आज के दिन भगवान के लिये छुट्टी ले ली है ।

मैडम रोहिनी–आज की मजदूरी तो गयी ।

बाई– मैडमजी गयी तो जाने दो । मैं तो सन्तोष के धन में खुश रहती हूं । अधिक रूपया से घमण्ड आता है कहते हुए उखड़े पांव बाई अपनी झोपडी में चली गयी। मैडम रोहिनी माथे पर भारी सिक्कन लिये हुए कुत्ते के साथ आगे बढ गयी ।

ये इण्डिया है

जीवित बूढी लाश परिजनो के लिये बेकार की चीज होने लगी है ।वही परिजन जो कभी आश्रित थे मेहनत मजदूरी खून पसीने की कमाई का सुखभोग कर रहे थे कहते हुए महेश दादा रोने लगे ।

सुबोध–क्यो आंसू बहा रहे होदादा क्या हो गया ।

महेश दादा–सुबोध की तरफ अखबार सरकाते हुए बोले ये खबर पढो बेटा ।

सुबोध–दादा सचमुच चिन्ता की बात है । बेचारे बूढे अमेरिका के राबिंसन माइकल फांर्ब्स लेह में आकर मर गये ।भला हो भारतीय सैनिको का जिन्होने अमेरिकी दूतावास के जरिये मरने की खबर भेजवायी और लाश को सम्मान के साथ रखे ।राबिंसन माइकल फांर्ब्स के परिजनों ने लाश लेने को मना कर दिया यह कह कर कि लाश का हम क्या करेगे ।

महेश दादा–बेटा राबिंसन माइकल फांर्ब्स के साथ जो हुआ हैं हम सरीखे बूढो के साथ हो गया तो ।

सुबोध–दादा बाजारवाद ने रिश्ते को तहस नहस करना तो शुरू कर दिया है ।दादा भारतीय रिश्ते की डोर इतनी कमजोर नही है ।यहां तो मांता

पिता धरती के भगवान सरीखे पूजे जाते है। वो अमेरिका है ये इण्डिया है। दादा इण्डिया की नींव सदभावना, आस्था एवं नैतिक मूल्यो पर टिकी है।

महेश दादा–अरे वाह बेटा तुमने तो मेरी चिन्ता का बोझ उतार दिया ।

दूध

दिव्यानी–हे भगवान हिटलर के बम का जहर अभी तक नही पचा । धीरे धीरे यह जहर दुनिया में फैल रहा है।प्रकृति का विनाश हो रहा है ।वन सम्पदा का नाश हो रहा है।ईंट पत्थरो के जंगल खडे हो रहे है ।हवा पानी में जहर रोज रोज घुल रहा है अब तो मां भी अछूता नही रहा।

लाजवन्ती– क्या कह रही हो दिव्यानी बहन ।

दिव्यानी–मां के दूध में जहर मिलने लगा है ।

लाजवन्ती–अरे बाप रे ये कैसे हो गया ।

दिव्यानी– दुनिया के हर कोने में पवित्र माना जाने वाला मां का दूध प्रदूषण की भेट चढ रहा है ।

लाजवन्ती–प्रदूपण की वजह से अब दूध का धुला नही रहा मां का दूध दिव्यानी बहन ।

दिव्यानी–दुनिया भर की औरतो को मां के दूध की रक्षा के लिये पर्यावरण विनाश रोकने के लिये संघर्प करना होगा तभी बचेगी मां कि अस्मिता और दूध की पवित्रता ।

लाजवन्ती–सच कह रही हो दिव्यानी बहन यदि पर्यावरण विनाश नही रूका । मां के पवित्र दूध में जहर मिलता रहा तो कल का आदमी कैसा होगा ।

परिभाषा

दिनेश –अंकल बधाई हो ।अंकल किसी को ढूढ रहे हेा ना ।

मणि बाबू– नही बेटा ।

दिनेश–अंकल ढूढ तो रहे हो पर वे दोनो ब्योम और तंगेश नही आये हैं इस जलसे में ।

मणि बाबू–किर्सी जरूरी में फंस गये होगे ।

दिनेश–इस भव्य समारोह से बडा काम होगा उनके पास ।नही अंकल रविवार हैं ना टीवी सेट से चिपके होगे ।अंकल आप तो अपने किरायेदार

के दूर दूर के रिश्तेदारो के जलसे में श्शामिल होते हैं ।पैसा और समय भी खर्च करते है बढ चढकर ।देखो आपके जीवन के सुनहरे पल में वो हैवान हाजिर नही हुआ । तंगेश का देखो विगत महीने की ही तो बात है उसके बाप की मौत हुई थी हजारो की कालोनी का कोई भी आदमी नही झांका आपके सिवाय । इतना ही नही उसके बाप की मौत हुई है कानूनी तौर पर कोई गवाही तक नही दिया ।आपने स्टाम्प पर लिखकर दिया कि उसके बाप की मौत हार्ट अटैक से हुई थी वह भी उन हैवानो के कहने पर। अंकल आप हर किसी के दुख में भागते रहते हो क्या मिलता है आपको ..

मणिबाबू–सकून ।बेटा नेकी करो विसार दो । आदमी से उम्मीद ना रखो ।प्रभु पर विश्वास रखो ।यही जीवन का उद्देश्य होना चाहिये । कौन क्या कर रहा है नजरअंदाज कर परमार्थ की राह बढते रहो । इससे बडा कोई सुख नही है । भले ही दीये की बांती की तरह तिल तिल जलना पडे ।

दिनेश–समय का पुत्र कहते है साहित्यकार को आज परिभाषा जान पाया हूं ।बहुत बहुत बधाई हो अंकल.....

झूठ

अपने साहेब तो कम्पनी के भले का बहुत सोचते है यार मैं बहुत देर में समझ पाया हूं। तपाक से सतवीर बोला सब झूठ है।साहेब को तो बस अपने भले का ख्याल रहता है बाकी किसी का नही चाहे कम्पनी हो या कर्मचारी ।साहेब को तरक्की काम और पढाई लिखाई को देखकर नही मिल रही है । ।साहब से बहुत अधिक पढे लिखे और कम्पनी और कर्मचारियों के हित में काम करने वाले लोग है । बेचारे सड रहे है । अपने साहेब को तो देखो बिना शैक्षणिक योग्यता के शीर्ष पर बैठे हुए है ।

रघुवीर यार सतवीर क्यो साहेब पर झूठमूठ का बलेम लगा रहा है । मैंने कुछ सामान पार्सल करवाने के लिये साहेब को कार से भेजवाने का बोला तो साहेब बोले क्यो कार से भेज रहे हो जितने का सामान नही है उतने का पेट्रोल खर्च हो जायेगा । चपरासी से भेजवा दो आटो रिक्शे का किराया दे देना ।

सतवीर–तुम नही समझे बाबू रघुवीर साहेब के बच्चे को ट्यूशन जाना था । मैडम को बाजार जाना था सब्जी भांजी खरीदने ।इतने जरूरी काम छोडकर क्या साहेब दफतर के काम के लिये कार भेज सकते है साहेब अपने भले के बारे में सोचते है यही सच्चाई है बाकी सब झूठ । गर साहेब लोग संस्था के बारे में सोचते तो कम्पनियां बन्द ना होती बाबू..... ...

सिपाही

साहेब की बदतमीजी से तिलमिलाकर राधेश्याम बाबू घनश्याम बाबू से बोले बाबू ये साहेब भी निम्नश्रेणी के कर्मचारी थे। आज बड़ा अफसर बन गये है सिर्फ चम्मचागीरी के बलबूते।चौपट साहेब से ज्यादा पढे लिखे तो बेचारे चपरासीगीरी कर रहे है।घनश्याम बाबू ना जाने क्यों ये चौपट साहेब तुमसे खार खाये रहते है। तुमसे बहुत बदतमीजी करते है।तुम चौपट साहेब से ज्यादा पढे लिखे और ख्याति प्राप्त हो शायद इसीलिये ।
घनश्याम बाबू––जलने दो ।खुद जलकर राख हो जायेगे ।
राधेश्याम–दुर्जनता सज्जनता को लतिया रही है। तुम मौन हो ।
घनश्याम बाबू–राधेश्याम कलम का सिपाही मौन नही रहता । जमाना जरूर थूकेगा चौपट साहेब के मुंह पर। हिटलर भी तो इसी धरती पर पैदा हुआ था ।आत्महत्या कर गया ।
राधेश्याम–कलम के सिपाही इतना सब्र कैसे रख लेते है ।
घनश्याम बाबू–कलम की घाव हरी रहती है ।
राधेश्याम– बाबू कुछ भी कहो पर चौपट साहब बांस कम डांन ज्यादा लगते है ।
घनश्याम बाबू–समय है बित जायेगा सब्र मुस्कराता रहेगा ।
राधेश्याम–बाबू तुम तो वो हस्ती हो जिसे देखकर चौपट साहेब भौंकने लगते है और तुम बेखबर सद्मार्ग पर बढते रहते हो । कलम के सिपाहियों को हर युग ने सलाम किया है । मैं भी तुम्हे सलाम करता हूं बाबू....

फल

ज्वाला साहेब बधाई हो प्रमोशन पर प्रमोशन साल में दो दो भी । अब तो साठ साल के बाद भी आपकी बडे पद की नौकरी पक्की रहेगी ।संस्था का मालिक बने रहेगे मायूस स्वर में हीराबाबू बोले।

ज्वाला साहेब–आप लोगो की शुभकामनाओ का फल है ।
हीरा बाबू –नही साहेब वंचितो को लतियाने और अपने लोगो को खुश रखने की कला का फल है।
ज्वाला साहेब–हीरा क्यों मजाक कर रहा है ।
हीरा बाबू–साहेब आपने प्रतिभा के दमन की प्रतिज्ञा को पूरी किया इसके लिये और बधाई कबूले ।
ज्वाला साहेब–प्रतिभा विरोधी प्रतिज्ञा ।
हीरा बाबू– हां साहेब ।वंचित प्रतिभावान के भविष्य का आपने खून कर दिया ।उसे आगे न बढने देने की आपने कसम खा ली ।
ज्वाला साहेब–हीरा तू विद्याधर वंचित की बात कर रहा है ।अरे छोटे लोगो को प्रमोट करना खतरे से खाली नही है ।छोटे लोग बराबरी करने लगेगे ।ऐसे लोंगो को दबा कर ही रखना चाहिये। आगे बढने का मौका दिया तो सिर पर चढकर मूतने लगेगे ।
हीराबाबू –अरे वाह रे योग्यता और आदमित के दुश्मन तुमने सत्ता स्थापित करने के लिये विद्याधर के भविष्य का खून कर दिया ।उच्च श्रेणी के व्यक्ति को निम्न श्रेणी का बनाकर शोपण किया । तरक्की से वंचित विद्याधर ने तो अपना ही नही अपने खानदान का नाम रोशन कर दिया है अपनी उच्च योग्यता के बल पर ।

विश्वास

रघु–अरे भइया रंधवा क्यों उदास हो अब तो जेल से फुर्सत से छूट गये। कोर्ट कचहरी का झंझट भी नही रहेगा जो होना था हो गया ।इस अनहोनी को किस्मत का लिखा मान कर सब्र करो भइया ।
रंधवा–भइया किस्मत की वजह से नही पुलिस वाले की वजह से जेल गया था । सालों कोर्ट कचहरी का चक्कर लगाया सिर्फ इसलिये की वो वर्दीवाला रोटी के लिये बिक गया था।नही तो होटल के बैरे से सिर्फ कहां सुनी ही तो हुई थी मियां भाई की । मियां भाई के साथ होने की वजह से मुझे भी जेल में ठुस दिया गया 307 और 302 का मुलजिम बनाकर ।वो बडे बडे बाल बडी दाढी बडी मूंछ वाला लम्बा तंगडा रोबीला पडाव थाना प्रभारी चार हजार रूपये लेकर तो जमानत होने दिया था

।इतने बरसों तक बिना अपराध के मानसिक,आत्मिक,शारीरिक और आर्थिक रूप से जो दुख पाया उसकी भरपाई कौन कर सकता है ।
रघु–कोई नही भइया।ये वर्दी वाले अपने फायदे के लिये जिसे चाहे उसे जेल में ठुस सकते है जन सेवा राष्ट्र सेवा की कसम को भूलकर तभी तो पुलिस बदनाम है ।अंधेरपुर नगरी कनवा राजा की कहावत चरितार्थ हो रही है।

रंधवा–ठीक कह रहे हो भइया मेरा भी विश्वास उठ गया है ।

डयूटी

लो डाक साहब डाकिया पसीना पोछ्ते हुए बोला ।
डाकिया को परेशान देखकर रघु बाबू बोल पोस्टमैन साहब बैठिये पानी पी कर जाइये ।
साहब मरने को फर्सत नही हैं ।साधारण डाक रजिस्ट्री और मनिआर्डर सब हमें ही तो बांटना पड रहा है ।नई भर्ती बन्द हैं कहने को।दैनिक वेतन और संविदा पर साहेब लोग रखते तो हैं वह भी अपने ही आदमी । वे काम करेगे कि चम्मचागीरी।दफतर में आते हैं तो साहेब की रौब दिखाते हैं।डर के मारे कौन बोले ।मुंह खोलो तो आचरणहीनता का केस बन जाता है ।बहुत छिछ्लेदर हो जाती है साहेब।
रघु बाबू यहीं देखो बडे साहब बाहर हैं तो दैनिक वेतनभागी चपरासी भी नही आया है ।जब जब बडे साहब दफतर नही आते चपरासी भी नही आता । पूछ्ताछ एकाध बार किया तो मालूम हैं बडे साहेब क्या बोले ।
यही ना तुम लोगो को बात करने नही आती है।अपनी डयूटी तो ठीक से करते नही दूसरों के मामलों टांग अडाते हो।अपनी डयूटी से मतलब रखो कौन क्या करता हैं यह देखना तुम्हारा काम नही है ।आने जाने वालो से बुरा बर्ताव करते हो।तुम लोगो की शिकायत आने लगी है । अपने व्यवहार में सुधार करो ।पोस्टमैन एक झटके में बोला ।रघु बाबू के हाथ से गिलास का पानी लेकर पेट में जल्दी जल्दी उतारकर चल पडा अपनी डयूटी बजाने की हडबडाहट में ।
रघु–सच कह रहे हो,नीजिस्वार्थ,भाई–भतीजवाद,जातिवाद ही तो इस देश की नींव खोद रहे है ।

आचरण

धौंसचन्द अपने अधीनस्थ प्रतिप्ठित कमल बाबू को डपटते हुए बोले कमल तुम्हारा आचरण ठीक नही हैं दफतर में आने जाने वालों से दुर्व्यवहार करता हैं ।सभी तुम्हारी शिकायत कर रहे है । तुमको नौकरी करनी है कि नही ।

कमल–सर हमने तो ऐसा कोई काम आज तक नही किया जिससे किसी भी कर्मचारी को तकलीफ हुई हो । ठीक है मैं छोटे पद पर काम करता हूं पर मेरी भी अपनी मान मर्यादा है । मैं वैसा ही व्यवहार करता हूं जैसा मैं दूसरों से अपेक्षा करता हूं ।

धौंसचन्द–व्यवहार करते हो कि दुर्व्यवहार । अपने व्यवहार में बदलाव लाओं नौकरी करनी है तो । तुम क्सा व्यवहार दूसरों से करते हो सब मुझे पता है फिर भी तुम खुद अपनी समीक्षा करो ।यही मेरा मशविरा है ।

उखड़े पांव कमल बाबू को काटो तो खून नहीं । बेचारे समीक्षा करने में जुट गये । कमल बाबू को वजह यह मिली की वे कल चपरासी ,ठगेन्द्र को आफीस का काम करने के लिये बोले थे यह जानकर भी कि चपरासी साहब का आदमी है । कमल बाबू का चपरासी को काम बताना दुर्वव्यहार हो गया साहेब की निगाहों में ।

उध्दार

अल्पशिक्षित,निम्न पद चम्मचागीरी के शिखर से उच्चपद हासिल करने वाला बढिया काम करने वाले कर्मचारियों को प्रताडित करें तो क्या इसे हिटलरगीरी नही कहेगे राजू आंख मसलते हुए धीरज बाबू बोले ।

राजू–बाबू यही लोग तो सत्ता का सुख भोग रहे है नीचे से उपर तक ।गरीब कोल्हू के बैल सा खट रहा है ।चाहे दफतर हो या जमीदारों का खेत ।सच कहा है किसी ने कमायें धोती वाले बेचारे खायें टोपी वाले ।

धीरज बाबू –राजू तुम्हारे साहेब भी तो ऐसे ही हिटलर है ।

राजू–हां बाबू तभी तो आंसू पीकर काम करना पड रहा हैं पारिवारिक दायित्व निभाने के लिये । ऐसे हिटलर के साथ दिन दुखते सालों की तरह बितता है ।

धीरज बाबू–राजू ये उुंची पहुंच वाले सबल लोग गरीबों की तकदीर पर कुण्डली मारे बैठे हैं सदियों से ।इन हिटलरों के आतंक से निपटने के लिये हिटलर ही बनना होगा ।

राजू–हां बाबू ठीक कह रहे हो तभी गरीबों का उध्दार होगा ।

निर्माण

मां चामुण्डा की नगरी, पांच दिवसीय सरकारी भारत निर्माण अभियान के जलसे के भव्य समापन समारोह के मौके पर मोती बाबू आपकी आंखों में बाढ । वजह जान सकता हूं।

मोती – भूख ..... दर्शन बाबू ।

दर्शन –क्या भूख । सुना है पहले शाइनिंग इडिया और आकी –बाकी भारत निर्माण अभियान ने पछाड दिया है। देश में करोडपतियों की संख्या दिन–रात बढ रही है । आप भूख की चिता पर सुलग रहे हो ।

मोती –दर्शनबाबू प्रदर्शन के अलावा ये सब कुछ नही हैं वो देखो भूख का नंगा खेल ।

दर्शन – कहां ।

मोती –कचरे के ढेर पर जहां खाकर फेंके हुए डिब्बे कुत्तों के साथ भूखे नंगे आदमी के बच्चें भी चाट रहे हैं ।

दर्शन –सच कह रहे हो भूख और दरिद्रता के रहते शाइनिंग इडिया हो चाहे भारत निर्माण अभियान दीन दुखियों के आसूं नही पोंछ सकते।

कल्याण

दशरथ–भइया धर्मानन्द गरीबों का कल्याण कभी होगा क्या ?

धर्मानन्द–ऐसा तुमको क्यों लगता है ।

दशरथ–सामाजिक आर्थिक विपमता ,स्वार्थ की अंधी दौड, गरीबों का अवन्नति और बाहुबलियों की तरक्की देखकर।

धर्मानन्द–बात तो लाख टके सही कह रहे हो भइया दशरथ इनके रहते तो नही पर असम्भव भी नही है ।

दशरथ–वो कैसे भइया ।

धर्मानन्द–अपने अस्तित्व का जोरदार प्रर्दशन ।

दशरथ–वहिष्कार और बुराईयो का विरोध ।

धर्मानन्द–हां पर अहिंसात्मक ढंग से, तभी गरीबों का कल्याण सम्भव है ।

अतिक्रमण

अरे वाह तुम तो सूट पहनकर आये हो दफ्तर अधिकारी बेगानचन्द ने अपने से कई गुना अधिक पढे लिखे और छोटे पद पर काम करने वाले कर्मचारी दीवानचन्द पर व्यंगबाण का तरकस छोडा ।

दीवानचन्द–सहज भाव से बोला ना जाने क्यों तथाकथित श्रेप्ठ लोग अपनी योग्यता को नही देखते।गिरगिट की खाल ओढ लेते है ।

बेगानचन्द–खिसियाकर बोले काग हंस तो नही बन सकते ।

दीवानचन्द–पद दौलत के नशे में चूर लोगों को अपने मद के अलावा कुछ नही दिखाई देता सावन के भैंसे की तरह।

छोटे लोगों के मुंह मैं नही लगता कहते हुए बेगानचन्द अपनी कुर्सी की ओर बढने लगे । दीवानचन्द ने भी नहले पर दहला मारा सुनो साहेब आप और आप जैस ना जाने कितने लोग हमारे जैसे लोगो की तकदीर नाग की तरह अतिक्रमण कर बैठे है ।

गिफ्ट

दफ्तर में विज्ञापन कम्पनियों सहित कम्पनी के उत्पाद बेचने वालो का आना जाना लगा रहता था । ये सभी मानचन्द बाबू से अपने काम के बारे में चर्चा भी करते। मानचन्द बाबू इन लोगों का काम कर गर्व महसूस करते। दीवाली और नये साल के आते ही लोग मानचन्द बाबू को देखना भी पसन्द ना करते । नये साल अथवा दीवाली के महीना भर बाद ज्यों की त्यों स्थिति हो जाती। एक दिन कम्पनी के प्रतिनिधि आये मानचन्द से बडे आत्मीय ढंग से बात करने लगे । मानचन्द ने भी उनसे ज्यादा आत्मीयता प्रगट किये और काम भी किये ।इसके बाद प्रतिनिधि से कहे एक बात पूछूं महोदय ।

प्रतिनिधि–हां क्यों नही साहब के पहले तो आप हमारे साहब है ।

मानचन्द–मैं साहब तो नही हूं पर अपना फर्ज है अच्छी निभाना जानता हूं। मैं तोहफा के लिये काम नही करता । अपनी हालात पर खुश रहना भी जानता हूं लेकिन मुझे एक बात खटकती है ।

प्रतिनिधि–वह क्या ।

मानचन्द–दीवाली या नये साल के आते ही कम्पनी के मालिक अथवा प्रतिनिधि लोग अनजान क्यों बनने का नाटक करते हैं ।

प्रतिनिधि–गिफ्ट बांटने की व्यस्थता रहती हैं । बाकी समय तो काम करवाने के लिये आते ही है ।
मानचन्द–क्या आपको नही लगता कि गिफ्ट देना भ्रष्ट्राचार को न्यौता है।

बिल

रामबाबू दुकानदार को आधा किलो नमकीन का आर्डर दिये । दुकानदार दामू नमकीन रामबाबू के सामने रखते हुए बोला और क्या सेवा करूं आपकी .....
रामबाबू बोले और तो कुछ नही चाहिये बिल दे दो ।
दामू–रामबाबू को बिल थमाते हुए बोला बाबू छोटे दुकानदारों से बिल लेना जागरूक लोग अपना चातुर्य समझते है। पाव भर नमकीन खरीदेगे पक्का बिल मांगेगे । अरे कोई कोर्ट कचहरी वालों से बिल लेकर बताये तब ना जाने कि अपने देश के लोग जागरूक हो गये है । अपने देश के जागरूकता का दम्भ भरने वाले लोग कचहरी से खरीद गये स्टाम्प पेपर एवं दिये गये भारी भरकम शुल्क के भी बिल लेते है क्या ? दुकानदार का सवाल सुनकर रामबाबू के तालु चिपक गये ।

पुरस्कार

काका ये तस्वीरें तुम्हारी दीवाल पर मैं तब से देख रहा हूं जबसे मेरी आंख खुली है। इस कलेक्शन में कोई तस्वीर नही जुडी क्यों ।
दीनानाथ –बेटा दयाल इन तस्वीरों के अलावा शायद ही कोई तस्वीर टंगे ।
दयाल–ऐसा क्यों काका कह रहे हो । नेता तो अपने देश में बहुत हो गये है। देश समाज की सेवा के बदले बडे से बडा पुरस्कार अपने नाम करवा रहे है ।क्या देश समाज की सेवा का दम्भ भरने वालों के फोटो नहीं लगा सकते ।
दीनानाथ–पहले के नेता देश समाज की सेवा करते थे अब के नेता अपना खजाना भरते है । क्या ऐसे नेताओ की तस्वीरें लगाकर ईमानदारी और सेवाभाव को गाली देना नही है।सरकारी पुरस्कार को आपस में मिल बांट लेना सम्मान का प्रतीक है अपमान का बेटा ?

डाका

बिपिन–बिहारी बाबू मेरी कमीज बताओ कितनी की होगी।
बिहारी–सौ रूपये की होनी चाहिये ।

बिपिन–अरे यार ब्राण्डेड है । 500 रू की है तुम सौ रूपये आांक रहे हो ।
बिहारी–होगी पच्चास दिन चल जाये तो मान लेना। आजकल ब्राण्ड के नाम पर ग्राहक की जेब पर डाका डाल रहे है कुछ दुकानदार.....।
बिपिन–क्या ।
बिहारी–हां कल की ही तो बात हैं ।मैं बेटे के लिये ब्राण्डेड कम्पनी का जूता रू0 499.90 बिल क्रमांक 8242 दिनांक 22 जनवरी 2008 को वेंचर शो रूम से लिया ।घर आकर पता चला कि जूता पुराना है और एक जूते मे फीता भी नही है ।दुकान शिकायत लेकर गया तो दुकानदार उल्टे मेरे उपर इल्जाम लगाने लगा कि जूता पहनकर लाये है। न जूते बदला ना ही पैसे वापस किये । मै ठगा सा वापस आ गया ।
बिपिन–यह तो धोखाधडी है । मुनाफाखोर दुकानदार ग्राहकों के पाकेट पर डाका डालने लगे है।

उस्तरा

न्यूनतम् योग्यता उच्च श्रेप्ठता की बदौलत परसाद बाबू ब्रांचहेड का पद हथिया बैठे।परसाद बाबू वैसे तो सभी को आतंकित करके रखते थे परन्तु छोटे और अपने से अधिक योग्य लोगो से तो छत्तीस का आंकडा रखते थे । गणतन्त्र दिवस के चौथे दिन परसाद बाबू दोपहर के एक बजे आये । आते ही काल बेल पर जैसे बैठ गये । कुछ ही देर मे अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए बडे बाबू को बुलाने लगे अरे ओ दयावान इधर आ । साले दिन भर बैठकर चाय पीते है कोई काम नही करते । इसी बीच दयावान हाजिर हो गया ।
ब्रांचहेड – आग बबुला होकर बोले हमारी टेबुल कुर्सी और आफिस की सफाई क्यों नही हो रही है ।
दयावान–सर ओ चरेन्द्र आजकल नही आ रहा है ना । यह बात परसाद बाबू अच्छी तरह से जानते थे क्योंकि चरेन्द्र उनका चहेता था।आफिस का काम कम और उनका अधिक करता था ।
इतना सुनना था कि ब्रांचहेड परसाद बाबू की आंखो में खून उतर आया । तमतमा कर बोले चरेन्द्र नही आ रहा है तो तुम करो ।
दयावान–मैं क्यों ।
ब्रांचहेड परसाद बाबू–बदतमीजी से बोले तुमको करना पडेगा ।

दफतर के सभी लोग खामोश थे अधिकतम् योग्य दयावान के अपमान के गवाह भी। उनकी जबानें खामोश थी परन्तु जबान पर यह सवाल तैर रहा था कि संस्था ने बन्दर के हाथ में उस्तरा क्यों थमा दिया ।

घाव

साहेब की कोठी का काम निपटा कर सावित्री बाई आसूं पोछते जाते हुए देखकर ड्राइवर मोती चुपके से कोठी की आड में खडा हो गया और इशारे से बाई को अपनी ओर बुलाया ।

सावित्री बाई–बाबूजी क्यों बुला रहे हो । मैं ऐसी वैसी नही हूं ।उंची जाति की हूं । मजबूरी में झाडूं पोछा और कपडे धोने का काम कर रही हूं । पति की कमाई से घर नही चल पाता है ।बच्चों को अच्छा कल मिले इसी उम्मीद में तो गुलामी कर रही हूं साहब लोगो की ।

मोती–बाई मुझे गलत ना समझो ।तुम आंसू क्यों बहा रही हो ।

सावित्री बाई–बाबूजी गरीबों का आसूं कौन पोछता हैं । सब आसूं देते है ।

मोती–बाई क्या कह रही हो ।दुनिया में सभी एक जैसे नही होते ।भलमानुप लोग भी है।दूसरों के दर्द को अपना समझते है ।

सावित्री–बाबूजी सही कह रही हूं । ये आपके साहेब कोई भलमानुप है क्या ध

मोती–क्यों नही भलमानुप है बाई । इतने बडे साहब हैं । हां कम पढे लिखे है पर श्रेप्ठ हैं ।

सावित्री–साहब है ।इसका मतलब ये तो नही कि देवता है ।राक्षस है राक्षस .....।ये आसूं उनके दिये हुए शोपण के घाव की वजह से बह रहे है ।मोती–क्या हुआ बाई ।

सावित्री–बेटवा को नौकरी पर लगा देगे इसी उम्मीद में पांच साल से एकदम कम पैसे में कोठी का पूरा काम और खाना भी बना रही इतना ही नही टट्टी घर फोकट में साफ करवा रहे है ।बेटवा गजेन्द्र से भी सुबह शाम गुलामी करवा रहे है ।छुट्टियों के दिन तो सबुह साहब के बंगले आ जाता हैं और रात में घर वापस आता है भूखे प्यासे । ये लहूलुहान हाथ देखो बाबूजी तेजाब से फर्श साफ करने में हुआ हैं । यही हाल मेरे बेटे का भी है । क्या अमानुष लोग है ।

मोती–बाई द्वारपाल साहेब तुम्हारे बेटवा को कभी भी नौकरी नही दे सकते।गलतफहमी मत पालो । ये गरीबों के खून चूसने वाले शोपण के घाव के अलावा और कुछ नही दे सकते ।
सावित्रीबाई–धोखा कर रहे हैं क्या... ?
मोती–हां । आसूं न बहाओ । बात रखने की हिम्मत जुटाओ ।

बीमारी

साहब बडे साहब को क्या हो गया है लल्लू दुखी मन से पूछा ।
विजय–क्या हुआ लल्लू साहब को ।
लल्लू–बाबू चर्चाओ का बाजार गरम है।आपको कुछ पता नही ।अच्छा आप तो पी.ए.साहब है । जानकर भी अनजान रहेगे ना ।
विजय–सच लल्लू मुझे कुछ पता नही । बाजार गरम क्यों है तुम्ही बता दो ।
लल्लू–घुसखोरी और अत्याचार की वजह से । आजकल बात बात पर गाली देने लगते है । आपके साथ भी तो कल बहुत बदतमीजी कर रहे थे । सुना है कई एजेन्सियों से कई लाख डकार गये है।कईयों से ऐठने का प्लान है । दुआल साहेब तो बडे शातिर निकले ।चेहरे से तो बहुत शरीफ लगते हैं । मन से बहुत काले है ।
विजय–लल्लू दुआल साहेब अपने फर्ज को भूल गये हैं जानते हो क्यों।
लल्लू –क्यों साहेब ।
विजय–साहब साहब बनने लायक है ।
लल्लू–नही ।
विजय–बिल्कुल सही । पद और दौलत उम्मीद से बहुत ज्यादा मिल गया हैं । इसी अभिमान में दुआल साहेब मानसिक बीमारी के शिकार है ।

अश्पृस्यता

रघुवर–अरे भाई सेवक जलसे में नही गये थे क्या ।
सेवक–किस जलसे की बात करे रहे हो ।
रघुवर–अरे जिसे जिले की ये सुर्खिया है ।
सेवक–कम्पनी के जलसे की । ये तुमको कहां मिल गया।

रघुवर–भाई तुम्हारे विभाग के जलसे की खबर है ।इसलिये अखबार की कतरन साथ लेते आया ये देखो तुम्हारे दफतर के सभी लोग फोटो में हैं बस तुमको छोडकर।अच्छा बताओं तुम श्शामिल क्यों नही हुए ।
सेवक–मै छोटा कर्मचारी अश्पृश्यता का शिकार हो गया हूं ।
रघुवर–क्या कह रहे हो । तुम जैसे कद वाले सिर्फ पद के कारण अश्पृश्यता के शिकार....
सेवक–हां रघुवर ।
रघुवर–धैर्य खोना नही । जमाना तुम्हारी जयजयकार करेगा एक दिन सेवक....

चाय

अधिकारी–टीचू ये क्या है ।
टीचू–सर चाय है ।
अधिकारी– कैसी चाय है । वह भी सरकारी ।
टीचू–दूध में तनिक पानी डाल दिया हूं ।
अधिकारी–क्यूं ।खालिस दूध की क्यों नही ।
टीचू शिकायती लहजे में बोला–इंचार्ज बाबू मना करते है ।
अधिकारी–बाबू की इतनी हिम्मत । हमे तो खालिस दूध की ही चलेगी ।
टीचू–बावन बीघा की पुदीना की खेती वाले है,मन ही मन बुदबुदाया ।
अधिकारी–कुछ बोले टीचू ।
टीचू–नहीं सर ।
अधिकारी–अब तो सरकारी चाय दे दे ।
टीचू–सर दूध मे चाय पत्ती और शकर डलेगी ।
अधिकारी– हां क्यों नही पर पानी नही ।जा की बहस ही करता रहेगा। मूड खराब हो गया चाय देखकर ।
टीचू–दूध में चाय पत्ती और शकर डालकर गरम करने में जुट गया ।

प्रेसिडेण्ट

संस्था के उपकार्यालय के कर्मचारी यूनियन प्रेसिडेण्ट के आगमन की खबर से काफी उत्सुक थे । उधर दूसरा वर्ग कलह और झंझावतों से जूझ रहा था । प्रेसिडेण्ट दौर पर आये और सीधे कार्यालय प्रमुख के ए.सी.रूम में प्रविप्ट हुए फिर बाहर नही झांके । घण्टे दो घण्टे की

गपशप और चाय नाश्ते के बाद वे ए.सी.रूम से झटके से निकले और ए.सी कार में बैठ गये । बेचारे कर्मचारी प्रसिडेण्ट की झलक तक नही पा सके । एक कर्मचारी दूसरे कर्मचारी से बोला यार अपना वोट तो व्यर्थ हो गया ।

पासवर्ड

गोपाल प्रसाद अधिकारी के रूतबे में मदमस्त चरवाहे की भांति चिल्लाने लगे.....अरे वो दीपक तू जरा इधर आ.....

दीपक–क्या हो गया प्रसाद जी।

गोपाल प्रसाद– बैंक स्टेटमेण्ट की ई मेल आयी है ,प्रिण्ट लेने नही आ रहा है ।

दीपक–ईमेल एड्रेस बताइये निकाल देता हूं । उधर का प्रिण्टर खराब है ।

गोपालप्रसाद आशंकित मन से ईमेल एड्रेस बताये ।

दीपक–की बोर्ड सरकाते हुए बोला लीजिये पासवर्ड डाल दीजिये ।

गोपालप्रसाद बडी बारीकी से पासवर्ड डाले ।दीपक उनकी तरफ आंख उठा कर भी नही देखा पर गोपाल प्रसाद को पासवर्ड चोरी होने की शंका हो गयी ।

दीपक–लो प्रसादजी प्रिण्ट आ गया ।

गोपालप्रसाद बैक स्टेटमेण्ट लेकर दफ्तर के दूसरे कक्ष में गये । एक तरफ कोने में बैठकर बैक स्टेटमेण्ट का मुआयना किये । बीस मिनट के बाद आये और बोले दीपक तू बता पासवर्ड कैसे बदलते है ।

दीपक–पासवर्ड चोरी हो गया क्या प्रसाद जी ।

कमरा

आण्टी आपके यहां कमरा खाली है ना । गुप्ता आण्टी ने भेजा है ,कला– मिसेज कण्ठवास से पूछी ।

मिसेज कण्ठवास–हां है तो ।तुमको चाहिये या किसी और को.....

कला–मेरे भइया को ।

मिसेज कण्ठवास–देख लो ।

कला–कमरा तो बहुत छोटा है । आण्टी किराया कितना है ।

मिसेज कण्ठवास–बारह सौ ।मिसेज कण्ठवास पति की ओर इशारा करते हुए बोली उनसे बात कर लो ।

मिस्टर कण्ठवाल बोले कमरा ठीक है ।
कला–कमरा छोटा है किराया ज्यादा है । भइया अकेले रहकर पढाई के करेगे । सोना खाना तो घर पर ही होगा ।
मिस्टर कण्ठवास– भइया तुम्हारे सगे नही है ।
कला– सगे से बडे है राखी के भाई है ।
मिस्टर कण्ठवास–तुम्हारा भाई करता क्या है ।
कला–अंकल आर्टिस्ट है ।
मिस्टर कण्ठवास–पेण्टर को नही देना है । बाहर जाओ कहते हुए दरवाजा भडाम से बन्द कर लिये ।
कला–अंकल मैं बी.एफ.ए. फाइनल की परीक्षा दे चुकी हूं । मेरा राखी का भाई बी.एफ.ए.पास बडा चित्रकार है। अंकल आप जैसे मानसिक रोगी चित्रकार के वजूद को क्या जानेगें .... नही चाहिये आप जैसे घमण्डी का कमरा कहते हुए कला बैरंग लौट गयी ।
मिस्टर कण्ठवास के व्यवहार और कला के शालीन तेवर को देखकर मिसेज कण्ठवास के तो होश ही उड़ गये ।

उपभोग

अधिकारी अधीनस्थ कर्मचारी जयेश को हिदायत देकर लोकल दौरे पर चले गये । रात के साढे आठ बजे जयेश ने अधिकारी महोदय को मोबाईल पर काल किया । काफी देर के बाद अधिकारी ने फोन अटैण्ड किया और छूटते ही बोले जयेश कहां से बोल रहे हो ।
जयेश–सर आफीस से .....
अधिकारी–इतनी देर तक आफीस में क्या कर रहे हो ।
जयेश– सर आपकी हिदायत थी ना बैग से भरे बोरे रखवाने की ....
अधिकारी–ओ आई सी.....
जयेश–सर बैग की डिलवरी अभी हुई है बार बार के फोन करने के बाद....
अधिकारी–बहुत अच्छा काम तुमने किया सुनो मुझे अरली मार्निंग कल निकलना होगा । तुम दफतर सम्भाल लेना ।
जयेश–ठीक है सर .....
अधिकारी–एक काम करो...
जयेश–क्या सर.....

अधिकारी–एक बोरा खोलकर एक बैग ले लो .....
जयेश–सर बाद में आपके हाथों से ले लूंगा ।
अधिकरी–ठीक है अब तुम घर जाओ बहुत लेट हो गये हो.....
प्रोग्राम निपटाकर साहब आये ।चपरासी को बुलाये ।कार से बैग से भरा बोरा निकलवाये । चपरासी से गिनवा कर बैग आलमारी में रखवाये । कुछ बैग कार में रखवाये । जयेश इन्तजार करता रहा कि साहब अब बैग देगे तब देगे पर साहब ने नही दिया । जयेश हिम्मत करके बोला सर आप बैग देने वाले थे मुझे । दे देते तो काम आ जाता । मेरी बेटी कल बाहर जा रही है।
अधिकारी– बैग तो बंट गये जबकि सुबह ही तो ढेर सारे बैग आलमारी में और कुछ कार मे रखे गये थे व्यक्तिगत उपभोग के लिये.....

नसीब

हीराचन्द चश्मा साफ कर आंख पर रखते हुए उठे और कई दिनों से पडे कपउे प्रेस करने लगे ।सुहानी से नही देखा गया बूढे ससुर को कपडा प्रेस करते हुए ,वह दर्द को भूलकर बिस्तर से उठी और बोली बाबूजी रहने दो मैं कर देती हूं । बुखार आज थोडा कम है । आपने जिन्दगी भर काम ही तो किया है,अब आराम करो।हम किस दिन रात के लिये है ।
हीरसचन्द बोले तू बीमार है। आराम की तुमको अधिक जरूरत है न कि मुझको ।
सुहानी–बाबूजी रहने भी दो ना कहते हुए हीराचन्द के हाथ से प्रेस लेकर खुद करने लगी ।
बहू के सेवाभाव से हीराचन्द को जैसे स्वर्ग का सुख नसीब हो गया ।

भगवान

प्रातः दिव्यानी मुन्ना के रोने को अनसुना कर कीचन में कुछ बनाने में व्यस्त थी,जिसकी सुगन्ध सेवकबाबू की नाक तक बेधडक पहुंच रही थी । दिव्यानी कीचन से ही मुन्ना चुप हो जा मैं आयी कहकर चुप कराने की कोशिश कर रही थी ।

सेवकबाबू बहू मुन्ना को चुप कराओ कब से रो रहा है ।भूख लगी होगी । अरे मेरा चश्मा किधर चला गया,मै ही चुप कराता तुमको फुर्सत नही है तो । बच्चे का ख्याल रख करो बहू ।
दिव्यानी बाबूजी–ये रहा आपका चश्मा और ये आपका चाय नाश्ता ।
सेवकबाबू–बेटी पहले मुन्ना को देखना जरूरी है न कि मुझको ।
दिव्यानी–बाबूजी भगवान को भी तो नजरअंदाज नही किया जा सकता ।
सेवकबाबू कभी नीले आकाश की ओर तो कभी देवी समान बहू दिव्यानी की ओ देख रहे थे ।`टी का सुख
क्या औलाद हो गयी है आज के स्वार्थी जमाने की, बताओ तीन तीन हट्टे कट्टे बेटे,अच्छी खासी सरकारी नौकरी और बहूओ की भी सरकारी नौकरी पर तोता काका को समय पर पानी देने वाला नही ।देखो बेचारे अस्सी साल की उम्र में घर छोडकर जा रहे थे ।
खेलावन काका की बात सुनकर देवकली काकी बोली देखो एक बेटी अपनी भी है चार चार बच्चों का पाल रही है।दफतर जाती है। बीटिया जरा भी तकलीफ नही पडने देती । सारी सुख सुविधा का ख्याल रखती है । एक वो है, तोताजी, बेटा बहू नाती पोता,भरा पूरा परिवार,अपार धन सम्पदा के बाद भी दाना– पानी को तरस रहे है। एक बेटी के मां बाप हम है।

।। बर्थडे ।।

हैप्पी बर्थडे सर कुमार बाबू बोले.....
अशोक बाबू मेरे बर्थडे के बिते कई दिन हो गये कुमार बाबू बोले ।
अशोक कुमार बाबू मिठाई खाने का तो मेरा भी हक बनता है ।
कुमार बाबू–क्यो नहीं....कहते हुए चपरासी से अकेलाबाबू को बुलावे ।
अकेलाबाबू बोलिये कुमार बाबू क्या फरमा रहे है ।
कुमारबाबू–सुन रहे हो साहब मिठाई खाने का कह रहे है ।
अकेला बाबू –कैसी मिठाई किसी खुशी में.....
अशोकबाबू–कुमार बाबू के बर्थडे कि खुशी में ।
कुमारबाबू चपरासी से बोले जा अकेलाबाबू से पैसा ले ले और साहब के मन पसन्द की मिठाई ला।
चपरासी–कौन सी साहब, काजू कतली,शंखबादाम या और कुछ...

अशोकबाबू–कुछ भी नही....
चपरासी–क्यों नही साहब ।
अशोकबाबू–कुमार बाबू के बर्थडे की मिठाई खाने की बात हो रही थी ।यहां तो कुमारबाबू ने तो पैंतरा बदल दिया अपने बर्थ डे को कम्पनी का बना दिया ।

दीमक

मितेष–श्रीराम सर...
श्रीराम–हां बोले पत्रकार महोदय..
पत्रकार–सर फरमेशबाबू का इन्टरव्यू रूबरू कालम में छप गया है ।
श्रीराम–बहुत अच्छा । धन्यवाद फरमेशबाबू का इन्टरव्यू छापने के लिये ।
कन्हैया–सर आपका इन्टरव्यू छपा है
श्रीराम–नही मेरा नही फरमेशबाबू का ।
चपरासी–भागते हुए फरमेशबाबू के पास गया और बोला बधाई हो सर आप तो छा गये शहर में ।
फरमेशबाबू –वो कैसे ।
चपरासी–आपकी अखबार में फोटो छपी है श्रीराम साहब बता रहे है ।
फरमेशबाबू – मेरी फोटो छप गयी जा दौडकर अखबार खरीद ला.....
चपरासी–सर पैसा....
फरमेशबाबू –जा श्रीराम से ले ले...
चपरासी–सर अखबार लाना है पैसा दीजिये ।
श्रीराम–इनटरव्यू कंजूसबाबू का छपा है पैसा मै दूं.....
चपरासी– कम्पनी को दीमक की तरह खाने वाले.....क्या देगें....

एहसान

ओमप्रकाश एक कम्पनी में कार्यरत् थे उनकी पत्नी किरन कम पढी लिखी तो थी पर स्कूल की टीचर हो गयी थी। दोनो बच्चे गोलू शोलू और गोलू बहुत छोटे छोटे थे । ये दोनो बच्चों हम पति–पत्नी की गोद में खाये पले बढे। मेरे बच्चों ने भी बहन भाई का प्यार दिया, ओमप्रकाश और किरन को बच्चों ने सगे चाचा चाची का ।
आठ साल के बाद मेरा घर खाली कर रहे थे । हमारे घर का माहौल गमगीन हो गया था । घर खाली कर ओमप्रकाश सरमा सपरिवार

चले गये बिना बिजली का बिल दिये । पानी का बिल तो कभी दिये ही नही। नाममात्र का किराया ले रहे थे परिवार के सदस्य मानकर । दूसरे दो दो हजार देने को तैयार थे पर नही दिये।
ओमप्रकाश और उनके परिवार के जाने के दो दिन बाद घर का ताला खुला । घर अन्दर से दो समुदाय के दंगे में लहूलुहान आदमी की तरह अपना हाल बयां कर रहा था। रसोईघर के जल निकासी का पाईप, लैर्टिन की दीवार और फर्श पर लगी टाईले कूंच दी गयी थी । बिजली सप्लाई लाईने तोड दी गयी थी। वाशबेसिन तहस नहस था । दस खर्चा का खर्चा खडे खडे मुंह चिढा रहा था । मैं घर का हाल देखकर अवाक् था । श्रीमती पल्लू में आंख छिपाये हुए बोली क्या सिला दिया रे मतलबी मेरे एहसान का.....

दौलत

बाबूजी – आप तो कहते हो कि आदमी बड़ा बनता है तो फलदार पेड़ की तरह झुक जाता है ।
हां बेटा रामू मैंने तो गलत नही कहा है। बात तो सही है रघुदादा बेटे से बोले ।
रामू–बाबूजी बात पुरानी हो गयी है।
रघुदादा–बेटा ये अमृतवचन है ।
रामू–बाबूजी मैं बांस से ज्यादा पढा लिखा हूं । दफ्तर के बाहर मान सम्मान भी बहुत है । इसके बाद भी अपमान.....
रघुदादा–ये दुर्जनों के लक्षण हैं । ये बबूल के पेड सरीखे होते हैं बेटा।
रामू–बाबूजी क्या करूं ?
रघुदादा–कुछ नही। कर्म पर विश्वास रखो बस...
रामू–बाबूजी रोज रोज अपमान का जहर.....
रघुदादा–बेटा हर अच्छे काम में बाधाये आती है। घबराओ नहीं । भले ही ऊंचा पद और दौलत का पहाड तुम्हारे पास नही है परन्तु तुम्हारे पास कद की ऊंची दौलत तो है। कद से आदमी महान बनता है । पद और दौलत से नही.....

ट्रेनिंग

तुम्हारी तीन दिवसीय ट्रेनिंग होने जा रही है देवी प्रसाद कनक साहब पूछे ।

देवी प्रसाद–हां साहब,कुछ देर पहले फैक्स से सूचना आयी है ।
कनक साहब–बधाई हो भाई तुम्हारी ट्रेंनिंग । हमारी तो हुई नही । तुम्हारी हो रहा है कहते हुए कनक साहब अपने माथे पर चिन्ता के काले बादल लिये अपनी केबिन में चले गये ।
बब्बन–देवीप्रसाद कनकसाहब बधाई दे रहे थे या विरोध कर रहे थे ।
देवीप्रसाद–कनक साहब बडे अफसर है । उनका अभिमान बोल रहा था । छोटे कर्मचारियों की ट्रेंनिंग कनक साहब जैसे अफसर फिजूलखर्ची और कम्पनी के लिये घाटे का सौदा मानते है । छोटे कर्मचारी का तनिक सा हित छाती में शूल की तरह गड़ता है ।
बब्बन–जैसे तुम्हारी ट्रेनिंग .....

कारा

गीता–आज पी लिये क्या चन्द्रमुखी के बापू.....वैसे मुझे विश्वास तो नही हो रहा है । क्या बात है।
अनिल–क्यो इल्जाम लगा रही हो भागवान विषधरों के बीच में काम करना पडता है । वो कैलाशनाथ भी अब डंसने लगा है । मुझे रौंदने को बेचैन रहने लगा है ।
गीता–क्या कैलाशनाथ ने अपनी नेकी बिसार दी ।
अनिल–हां अब तो वे तरक्की पा गये ना ।कमजोर का खून उन्हे भी अच्छा लगने लगा है। हम वंचित को घूट घूंट कर मरने के लिये माहौल बनाने लगे है जातीय समीकरण तैयार कर ।
गीता–क्या ? कैलाशनाथ भी आदमियत के हो गये ।
अनिल–हां । जातीय श्रेष्ठता का अभिमान,पद और दौलत का अभिमान कैलाशनाथ के सिर पर चढकर बोलने लगा है ।
गीता– चन्द्रमुखी के बापू घोर कारा छा रहा है,आदमियत का दीया जलाये रखना हारना नही.....।

खाली पर्स

मार्च का दूसरा दिन था पगार मिलने की उम्मीद थी । गुणानन्द सोच रखा था कि पगार मिलते ही घरवाली के अस्पतला ले जायेगा जो कई दिनों से दर्द से कराह रही है । कैशियर सुखेश साहब दफतर बन्द होने के कुछ पहले पगार बांटना शुरू किये ।पगार मिलने की उम्मीद में कई घण्टों तक गुणानन्द काम में लगा रहा । सुखेश साहब खिझ

निकालते हुए गुणानन्द को पगार आज न देने की जिद कर बैठे । गरीब गुणानन्द को देखते ही सुखेश साहब टालमटोल करने की आदत थी ।कमजोर को तंग करने में उन्हे खूब मजा आता था ।आखिरकार गुणानन्द को पगार नही दिये ।गुणानन्द उदास घर की ओर चल पडा। कुछ ही देर में आकाश में अंवारा बादल छा गये और बरस पडे । गुणानन्द भींगा घर पहुंचा पिचका खाली पर्स निकालकर खटिया पर रखा जिसमें मात्र पच्चस पैसे थे । खाली पर्स रखकर भींगे कपडें उतारने लगा । इतने में गुणानन्द की धर्मपत्नी रेखा आयी और बोली आज दर्द कम है अस्पताल बाद में चलेग वह दर्द में बोले जा रही थी ।

गुणानन्द कभी कभी खाली पर्स को तो कभी पत्नी को । पत्नी के दर्द के एहसास से उखडें पांव गुणानन्द कराहते हुए बोला वाह रे अमानुष सुखेश साहेब.....

नंगापन

दीनानाथ– रामू काका मध्यम कद काठी,उुची योग्यता,नन्हा ओहदा,उत्पीड़न शोषण का शिकार ,इल्जामों का बोझ ,पग पग पर परीक्षा देते विजय का कर्म–पथ पर ईमानदारी से बढना । दम्भी मानसिक नंगे लोगों की आखों का सकून छिन रहा था । विजय की कराह पर तालियां बज उठती। मुडकर देखने पर आचरणहीनता,दुर्व्यवहार का तैयार हो जाता । हां शोषण और उत्पीड़न बढ जाता । विजय पीछे मुडकर देखता तो कराहटे और आगे विरान पसरा नजर आता । विजय परिवार के कल के लिये शोषण और जुल्म का जहर तपस्या मानकर पीने लगा।

रामू –तब क्या हुआ दीनानाथ ।

दीनानाथ – काका दम्भी मानसिक नंगे लोगों को विजय के शोषण और दर्द से उतना ही सुख मिलता जितना शेर को जीवित शरीर पटक पटक कर चबाने में और अय्यास को कान्ता के सीने की गोलाई,गुलाब से होठ और झील सी आंख में उतरने का । काका वक्त बदला विजय की योग्यता रंग लायी । उखड़े पांव विजय के पैर जम गये ।उसका नेक कर्म उजली पहचान बन गया पर.....

रामू– पर क्या दीनानाथ बेटवा.....

दीनानाथ– शोषण करने वाले, नंगे दम्भी लोग बदनाम हो गये उनके नाम पर लोग थू थू करने लगे और क्या काका।
रामू–दीनानाथ सच्चाई तो यही है । विष–बीज बोने वाले मीठे फल कहां पायेगे ?

परछाईं

मं बाप की लाखों दुओं और ढेर सारा अरमान लेकर राजा शहर की ओर कूंच किया । राजा जब गांव छोड़ा था तब उसके छोटे बड़े भीई बहन और मां–बाप सभी उसको पकड़ पकड़ कर खूब रोये थे ।वह भाई बहनों को कपड़े,खेल खिलौने लाने और मां–बाप के आंसू अपनी कमाई से पोछने का वादा करके चला था । कई महीनों की दौड़धूप और भूख प्यास के बाद एक कम्पनी में राजा को नौकरी मिल गयी । नौकरी का समाचार सुनकर राजा के घर में जश्न का माहौल हो गया था । राजा की मां चिपके पेट में एक गिलास पानी डालते हुए बोली भगवान तुमने दुखियारी मां की तपस्या पूरी कर दी । बेटवा को खूब तरक्की देना भगवान ।तू तो जानता ही है कितनी मुसीबते उठाकर मेरा राजा पढ पाया है। तेरी कथा सुनकर पूरी बस्ती में परसाद बांटूंगी.....
श्राजा साल भर के बाद गांव गया । ग्राम देवता के आगे सिर झुकाया ।राजा को देखते ही पूरी बस्ती के लोग खुशी से नांच उठे ।राजा घर और गांव वाली खुशी देखकर बहुत प्रसन्न हुआ।राजा खटिया पर बैठा हुआ था,राजा की मां सोनावती आयी उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली शहर में खुश तो है ना ।
राजा–हां मां ।
सोनावती–बेटा तुम्हारे माथे की लकीरों से तो मुझे चिन्ता हो रही है ।
राजा– ना मां कोई चिन्ता की बात नहीं...
सोनावती–बेटा कुछ तो छिपा रहा है क्या बात है मेरी कसम तू मुझे बता .....
राजा–मां कम्पनी में भी भेदभाव होता है ।गांव और शहर में बहुत ज्यादा फर्क नही है। कम्पनी में तो और बुरा हाल है ।
सोनावती–क्या..... ?
राजा– हां मां यही सही है ।
सोनावती–हे भगवान कलमुंहीजातिपांति से कब छुटकारा मिलेगा.....

चिट्ठी

तेजानन्द की चिट्ठी देखकर उसकी मामी सुभौती को जैसे सांप सूघ गया । वह बस्ती के लोगों से बोली देखों हमारा भांजा शहर क्या गया कि हमारे खिलाफ आग उगलने लगा । मां की शिकायत सुनकी बेटवा ने चिट्ठी लिखा है । गांव के कुछ लोग भी सुभौती की हां में हां मिलाने लगे । पुजारी मामा काम खेत से घर पहुंचे तो भीड़ को हैरान हो गये वह कुछ बोलते उसके पहले ही सुभौती चिट्ठी उनके हाथ रखते हुए बोली लो तुम्हार भांजा बड़ा अफसर हो गया है देखो उसकी मां को नन्ही सी बात क्या कह दी वह तो शहर से बड़ा खर्रा लिख भेजा है । मैं भी समझती हूं ।

पुजारी– कुछ नही समझती तेजानन्द की मांमी । भांजा तुम्हारा हमारा चरण स्पर्श कर पूरी बस्ती के बड़ो को प्रणाम छोटो को आशीश लिखा है । तुमने बतंगड़ बना दिया । अरे मूरख तनिक मेरा इंतजार तो कर लेती । इतने में कुबड़ा बोला भइया काला अक्षर भैंस बरोबर भउजाई का जाने..... इतने में सब खिखिलाकर हंस पड़े ।

नेतागिरी

भोपू से टैक्स वसूली की खबर सुनकर चिन्तानन्द टैक्स वसूली कैम्प पहुंचे । पूरी कालोनी टैक्स कैम्प में समायी हुई थी सब की जबान पर एक ही सवाल कैसे भरेगे इतना टैक्स । रीनकर्ज करके मकान बनाया । कई से टैक्स सिर पर थे ही अब डायवर्सन टैक्स..... हे भगवान टैक्स के दलदल से कैसे उबरेगे ।

चिन्तानन्द को देखकर हंसमुख बाबू बोले चिन्तानन्द भइया आ गये डायवर्सन टैक्स के फेरे में.....ए कालोनाइजर भी खून चूसने में लगे है । ना पानी की ठीकठाक व्यवस्था है ना ड्रेनेज की । सड़क देखो तो सड़क कम गड्ढा अधिक दिखायी पडती है । अब तो रहवासियों को चन्दा करके सड़क बनवाना होगा । कालोनाइजर ने तो एक और टैक्स को बोझ छाती पर रख दिया । हंसमुख की बात सुनकर काला रोबीला कालोनाइजर खौफचन्द दहाड़ते हुए बोला क्या नेतागिरी हो रही है । नेतागिरी करनी है तो दूर जाओ ।

आत्महत्या

परसुदादा आत्महत्या कर लिये,यह खबर बस्ती कं किसी व्यक्ति के गले नही उतरी । नही दोस्तों का और नहीं दुश्मनों को ही ।परसुदादा की मौत का रहस्य तब उजागर हुआ जब उनके मझले भाई करजू के समधि दूधनाथ और दमाद प्रभु ने परसु दादा और उनके तीनों भाईयों के नाम चौदह साल पहले खरीदी गयी जमीन पर कब्जा कर लिये । खेती पर जमीन पर कब्जा के बाद प्रभु का हौशला और बढ गया वह दरसु के घर पर भी कब्जा जमाने के लिये कानूनी दावपेच चलने लगा । प्रभु के अन्याय को देखकर बस्ती के कुछ लोग दरसु के साथ खड़ें हो गये। बस्ती वालों की वजह से प्रभु दाल गलती ना देखकर बोला दरसुवा तुमको तो जमीन में गड़वा दूंगा । तेरे बड़े भाई परसुवा की तरह तुमको पेड़ पर नही लटकाऊंगा याद रखना कहते हुए वह दलबल के साथ चला गया । परसुदादा के मौत की हकीकत से बीस साल बाद रूबरू होकर दरसु और उसके परिवार वाले ही नही पूरी बस्ती के लोग रो पड़े

मन्त्रोपचार

अंग्रेजी उपचार के बाद भी सदानन्द पीलिया से ठीक नही हो पा रहे थे। पन्द्रह दिन में खटिया में सट गये । सदानन्द की हालत को देखकर चमेलीबाई ने झाड़फूक कराने की सलाह दी ।सदानन्द बाबू की पत्नी निर्मला को काफी पूछताछ के बाद पानी के टंकी के नीचे रहने वाले बाबा का पता चला । निर्मला बड़ी मुश्किल से बाबा के पास ले गयी । बाबा निर्मला से नारियल और अगरबत्ती मंगवाये फिर झाड़फूक शुरू कर दिये और अंग्रेजी दवाई भी चलाने की सलाह दिये । तीन दिन तकसदानन्द बाबू की हथेली पर चूना लगाकर मन्त्र पढते इसके बाद थाली में हाथ धुलवाते पानी बिल्कुल पीला हो जाता । चौथे दिन पानी तनिक भी पीला नही हुआ तब बाबा बोले बेटा पीलिया अब खत्म हो चुकी है अब ताकत की चीजे खाओ । पीलिया की अभी कोई कारगर दवाई नही बन पायी है पर मेरा मन्त्रोपचार किसी दवाई से कम नही कहकर दूसरे पीलिया पीडित की झाड़फूक में लग गये ।

दर्द

टाइपराइटर दफतरों से धीरे धीरे गायब होने लगे थे और कम्पयूटर पांव पसारने लगे थे । करमचन्द के टाइपराइटर की जगह कम्प्यूटर

लग गया जिसमें सिर्फ अंग्रेजी के प्रोग्राम थे ।करमचन्द क्या दफतर में किसी को कम्प्यूटर ठीक से चलाने भी नही आता था ।अंग्रेजी मे तो कुछ काम हो भी जाता था पर हिन्दी में बहुत कठिन था । करमचन्द बाबू एक मामूले से कलर्क के ओहदे पर काम तो करते थे पर पढे लिख अधिक थे परन्तु छोटी जाति के थे । इसका दुखता एहसास दफतर के बूढी मानसिकता के लोग अक्सर करवाते रहते ।पर वे अपने काम में ईमानदारी से लगे रहते । वे खुद के खर्चे पर हिन्दी टाइप सीखना भी शुरू कर दिये थे ।इसी बीच कम्पी के बोर्ड आफ डायरेक्टर का चुनाव आ गया । वोटर लिस्ट और ढेर सारे फार्म हिन्दी में बनना था सारी जिम्मेदारी करमचन्द के उपर डाल दी गयी । करमचन्द ने सारा काम बडी लगन और ईमानदारी से पूरा किया,चुनाव का काम पूरा हो गया नया बोर्ड बन गया । रूढीवादी मानसिकता के धनी बाबू रामखेलावन साहब ने करमचन्द की शिकायत उच्च अधिकारियों से कर दी सिर्फ छोटी जाति का होने के कारण। करमचन्द को मिला एक और नये गहरे घाव का दर्द और वनवास का आदेश भी ।

चेस

अधेरा उजाले को लीलने लगा था । मनखुश बाबू दफतर के काम में खोय हुए थे क्योंकि छोटे ओहदे पर होने के कारण सभी काम के लिये उनको ही जिम्मेदार ठहराया जाता था । इसी बीच हल्की सी बरसात आ गयी । मौसम गदराने लगा अफसर जीरावन साहब को कुछ कुछ होने लगा। तनिक भर में अंगूर की बेटी का इन्तजाम हो गया । जीरावन बाबू बोतल मे डूबने लगे ।जीरावन बाबू और उनकी मण्डली बोतल में ऐसी डूबी की रात के नौ बज गये । बांस को आफीस में बैठा छोडकर करमचन्द जा भी नहीं सकता था क्योंकि अफसर जीरावनबाबू तिल को ताड़ बनाने में माहिर थे । वफादार अधिक पढे लिखे करमचन्द की शिकायत में उन्हें बहुत मजा आता था । वे करमचन्द को प्रजा से अधिक कुछ नही मानते। यही चलन भी था इस संस्था । सब कुछ पुराने तौर तरीके से संचालित होता था पर कम्पनी पर आधुनिकता की छाप थी । करमचन्द की कोई सुनने वाला भी न था कम्पनी के सामन्तशाही ठाट में ।करमचन्द हिम्मत करके जीरावन साहब के सामने मुंह खोल भी नही पाया था कि

बन्दकुमार साहब बोले सर देखो करमचन्द को चढ गयी बहकी बहकी बातें करने लगा है । छोटे लोगों का पेट भरने लगता है तो अपनी औकात भूल जाते है । इतने में जोरदार ठहाके के साथ चेस.... चेस.... का खुंखार स्वर गूंज गया उखड़े पांव करमचन्द के पांव के नीचे की जमीन जैसे हिल गयी ।

जाति

शहर में शिफ्ट हो चुके जमींदार साहब के बेटे के ब्याह की रिश्पेसन पार्टी का न्यौता पाकर श्याम भी हाजिर हुआ । श्याम को देखकर जमीदार यादवेन्द्र के चचेरे भाई दरिदेन्द्र का खून खौल गया । वह श्याम को एक ओर ले जाकर गाली देते हुए बोला अरे तू छोटी जाति का है ।हमारी बिरादरी के लोगों के साथ खाना खा रहा है । कुछ तो शरम करता । हमारी बिरादरी के लोग तुम जैसे छोटी जाति वाले को हमारी इतनी बडी रिश्पेसन पार्टी में देखकर हमारे मुंह पर थूंकेगे की नही। तू मेरा हुक्का पानी बन्द करवायेगा क्या .....? तुम्हारा छुआ खाना कौन खायेगा ...? तुम्हारा छुआ पानी कौन पीयेगा... ? अरे कितनी भी बडी बडी डिग्री ले ले तू तो रहेगा छोटी जाति का ही ना.... .. दरिदेन्द्र जातिसूचक अपशब्द बके जा रहा था ।

श्याम बोला दरिदेन्द्र वक्त बदल चुका है। छोटी जाति के लोग बडें बडे मान सम्मान पा रहे है,पूजे तक जा रहे है । तुम अमानुषता की लकीर पीट रहे हो। जातिवाद की दीवारें ढह चुकी है। श्याम दरिदेन्द्र के अभिमान को धिक्कारते हुए वापस तो चला गया पर छोटी जाति के दर्द से नहीं उबर पाया.....

पिकनिक

सभी लोग स्टेशन पर ट्रेन आने के पहले पहुंच जाना । पिकनिक को यादगार बनाना है। विभागाध्यक्ष हिदायत देते हुए जाने लगा। सभी लोग साहब की हां में हां मिलाने लगे ।

त्रिलोचन बोला साहब मुझे स्टेशन पहुंचने में दिक्क्त होगी घर भी दूर है और परिवार भी ।

साहब–नो प्राब्लम ड्राइवर छोड़ देगा । ड्राइवर को हिदायत देकर साहब चले गये ।

दूसरे दिन त्रिलोचन ड्राइवर का इन्तजार करता रहा । सभी मुलाजिम स्टेशन पहुंच गये। ट्रेन के जाने का समय सिर पर आ गया । त्रिलोचन बड़ी मुश्किल से स्टेशन तो पहुंचा पर गाड़ी को सिग्नल मिल चुका था ।

त्रिलोचन के देर से आने की शिकायत साहब तक पहुंची वे नाराज हुए। त्रिलोचन ने आप बीती साहब को कह सुनाया ।

साहब ड्राइवर से पूछे क्यो विषचरन दफतर की कार कहां थी ।

ड्राइवर विषचरन–साहब मैं बीवी बच्चों के साथ शापिंग करने गया था ।

न्याय

कम्पनी को जेब में रखने वाले बड़े अधिकारी महोदया कम्पनी की माली हालत और कर्मचारियो के उत्थान में किये जा रहे कार्यो को नमक मिर्च लगाकर परोस रहे थे । साहब के खास लोग साहब के जयकारे लगवा रहे थे । साहब जयकारे से खुश होकर बोले हमने सभी का प्रमोशन समय से करवाया है ।सभी कर्मचारियों के साथ पूरी इंसाफी हुई है । किसी की कोई परेशानी हो तो कह सकता है ।

दुखीराम बोले साहब मुझे कुछ कहना है ।

दुखीराम को देखकर साहब की नजर बदल गयी । कुछ लोग खींच कर बैठाने लगे ।

साहब ने रंग बदलते हुए बोला ठीक है क्या कह रहे हो दुखी राम कहो ।

दुखीराम–साहब मेरे साथ तो अन्याय हुआ है । मेरे अनुरोध पत्रों को कूड़ेदान के हवाले कर दिया जाता है । मेरी योग्यता को अयोग्यता मान लिया गया है । बहुत ठोकरें मारी गयी है मुझे । क्या तरक्की के लिये जातीय श्रेष्ठता का प्रमाण पत्र जरूरी है, शैक्षणिक योग्यता का नहीं ं ।

दुखीराम के सवाल से बड़े अधिकारी महोदय का चेहरा स्याह हो गया। गिने चुने इंसानियत पसन्द दबी जुबान से कह रहे थे चौथे दर्जे के दुखीराम के पास बड़ी बड़ी डिग्री होने के बाद भी चौथे दर्जे से उपर नही उठने दिया गया,यह न्याय तो नही ।

विषमाद

निरीक्षण समिति के दौर की खबर आते ही पूरे दफतर की फाइले और कामकाज में एकदम निखार आ गया । पुरानी फाइलें नये कवर से सजकर दुल्हन बन गयी । संस्था के कार्यकलाप की रिर्पोट अव्वल दर्जे की बनी खुशीराम की हाड़फोड़मेहनत और आंसू में नहाकर । समिति ने निरीक्षण किया दफतर के कार्यकलाप की बहुत प्रशंसा हुई । शहर के बड़े होटल में खूब जश्न मना पर उखडे पावं खुशीराम को कोसो दूर रखा गया शायद छोटा ओहदा होने के कारण.....।

वृध्दाश्रम

बूढे मां बाप वृध्दाश्रमों की डगर पर की खबर पर देवकीनन्द की निगाह थम गयी और उनकी आंखों से आसूं लुढकने लगे । देवकीनन्द की दशा देखकर दमयन्ती बोली क्यों जी क्या हो गया कोई बुरी खबर अखबार में छपी है क्या ?

देवकीनन्दन– बहुत बुरी खबर .....

बूढे सास ससुर की बातचीत सुनकर रोशनी आ गयी और बोली बाबूजी क्या हो गया आपकी आंखों में आंसू ।

दमयन्ती ने बहू रोशनी के सामने अखबार रख दिया ।इतने में राजनरायन आ गया गमगीन मां बाप को देखकर रोशनी से बोला ये क्या चिराग की मम्मी.....

रोशनी ने अखबार की खबर की ओर इशारा क्या ।

राजनरायन–पिताजी आंखों में आंसू क्यो ?

देवकीनन्द–बेटा डर गया था कुछ पल के लिये....

रोशनी बाबू–मेरे जीते जी तो ऐसा नही हो सकता ।

राजनरायन– पिताजी रोशनी ठीक कह रही है ।

चिराग– मम्मी दादाजी दादीजी के नाश्ते का समय हो गया जल्दी करो ।

रोशनी–हां मुझे याद है।

देवकीनन्द और दमयन्ती एक स्वर में बोले सदा खुश रहो मेरे बच्चों..... .....

दमाद

कृपा और उसके बूढे बाप आटो रिक्शा में बैठे ही थे कि एक अधेड़ महिला आटो के सामने आकर खड़ी हो गयी और आटो में बैठने की

जिद करने लगी । आटो चालक बोला रिजर्व सवारी है। किराया देती नही घर पहुंच कर दादागीरी करने लगती है ।
कृपा चलो भइया–हां विपत्ति तो रास्ता छोड़े ।
अधेड़ महिला अंधेरी रात में एक औरत को अकेली छोड़ जाओगे ।
आटो चालक– दिन भर सीधे साधे लोगो को चूना लगाती हो । किराया भी नही देती । कौन रोज रोज फोकट में ले जायेगा ।
अधेड़ महिला बाबू चलोगे तो हमारे ही गांव की सड़क पर । कृपा के पिताजी से बोली दादा गोपालपुर जा रहे है किसके घर जायेगे ।
कृपा के पिताजी स्वामी बोले –दरोगा के घर ।
अधेड़ महिला–बडे नेक इंसान थे दरोगाजी चटपट में मर गये । आज तो तीसरा है। आने में बहुत देर हो गयी ।
स्वामी–अपने गांव कुछ काम से गया था । आवाजाही तो लगी रहती है ।
अधेड़महिला–कृपा की ओर इशारा करते हुए बोली ये थानेदार के दमाद है ।
स्वामी– हां ।
अधेड़ महिला दो बोरे सामान आटो में जर्बदस्ती ठूस दी और आटो चालक के साथ बैठ गयी और बोली अब तू चल।
आटोचालक डरते हुए आगे बढा । डेढ़ घण्टे के सफर के बाद महिला का घर आ गया । दोनो बोरे उतारी और जाने लगी तब स्वामी बोले भइया किराया तो ले लो । तब तक तपाक से वह बोली गांव के दमाद किराया दे देगे। क्यो दमादजी ? कहकर जल्दी जल्दी जाने लगी।
आटो चालक आप लोगों का पाकेट सही सलामत तो है ना ?
स्वामी– क्यों..... ?
आटोचालक– बाबूजी वह चोरनी थी ।

परिवर्तन

सुरजनाथ–सुदामा सुना है धर्म बदलने जा रहे हो ।
सुदामा–ठीक सुना है बाबू ।
सूरजनाथ–क्यों सुदामा ?

सुदामा–कब तक जातिवाद,छुआछूत,ऊंच–नीच,सामाजिक उत्पीडन का जख्म ढोऊंगा । मुझे समानता का हक तो भारतीय रूढीवादी समाज में मिलने से रहा ।
सूरजनाथ–ऐसा क्यों सोचते हो ?धर्म परिवर्तन तो पाप है ।
सुदामा–जहां आदमी को आदमी नही समझाा जाता हो वहां रहना पाप है,न कि धर्मपरिवर्तन । मरने से पहले सामाजिक समानता की प्यास बुझाना चाहता हूं ।
सूरजनाथ–क्या इसके लिये धर्म परिवर्तन जरूरी हो गया है ।
सुदामा–हां बाबू । क्या उच्चवर्ण के लोग जातिवाद की मजबूत दीवार तोड़ पायेगे । बाबू जब तक उच्चवर्ण के लोग जातीय दम्भ की दीवार को ढहाकर सामाजिक समानता की पहल नही करते है ।सामाजिक समानता का जीवन्त उदाहरण नही बनते हैं, तब तक धर्मपरिवर्तन पर रोक सम्भव नही है ।
सूरजनाथ–हां सुदामा ठीक कह रहे हो भारतीय समाज की रक्षा के लिये जातिवाद के किले को ढहाना ही पड़ेगाा ।जातिवाद का किला ढहते ही धर्मपरिवर्तन पर विराम लग जायेगा।

भय्यपन

देखो भय्यपन के लिये भग्गू मर मिटा पर भखू ने इंसाफ नही किया ।
क्या कह रहे हो रघु ।
देवीप्रसाद–ठीक कह रहा हूं । भग्गू घरवाली का कहना नही माना । उसकी घरवाली मायके बस गयी बच्चे लेकर पर वह भाई से अलग नही होने की कसम नही तोड़ा। । जीवन भय्यपन के नाम कुर्बान कर दिया ।शहरी हवा का शिकार भखू दौलत खातिर भग्गू के साथ विश्वासघात तो किया ही भय्यपन के पाक रिश्ते को नापाक कर दिया ।
रघु–ठीक कह रहे हो भइया भखू ने चल अचल सम्पति पर कब्जा कर हत्या का अपराध किया है। बेचारे भग्गू का धन धर्म सब लूट गया ।बेचारा जान से भी गया । घरवाली और बच्चों से बिछुड गया भय्यपन खातिर.....

देवीप्रसाद–भय्यपन के इतिहास में भग्गु का नाम तो अमर हो गया पर भखू नफरत का पात्र बन गया ।
रघु–हां भइया भग्गु मर गया पर भय्यपन के कद को बढा दिया ।

प्रस्ताव

मधु–क्या बात है बड़े खुश लग रहे है ।
विजय– दिल तोड़ दिया ।
मधु–क्या दिल तोड़ दिया ? किसका ।
विजय–हां । अनीता पीटर का ।
मधु–क्यों और ये है कौन ?
विजय–विदेशी लड़की है । बडे पद पर काम करती है, करोड़ो डालर की मालकिन है। विवाह करना चाहती है । मना कर दिया पर मैंने भी हार नही माना प्रस्ताव रख दिया ।
मधु– क्या ?
विजय– चौको नही बहन बनाने का प्रस्ताव दिया हूं।
मधु– आप कितने पत्नीव्रता है। भारतीय संस्कृति में पति–पत्नी सात जन्म तक साथ निभाते है ,सच्च साबित कर दिया आपने । बडे पद और करोड़ों डालर की मालकिन के प्रस्ताव को ठुकरा और प्रस्ताव रखकर। मुझे जीते जी स्वर्ग का सुख मिल गया ।

जनाजा

बहन की सासुमां जनाजा घर से कुछ दूर पर जाकर रूक गया ।मृतदेह को जीप के उपर रखकर अच्छी तरह बांध दिया गया बनारस जो जाना था ।कई जीपों का इन्तजाम था । गांव के मानिन्द–बुजुर्गो को दो–चार सफेदपोश किस्म के लोग पीछे बैठने का हुक्म दिये जा रहे थे । एक सफेदपोश बोला मामा तुम भी पीछे बैठ जाओ । जनाजे में अधिकतर शामिल लोग जीपों में बैठ गये । जीप बनारस की ओर दौड़ पड़ी । बूढे बच्चे और औरते वापस हो लिये । घर की औरते बच्चे जीप की ओर देखकर रदहाड़े मार मारकर रोये जा रहे थे । अन्तोगत्वा सभी वापस हो गये ।कुछ दूर जाने के बाद बुध्दिराज अपने पास बैठे बुधई से पूछा बहनोई ये सफेदपोश लोग सभी को पीछे क्यो ठूंस रहे थे जबकि आगे कि सीटें खाली थी ।

बुधई– बाबू ये नेता लोग टोपी पहनाने में माहिर होते है, जनता का भला हो या ना । इनका होना ही चाहिये । चारो जीपों की अगली सीटो पर वही लोग कब्जा किये हुए है । बाबू ये लोग कही रहे चाहे जनाजा हो या मन्त्रालय अपना मतलब साधते है ।

चार सौ बीस

बनारस का रेलवे प्लेटफार्म नम्बर चार पुराने जूते,चप्पलों और सैण्डिलों से भरा भारी भरकम थैला बूढी महिला रखकर उसी पर बैठ गयी । लाख छिपाने के बाद भी चोरी के जूते चप्पल थैले से छांक छांक कर जैसे बचाओ बचाओ चिल्ला रहे थे । नरायन अपना और अपने परिवार के जूते चप्पल बिछाई चद्दर के नीचे रख लिया । बूढी महिला भी समझ गयी वह थैला लेकर खड़ी हो गयी । कुछ देर सोच विचार कर बोली बाबूजी कौन सी ट्रेन से जा रहे है ।
नरायन–अम्मा कहां तक जाना है ।
बूढीऔरत–जमुनिया
नरायन–इंदौर पटना जमुनिया तो नही जाती ।
बूढीऔरत चलते हुए बोली बडे चार सौ बीस लोग हो गये है ।
नरायन अम्मा सुनो तो तनिक । इतने में वह गायब हो गयी ।
रूपमती–बरखा के पापा वह चाई थी । बच गये जूते चप्पल वरना नंगे पांव इंदौर तक जाना पड़ता ।
नरायन–हां बनारस के चाईं से बच तो गये पर चार सौ बीस कहकर चली गयी ।

मूरख

ज्ञानचन्द रिर्पोट बना रहा था । इंदौर से बडवाह की दूरी सामने बैठे बिपुल से पूछ बैठा । बिपुल अनसुना कर गयी तीन बार । चौथी बार पुनः ज्ञानचन्द बोला भाई बिपुला दूरी तो बता सकता है ।चालक होने के नाते तुम्हारा आना जाना बराबर लगा रहता है । इतना तो मालूम ही होगा ।
बिपुल–आंख तरेरते हुए बोला मैं मूरखों की बात नही सुनता । तुम छोटे लोग पढ लिख क्या गये कि हम पर राज करने लगे ।

ज्ञानचन्द– मैं दूरी पूछ रहा हूं पेट्रोल / डीजल की खपत नही । मूरख तू नही पर शातिर जरूर है । फर्ज के साथ नाइन्साफी कर रहा हैं । हमें मूरख कह रहा है ।
इतना सुनते ही बिपुल के पांव जैसे उखड़ने लगे । वह गिड़गिडा उठा ।

श्अन्तिम यात्रा

बेटी और बूढी पत्नी बाबा केशव पर सिर पटक पटक कर विलाप कर रही थी ! विलाप सुनकर आसपास के लोग इक्टठा हो गये ! कुछ लोग रिश्तेदारो परिजनों के पता ढूढने लगे ताकि मौत का संदेश भेजा जा सके । कुछ लोग अन्तिम संस्कार के सामान के इंतजाम में लग गये। बाबा के घर के सामने बच्चों महिलाओं की भीड ज्यादा ही इक्टठा हो गयी थी पुरूष नाममात्र के थे इनमें दीनानाथ भी एक था । तैयारी होते होते शाम होने को आ गयी । अन्ततः अन्तिम यात्रा प्रारम्भ हो गयी । कुछ लोग कंधा दिये कुछ बगैर कंधा दिये ही चलते बने । अब भीड बिल्कुल छंट गयी थी । गिने चुने लोग ही बचे थे छुटटी का दिन होने के बाद भी । अन्तिम यात्रा में बचे हुए लोगो में से ज्यादातर बूढे थे जो खुद का बोझ ढोने में अस्मर्थ थे । शव भी भारी था ! कुछ दूर जाते ही सब हांफने लगे थे । हर आदमी एक दूसरे को आशा भरी निगाह से देखता ताकि कंधे का भार थेाडी देर के लिये उतर जाये !बडी मश्कत के बाद शव यात्रा अपने ठिकाने पर पहुंच सकी !

खैर बाबा पंचतत्व में विलीन हो गये लोग अपने अपने घरों को चलते बने !घर पहुंचते पहुंचते काफी रात हो गयी ! दूसरे दिन सुबह सुबह मि. तेगबहादुर से मुलाकात दीनानाथ से हुई दीनानाथ ने रफतार बाबा की मौत की दास्तान सुनाई ।
मि.तेगबहादुर तुमने कंधा तो नही दिया ना ।
मि.तेगबहादुर – सत्यानाश.... जो नही करना था वही कर दिया । तुम्हे तो शव छूना ही नही चाहिये था ।
दीनानाथ –क्यों । लाश सड़ने देता ।
मि.तेगबहादुर सड़ जाती पर तुमको हाथ नही लगाना था ।
दीनानाथ –क्यों .....

मि.तेगबहादुर क्योंकि तुम शूद्र हो बाबा हमारी ऊंची जाति के थे । मि. तेगबहादुर विषवाणी से आदमियत का खून कर हे राम कहते हुए चल पडे । दीनानाथ दिवगंत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करने लगा ।

आंसू

अरे रोशन क्यों गुमसुम हो कहते हुए देवेश जोर से हंस पडें ।
रोशन– क्यों गरीब का मजाक उड़ा रहे हो सर .....
देवेश– रोशन बुरा मान गये क्या ?
रोशन– भला बुरा क्यो मानूंगा ।
रोशन–कोई कीमती सामान खो गयी है क्या तुम्हारी ?
रोशन– हां । चालीस हजार की है ।
देवेश– क्या ?
रोशन– हां कर्ज लेकर खरीदी गयी मोटरसाइकिल की चाबी ...।
देवेश–दफतर में तो नही छूट गयी । गाड़ी लेकर देख आते ।
रोशन– साहब ने मना कर दिया । यहां जंगल में कोई साधन भी तो नही है ।
देवेश– साहेब खुद तो चौबीसो घण्टे लुत्फ उठाते हैं । छोटे कर्मचारी के जरूरी काम के लिये मना कर दिये ।
रोशन– छोडिये मान्यवर हम गरीब छोटे आदमी की कैसी चिन्ता । पिकनिक का लुत्फ उठाइये ।
देवेश–रोशन बाबू यह पिकनिक तो तुम्हे खून के आंसू दे गयी । किसी ने कहा हैं खून से बड़ा दर्द का रिश्ता होता हैं पर यहां तो बस स्वार्थ हो गया है । वाह रे साहेब वाह खून के आंसू दे गये एक छोटे कर्मचारी को....

खिलाफत

विश्व बन्धुत्व के जलसे से रंजन बाबू और पत्रकार मित्र अनुराग बाबू वापस लौट रहे थे अनुराग बाबू बोले रंजन बाबू सामने डां0 फजीहत का घर हैं उनसे मिलते चले । चिकित्सक हैं और आजकल लेखन में हाथ अजमाने रहे है !
रंजन बाबूः रंजन बाबू संहर्ष तैयार हो गये ।

दोनों मित्र डां0फजीहत के दरवाजे पर दस्तक दिये । कई बार अनुराग बाबू ने दरवाजा खटखटाया पर दरवाजा नही खुला । अन्दर से जरूर उठापटक की आवाज आ रही थी । अनुराग बाबू का कान जासूसी पर उतारू था । काफी देर के बाद दरवाजा खुला ।
डां0फजीहत बोले अरे पत्रकार साहेब आप ।
अनुराग बाबू– हां मैं और ये हैं मेरे लेखक मित्र रंजन बाबू ।
डां0फजीहत चाय पानी के साथ कुछ रचनायें भी लाकर रख दिये अखबार में छपवाने की ललक में अनुराग बाबू को थमाते हुए बोले अनुराग बाबू अब तो आपका रूतबा बढ गया हैं । असिसटेण्ट,शहजानन्द मिल गया है । सम्मल कर रहना अनुसूचित जाति का है । छाती पर चढकर काम लेना और भलमनस्त नही दिखाना । अछूत हैं दूरी बना कर रखना। दूरी नही कायम रखे तो सिर पर चढ जायेगा । सुना है किसी बडे नेता का आदमी हैं । मेरी बात नही भूलना !
अनुराग बाबूः मैं तो समानता का समर्थक हूं । आप खिलाफत कर रहे हैं जातिवाद को बढावा दे रहे हैं ।
डां0फजीहत– आपको सावधान करना मेरा फर्ज था । बाकी आपकी मर्जी ।
अनुराग बाबू– आपकी नसीहत याद रहेगी डां0फजीहत । रंजन बाबू की रचनाये तो आपने पढा हो होगा ।रंजन बाबू अच्छे साहित्यकार हैं देश समाज के हितार्थ खूब लिख रहे हैं । सामाजिक समानता इनके लेखन का मुख्य विषय है । अनुराग बाबू चलते चलते बोले डां.फजीहत देश और समाज को बांटने पर तुले हुए हैं ।
रंजन बाबूं–डां.फजीहत भले ही खिलाफत करें पर आप तो नैतिक दायित्व पर खरे है।

डिलवरी ब्वाय

दस्तक करो,मुझे देर हो रही हैं कोरियर डिलवरी ब्वाय बोला
दीपांश बाबूः –छः बजे डाक लेकर आ रहे हो उपर से धौस जमा रहे हो ।
डिलीवरी ब्वाय– संदीप नाम हैं मेरा । ऐसे ही डाक डिलीवर करता हूं । डाक ले रहे हो या वापस ले जाऊ अभी । तुमको तो बाद में देख लूंगा । एक फोन करने भर की जरूरत है।

दीपांशबाबू– मतलब .....
डिलीवरी ब्वाय– हाथ पैर तोडने के लिये ।
दीपांश बाबूः अच्छा तो तुम हाथ पैर तोडने आये हो । दादागीरी, उठाईगीरी का काम करते हो !
डिलीवरी ब्वाय– मैसर्स बन्दूक घर का विजिटिंग कार्ड लहराते हुए बोला देखे लो ये कार्ड आंख खोलकर इस पर मालिक का नाम टेलाफोन नम्बर और पता सब छपा है ।
दीपांश बाबू– अरे इस कार्ड पर तो तरह तरह के बन्दूक छपे हैं ।
डिलवरी ब्वायः हां । यही है हमारी औकात ।
दीपांश बाबू के सामने बैठै जितेन्द्र बोला साहब डाक लो। बदमाश भागे यहां से ।
डिलीवरी ब्वाय– समझ में बात आ गयी । विजिटिंग कार्ड दीपांश बाबू के हाथ से खींचा और बन्दूक की गोली की भांति बाहर निकल गया ।
डिलीवरी ब्वाय की दादागीरी को देखकर दीपांश बाबू के पास अशोक बाबू बोले – अरे बाप रे यह डिलीवरी ब्वाय हैं या कोई खूनी.....

स्टेटस

सुधा जब से अपनी आंख खुली है तब से कचरा ही छान रही हूं । अपनी जिन्दगी कचरे के ढेर पर बितेगी ।
लीला– गरीबो की जिन्दगी तो रो रोकर कटती कटती है बहन ! फिक्र ना कर कभी कभी तकदीर के चमत्कार से गरीबों के भी स्टेटस बदल जाते हैं
सुधा– स्टेटस क्या होता है ।
लीला– कुछ अच्छा ही होता होगा रे ।अपना आढती कबाडी भी तो बार बार यही बोलता है ।
सुधा – मतलब धन दौलत रूतबा या चहुंमुखी तरक्की होगी ।
लीला– हां ऐसा ही कुछ ।
सुधा –देख वो सामने कार आ रही है ।
लीला– कारक्यो देख रही है कचरे का ढेर तो सामने है । म्युनिसिपल पार्टी की गाडी अभी नही आयी है ऐसा लगता है ।
सुधा– कार तो रूक रही है कचरे के ढेर के पास ।
लीला– कचरा के ढेर से क्या ढूढेगा ए कार वाला .....

सुधा–ऐसी कार में चलने वाले किस्मत लिखते हैं ।
लीलाः–ऐसा कैसे कह रही है ।
सुधा – कचरा बिनते हैं तो क्या हम इंसान नही है ।
लीला–अरे बाबा हमने कहां मना किया । तू तो बड़ी बुध्दिमान हैं । किसी मालदार से ब्याह कर अपना स्टेटस बढा ले ।
सुधा– देख सपने ना दिखा । खैर छोड़ अपना स्टेटस बढे या ना बढे पर देख वो झाड़ू पोछा वाली बाई का तो बढ गया है ।
लीला– अरे वाह सच क्या स्टेटस है बाई का कार से कचरा फेंकने आयी है ।
सुधा –देख रही हो नम्बर प्लेट के उपर लाल पट्टी का निशान । इसका मतलब है किसी बडे साहब की सरकारी कार है ।
लीला – अपने स्टेटस का क्या होगा सुधा.....

तीर्थ

आण्टी आण्टी की पुकार सुनकर श्रीमति तपस्विनी बोली बेटा रंजू देखो कोई बुला रहा है क्या ।
रंजू–जी मम्मी देखता हूं कहकर दरवाजा खोलते हुए बोला मम्मी संजना दीदी हैं ।
संजना– कीचन की ओर बढती हुई बोली आण्टी खाना बना रही है क्या ?
तपस्विनी– हां बीटिया ।
संजनाः आण्टी,मम्मी आपके पास यह पूछने के लिये भेजीं है कि कल मंदिर तो चलोगी ना ।
तपस्विनीः बीटिया जाना तो था पर ।
संजना– पर क्या आण्टी ।
तपस्विनी–बीटिया बच्चों को स्कूल जाना है । टिफिन कैसे तैयार होगा । तुम्हारे अंकल को डयूटी भी तो जाना हैं । सभी भूखे रह जायेगे । सुबह पांच बजे मदिर जाने को तुम्हारी मम्मी कह रही थी ।
संजना– हां आण्टी पांच बजे तो घर से निकलना ही होगा बस अडडे तक तो पैदल चलना होगा । सबेरे सबेरे तो यहां से कोई साधन भी तो नही मिलता है ।

संजना और मिसेज तपस्विनी की बातचीत सुनकर अनु,रंजु और शनू बोले मम्मी चले जाओ मंदिर एक दिन की तो बात है।
बच्चों के आग्रह से आनन्द विभोर होकर तपस्विनी बोली बच्चों घर भी तो मंदिर है और इस मंदिर में रहने वाला हर प्राणी परमात्मा का अंश है । मैं इसी मंदिर में ईश्वर की अराधना कर लूंगी । इतने में मि0 नरायन बाबू आ गये और कोने में सोफे पर बैठ गये किसी को उनके आने का भान ही नही हुआ । मिसेज तपस्विनी की आस्था को देखकर नारी जाति को मन ही मन नमन करने लगे । चिन्तन की मुद्रा में कहने लगे एक ओर नारी खुद का त्याग कर रही है घर को मंदिर और उस घर में बसने वालों को परमात्मा का अंश मानकर आस्था प्रगट कर रही हैं वही दूसरी ओर वही नारी शोषण का शिकार हो रही है । इतना ही नही जन्म लेने से पहले मार भी दिया जा रहा है।ऐसा अनर्थ क्यों ..... संजना बोली आण्टी में चलती हूं लो अंकल भी आ गये ।
मिसेज तपस्विनी बोली कब आ गये रंजू के पापा पता ही नही चला ।
मि0नरायन –भागवान मैं तो संजना के पीछे ही आया हूं । तुम महायज्ञ में लगी थी में मौन प्रार्थनारत था । चली जाना ।
मिसेज तपस्विनी– घर भी तो मंदिर है । मेरे जाने से परिवार और बच्चों को भूखे रहना पड सकता है । क्या यह पुण्य होगा । एक गृहस्थ नारी के लिये घर परिवार के प्रति आस्था ही तीर्थ हैं ।
मि0नरायन–इसीलिये तो नारी पूजनीय हैं ।तभी तो कहा जाता है..... यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते तत्र रमन्ते देवता।

कलेण्डर

खुश्बू–पापा क्या खोज रहे हो बहुत देर से ।
दीपक –बेटी कलेण्डर । कल तो यही था ।
खुश्बू– पापा क्या करोगे ।
दीपक– दिन तारीख देखना था ।
खुश्बू – आज तो शुक्रवार है और एक तारीख है ।
खुश्बू– पापा एक टेबल कलेण्डर चाहिये मेरी बेस्ट फ्रेण्ड के लिये ।
दीपक– बेटभ जो डायरी कलेण्डर मिले थे घर ही तो लाया था ।

खुश्बूः पापा पांच सब आपके ही दोस्त लोग ले गये । एक कलेण्डर बचा है वह भी भइया अपने कब्जे में कर रखा है । कलेण्डर पर छपे सब्जियों के चित्र बहुत अच्छे हैं। वही कलेण्डर ढूढ रहे थे ना ।
दीपकः बेटी हम पददलित है । हमें कैसे मिलेगा ?
खुश्बू– अपने बांस से ले लेना ना । आपको ही नही मिलता है बाकी लोग तो जी खोलकर बांटते हैं ।
दीपक– बीटिया मुझे भीखारी ना बनाओं । नही मिलेगा । मैं जानता हूं ।
खुश्बू– सांरी पापा .....
दीपक– बीटिया अपनी सहेली को भईया वाला कलेण्डर दे दो !
खुश्बू – नही पापा ! मैं सहेली को सारी कह दूंगी।
दीपकः बीटिया मेरी मजबूरी को समझो ।
खुश्बू– समझ गयी पापा । आप पर गर्व हैं पापा । आप प्रतिष्ठित उच्चशिक्षित होकर भी पददलित हैं इसका मलाल हैं ।
दीपक– बेटी मलाल ना करो । तुम लोग ऊचे पदो पर सुशोभित हो यही मेरी हार्दिक इच्छा हैं । बेटी भइया वाला कलेण्डर गिफट पैक करके दे दो । मैं भइया को समझा लूंगा ।
खुश्बू– नही पापा ...
दीपकः बेटी अपनी बेस्ट फ्रेण्ड की इच्छा का सम्मान करो । दोस्ती के लिय मान जाओ मेरी बात .....
खुश्बू– आई ऐम प्राउड आफ यू पापा ।रीयली यू आर ग्रेट .....

जलसैनिक

सुयश–दादाजी बरसात कम क्यो होती जा रही है,आप जानते हैं ।
बदरी–बेटा आप बता दो तो और अच्छी बात होगी ।
सुयश–दादाजी आप बताते हो कि पहले अपने देश में जंगल बहुत था । जंगल में शेर हाथी और अन्य पशु पक्षी रहते थे ।
बदरी–जंगल भी था जंगली जीव भी। हां अब सब कुछ तस्वीर में दिखता है ।बरसात कम क्यों हो रही है इसका कारण बताओ बेटा ।
सुयश–जंगल नही होगा तो बरसात कैसे होगी ।
बदरी–जंगल और पेड. पौधों पर बरसात का होना निर्भर है ।
सुयश–हां दादाजी खूब समझे । धरती को हरा भरा रखना है तो पेड़ पौधें को बच्चों की तरह पोसना होगा आज के आदमी को।

बदरी–शाबास नन्हा जलसैनिक । तुम जल सैनिकों के हाथ में ही धरती सुरक्षित है ।

कश्मकश

अरे भूषण कहा मर गया बडे साहेब दफतर सिर पर लेते हुए चिलाये जा रहे थे ।

साहेब की आवाज सुनकर चपरासी दौ़डा दौ़डा गया और बोला सर... भूपण बाबू डांक्टर के पास गया हैं ।

साहेबः कौन से डांक्टर के पास गया हैं । कामचोर बहाना बनाकर कहीं गया होागा ।आसपास के सभी डांक्टरों की क्लीनिक देख आओ कहीं मिल जाये तेा तुरन्त लेकर आओ ।

चपरासी गया पर भूषण बाबू नही मिले वापस आ गया ।

थोडी ही देर में भूषण बाबू भी आ गये । स्कूटर ख़डा भी नही कर पाये कि बडे साहेब जोर जोर से चिल्लाने लगे जैसे गाली दे रहे हो । भूषण बाबू मेडिकल पेपर टेबल पर रखकर साहेब के सामने हाजिर हुए । बडे साहेब गुस्से मे तमतमाये हुये थे!।बडी बदसलूकी से बोले क्यों रे भूषण तुमको कल बुलाया था क्यों नही आया छुट्टी मना रहा था । बडा साहब बन गया है।बडे साहब कागज का पुलिन्दा भूषण के मुंह पर फेंकते हुए बोले ले जा जल्दी टाइप कर । भूषण बाबू बडे साहेब के चैम्बर से आंख मसलते हुए बाहर निकले और टाइप करने में जुट गये जबकि बाकी लोग पहुंचे भी न थे । भूषण बाबू मेडिकल पेपरों को उडता हुआ देखकर उसे उठाने को लपके तब तक बडे साहेब सिर पर सवार हो गये । भूषण बाबू के मेडिकल पेपर दफतर में इधर उधर उ़डते रहे और भूषण बाबू गम्भीर बीमारी के बोझ तले दबे काम में जुटे रहे और बडे साहेब भूपण बाबू की छाती पर चढे रहे । छोटे कर्मचारियों को प्रताडित करने के लिये बडे साहेब कुख्यात थे । वे श्रेष्ठता की बयार से ब़डे अधिकारी का पद हथिया कर अपने छोटे पद को भूल चुके थे ।

भूषण साहब की बदसलूकी और बीमारी की चिन्ता के कशमकश में कराहता हुआ आंसू से कागज संवार रहा था । कमरे में बिखरे भूषण बाबू के मेडिकल पेपर,ई.सी.जी.डायबटीज,थायराइड, हिमोग्लोबीन एस.जी.पी. टी. एस.ओ.पीटी. एवं अन्य रिपोर्ट गम्भीर बीमारी की चुगली कर रहे थे पर साहेब का दिल नही पसीजा ।

महंगाई

शान्ति–बाप रे गेहूं का भाव तो आसमान छू रहा है ।
प्रकाश–मिल रहा है क्या कम है ?
शान्ति–आप भी कैसी बाते कर रहे है । ऐसी महंगाई रहेगी तो देश की अरब से अधिक जनसंख्या खायेगी की क्या ?
प्रकाश–यही हाल रहा तो खाने पीने की चीजें पुड़िया में मिलेगी रूपया बोरों में लगेगे ।
शान्ति– आप तो और आग लगा रहे हो । आप से बहस मैं नही करने के मूड में हूं ।
प्रकाश–बहस की बात है ।खेती की जमीन पर कल कारखाने,मकान दुकान तीव्रगति से बनते जा रहे है । अनाज आसमान से तो नहीं गिरेगा । धरती आसमान,जल और वायु सब प्रदूषण के शिकार है ।
शान्ति–अच्छा तो आप कहना चाह रहे है कि कल कारखाने,मकान दुकान ये सब अनुपजाऊं जमीन और पहाड़ो पर बने । उपजाऊं जमीन पर सिफ़ खेती हो ।जनसंख्या पर नियन्त्रण हो ।
प्रकाश–हां इसी में आदमी की भलाई है ।ऐसा हो गया तो महंगाई पर लगाम तो लग ही जायेगी आदमी का जीवन भी सुखमय हो जायेगा । लेकिन.....
शान्ति–लेकिन क्या ?
प्रकाश–जिम्मेदार लोग अपने दायित्वों का पालन ईमादारीपूर्वक करें तब ना ।

बंटवारा

जीजाजी गजाधर के लिये पक्का मकान बनवा दो ....नरेश की बात सुनकर गजाधर बोले क्या ।
नरेश– ठीक सुने हो जगाधर के लिये भी बनवा दो ।
जगाधर– पुराना बडा मकान था ही एक नया बडा पक्का मकान बनवा ही दिया हूं क्या ये कम हैं ।
नरेश–ये तो गांव के मकान हैं । अपने शहर वाले बंगले जैसा बनवाओ अपने भाई जगाधर के लिये।
जगाधर– शहर जैसा मकान ।
नरेश– हां जीजाजी शहर जैसा बंगला ....

जगाधर–नरेश आपको मालूम है शहर के मकान पर कितना है । क्यों हम भाईयों में तुम बंटवारा कर रहे हो नरेश ।
नरेश–जीजाजी बंटवारा ही सही । जगाधर का भी तो हिस्सा बनता है की नहीं ।
गजाधर– कैसा हिस्सा आपने दिया है क्या ।
नरेश–शहर के बंगले में हिस्सा जगाधर को नही दोगे क्या ।
जगाधर– अपनों वारिसों के साथ अन्याय तो मैं नही करूंगा नरेश।
नरेश–बात को घुमाओ मत जीजाजी..... तुम अपने भाई की जिम्मेदारी उठा कर एहसान तो नही कर रहे हो ।
गजााधर हमने तो ऐसा नही कहा । मेरा भाई हैं । उसका दुख सुख मेरा दुख सुख है । मैं अपना फर्ज निभा रहा हूं । तुम रिश्ते में दरार क्यों रहे हो ।रिश्तेदार होकर हमारे परिवार के सुख से दुखी हो रहे हो ।
नरेश– बंटवारा होना ही हैं ।
गजाधर भगवान करे वह दिन कभी न आये । हमारा परिवार ऐसे ही हंसता खेलता रहे । नरेश शकुनि मामा की तरह मुस्कराते हुए अपने गांव की ओर चल पड़ा बंटवारे का जहर घोलकर ।

छल

कपटनरायन– काका एक और बंटवारा कर दो ...
देवदत– कैसा बंटवारा रे कपटुआ.....
कपटनरायन– तुम्हारी सम्पति का काका और कैसा बंटवारा ।
देवदत–दो बेटे हैं दोनो का बरोबर हिस्सा है । मैं तो चाहता हूं कि मेरे पोतें का बराबर हिस्सा हो क्योकि सत्यनरायन का ही तो सब बनाया हुआ हैं ।
कपटनरायन – सत्यनरायन तो शहर में बस गया है । वह तो गांव में रहेगा नही और नही उसके बच्चे । देवनरायन के बेटे को भी शहर में पढा कर बेकार कर रहा है ।
देवदतः तू मेरा घर क्यों तबाह करने पर जुटा हैं ।
कपटनरायन– अपने जीते जी दो हिस्से कर दो अपनी सम्पति का। एक हिस्सा मुझे दे दो एक देवनरायन को

देवदत– क्या अभी तक मेरे साथ कम छल किया था । छल से मेरी जमीन कमाई जमीन हथिया लिया । अभी भी तुम्हारी भूख नही मिटी ।तुम मेरे बेटों के हक के साथ छल कर रहा है ।
कपटनरायन– काका मेरी बात मान लो । जीवन भर तुम्हारे मांस मंदिरा का भार उठाऊंगा ।
देवदत–मेरे बेटे स्वर्ग का सुख दे रहे हैं । मुझे कोई दूसरी ख्वाहिश नहीं है । ठीक है मांस मंदिरा का शौकीन हूं तो क्या । तुम जैसे कपटी कपटनरायन के लिये अपने राम जैसे बेटों के साथ छल करूं कभी नहीं रे कपटुआ कभी नही.....

ब्याह

भइया गजानन्द बहुत खुश लग रहे हो ,कोई लाटरी तो नही लग गयी रमानन्द अपनी बात पूरी कर पाते उससे पहले ही गजानन्द उचक कर बोले हां भइया ऐसा ही कुछ ।
रमानन्द –मतलब ...
गजानन्द–ब्याह फाइनल हो गया ।
रमानन्द– किसका ।
गजानन्द– बीटिया का और किसका ।
रमानन्द– बढिया खबर सुनाये भइया ।
गजानन्द–भइया बीटिया के ब्याह की चिन्ता में तो बूढा हुए जा रहा था । भगदौड सफल हो गयी । ब्याह में विलम्ब तो हुआ पर घर वर मनमाफिक मिल गया है ।
रमानन्द–लडका क्या करता है ?
गजानन्द–सरकारी नौकरी में ऊंचे पद पर हैं । उपरी आमदनी की भी अच्छी गुंजाइश हैं ।इकलौता लडका हैं । मां बाप दोनो नौकरी में हैं ।सर्वसम्पन्न परिवार हैं ।
रमानन्द– दहेज भी बहुत देना हैं । लडका अकेला सन्तान हैं अपनी मां बाप का । पूरी सम्पति की मालकिन बीटिया होगी ।
गजानन्दः हां भाई हां !
रमानन्द–भइया गजानन्द मुझे तों पसन्द नही हैं ऐसा रिश्ता । यहां बीटिया के सुख चैन की उम्मीद तो नही लगती ।
गजानन्द–क्या कह रहे हो रमानन्द ।

रमानन्द–जिस घर में लडकी नही उस घर में बीटिया का ब्याह कर रहे हो।वह भी दहेज देकर ।
गजानन्द– क्या वहां बीटिया का ब्याह नही करना चाहिए ?
रमानन्द– खुद की बीटिया की हत्या पैदा होने से पहले करने वाले दूसरे की बीटिया के साथ कैसा सलूक करेगे । मुझे यहां भी ऐसा ही लगता है । जिस मां बाप ने बेटी का जन्म नही होने दिया । वे दूसरे की बेटी की क्या कद्र करेंगे । गजानन्द बीटिया का सुख चैन चाहते हो तो बिल्कुल नही करना ।

पैसा

अरे वो भाभी .....अरे वो भाभी..... न कोई जान न पहचान पर वो भाभी. वो भाभी.....
कहकरनन्दिनी जोर जोर से चिल्लाये जा रही थी । बार बार चिल्लाने के बाद वह औरत नन्दिनी की आवाज नही सुनी तो वह उसके पीछे दौड़ पड़ी ! कुछ दूर दौडकर हांफते हुए उस औरत का पल्लू खींचकर बोली अरे भाभी जी आपका पैसा गिर गया है । महिला पैसा पर्स में रखते हुए नन्दिनी को लख लख दुआयें दी और अपने गन्तव्य का ओर बढने लगी ।
नन्दिनी को भाव विभोर देखकर कामिनी नन्दिनी की अच्छी पढी लिखी पड़ोसन रूप यौवन भी भगवान ने खूब बख्शा था ,खूब मार्डन औरत भी थी नन्दिनी से बोली क्या बेवकूफी कर दी भाभी चिल्लाने की क्या जरूरत थी । अरे नोट को पैर से दबा लेना था । धीरे से उठा लेती । एक अनजान औरत को चिल्ला चिल्ला कर बुला रही थी । लोग क्या सोचे होगे ।
नन्दिनी–क्या कह रही हो कामिनी तुम जैसे लोगो की ऐसी सोच । बेचारी के मेहनत की गाढी कमाई थी । उसका पति उस रूपयें के लिये कितना पसीना बहाया होगा । क्या हम इतने गिर गये हैं किसी के गिरे हुए पैसे को उठाने के लिए गिर जाये । अरे हम इंसान हैं हमें अपना दायित्व नही भूलना चाहिये कामिनी बहन । कामिनी को जैसे सांप सूघ गया ।

ट्यूशन

अरे रेखा के पापा बीटिया की ट्यूशन फीस देना हैं पैसे दे देना डयूटी जाने से पहले बनीता पति सोहन से बोली ।
सोहन कितना ट्यूशन फीस का देना है ।
बनीता– तीन सौ रूपया हर माह तो दे रहे है फिर भी पूछ रहे हो ।
सोहन– तीन सौर रूपया देते हुए बोला ए लो दे देना । रिश्तेदारी की बात हैं जितना मांगेगी मैडमजी को देना ही होगा । समय से पहले फीस दे दिया करना । पैसा रिश्ते की दीवार न बन जाये
बनीता ठीक हैं । ध्यान रखूंगी पर वो वैसी औरत नही हैं । रिश्ता निभने उसे अच्छी तरह आता है । सब समझती हैं ।
कई महीनों के बाद एक दिन सोहन ट्यूशन वाली मैडम के घर के सामने से गुजर रहा था सोचा मैडम से बीटिया की पढाई की जानकारी भी लेते चलूं । मैडम से सोहन बीटिया की पढाई के बारे में पूछताछ किया और विदा लेते समय मैडम को तीन सौ रूपये देते हुए बोला बहन जी आपकी ट्यूशन फीस है रखिये । महीना भी तो दो चार दिन ही बचा है !
ट्यूशन वाली मैडम भाई साहब आपकी बीटिया हमारी भी बीटिया हैं । मैं आपसे पैसे लूंगी भला फिर कैसे रिश्तेदार हम रहें अरे हमारा बिजनेस तो ट्यूशन नही हैं । मुझे भी तनख्वाह मिलती है अच्छी खासी । बीटिया की प्ढाई के बहाने मुझे भी कुछ सीखने को मिल रहा है । आप पैसे से रिश्ते को कम क्यों आंक रहे है भाई साहब।
सोहन –क्या बिना ट्यूशन फीस के पढा रही हैं । अब तक मेरी पत्नी जो कर रही थी वह क्या था ।
ट्यूशन वाली मैडम– ठगी ।

जयकार

बाकें अपने बडे भाई साकें की मृतदेह और उसके परिवार को लेकर मालवांचल से अपनी जन्मभूमि पंजाब गया जहां उसका दाह संस्कार एवं अन्य कर्मकाण्डों के साथ तेरहवीं की रस्म भी पूरी करवाया । तेरहवी बितते ही सांके की घरवाली उखड़े पांव साान्नों और तीनो लडकियों जो दस महीनों के अन्तराल पर पैदा हुई थी को घर से बाहर निकाल फेंकने का षणयन्त्र उसकी सास रचने लगी । सान्नों इन लडकियों को लेकर जाये ता जाये कहां। सास के उत्पीड़न से दुखी होकर सान्नों गांव की

पंचायत का दरवाजा खटखटयी । सान्नों की सास एक न सुनने को तैयार थी ।वह बोली जब तक बेटा जिन्दा था ये सान्नों कमाई हडपती रही । साकें की मौत का जिम्मेदार सान्नो है मैं घर से निकाल कर रहूंगी ! बेटा तो मर ही गया हम इनका क्या करेगे । अब हमारा न तो बहू से और ही न लडकियों से रहेगा कोई रिश्ता । सारे रिश्ते नाते खत्म हो गये । कही जायें डूब कर मरे लडकियों को लेकर ।
यह सुनकर बांके अपनी मां को धिक्कारते हुए भागकर घर में गया । चादर लेकर आया और !अपनी उम्र से पन्द्रह साल बडी, भाभी को ओढा दिया । अब सान्नो शाकें की पत्नी बन चुकी थी । गांव के लोग शाबास बाकें शाबास बांके के गगन भेदी जयकारे के साथ सर आंखो पर बिठा लिये ।

हादशा

मई माह की भयावह गर्मी । इंदौर से खण्डवा की बस यात्रा क्या दुखदायी साबित हो रही थी । खैर जैसे तैसे खण्डवा रेलवे स्टेशन पहुंचे । दो घण्टे और निमाड़ की धूप में सींकने के बाद मुम्बई से पटना जाने वाली ट्रेन आयी । जिसमें चार सीटें दो माह पहले से आरक्षित थी इसके बाद भी ट्रेन के डिब्बे में खडा होने नही दिया जा रहा था दादा किस्म के यात्रियों द्वारा । कुछ लोग बडी बदतमीजी से पेश आ रहे थे । मेरी सीटों पर अबैध कब्जा जमाये हुए थे मुझे ट्रेन से बाहर फेंकने की फिराक में थे । सुरक्षा जवान भी मेरी बात सुनने को तैयार टीटी लाख खोजने के बाद भी नही मिला । दोनो बच्चे जोर जोर से रोये जा रहे थे । पत्नी का पांव भारी होने की वजह से उसे खड़ा होने में भी तकलीफ हो रही थी पर वे अमानुष किस्म के यात्रियों का दिल नही पसीजा । बडी मुश्किल से एक सीट खाली करवा पाया । बदमिजाज मुसाफिर हर दस मिनट में सुर्ती बनाते मुंह में डालते वही सीट के नीचे थूक देते फिर बीडी सुलगा लेते । रात में पत्नी के कान का बाला भी चोरी चला गया । यातनामय यात्रा के बाद बनारस आया तब जाकर जान में जान आयी । ट्रेन से उतरते ही ऐसा लगा जैसे दो दिन की ट्रेन यात्रा नही परिवार सहित दो साल के सश्रम कारावास की सजा से मुक्त हुए हो । ट्रेन यात्रा नही भयावह हादशा था कहते हुए देवीप्रसाद की आंखें भर

आयी । ट्रेन को हरी झण्डी मिल गयी देवीप्रसाद की सीट पर कब्जा जमाये बदमिजाज यात्री खिखिलाकर हंस पड़ें ।

जहर

जगत द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में दाखिल हुआ । सीट पर बैठा भी नहीं कि पास वाली सीट पर साढे पांच फीट लम्बे गोरे चिटठे हृष्ट पष्ट सफेद बालों वाले अधेड़ व्यक्ति पूछ बैठे कहां जाओगे बेटा ।

जगत –बाबा इंदौर ।

अधेड व्यक्ति –मैं तो बम्बई जा रहा हूं ।

जगत –घूमने जा रहे है बाबा ।

अधेड व्यक्ति– हां । जीवन का सारा सुख भोग लिया हूं । अब तीरथ वरत ही बचा है ।

अधेड व्यक्ति–बेटा गांव में रहता अपनी जमीदारी सम्भालता । नौकरी करने बाबू लोगो का काम नही है बेटा ।

जगत– बाबा भूमिहीन हूं ।

अधेड व्यक्ति –कौन हो तुम ।

जगत –बाबा आदमी हूं और कौन हूं ।

अधेड व्यक्ति आदमी तो सभी हैं । तुम्हारी जाति और धर्म क्या है ।

जगत भगवान ने तो आदमी ही बनाया हैं पर जाति धर्म के ठेकेदारो ने शूद्र बना दिया है ।

अधेड व्यक्ति –अच्छा तो अछूत हो । कहते हुए उठे सुराही से पानी निकाले खुद के उपर छिडके सीट पर छिडके और बैठते हुए बोले क्या पहनावा हो गया है उुंच नीच का पता ही नही चलता । बगुले हंस बन गये है ।

अधेड व्यक्ति की बात सुनकर जगत के पास बैठे व्यक्ति से रहा नही गया बोला बाबा विज्ञान का युग है । छूआछूत उुंच नीच का भेदभाव कब का खूटीं पर टंग चुका हैं । आदमयित को बदनाम न करो आदमी को कर्म और योग्यता से अभिनन्दित करो । बाबा इस युग जहर की खेती नही फलफूल सकेगी ।

अधेड़ व्यक्ति–क्या..... ?

फर्ज

अरे वाह भाई ओम सुना है प्रमोशन भी हो गया पर यार पार्टी बाकी रह गयी । खैर छोड पाटी साटी तो कभी भी हो जायेगी । ए तो बता तनख्वाह अब अच्छी हुई की नही ।
ओम – हां भाई सेवकदास तनख्वाह अच्छी हो गयी है पर महंगाई की मार तो छाती पर है ।
सेवकदास– हां ओम भइया महंगाई तो आसमान छूने लगी हैं । उपर से मिलावट,रिश्वतखोरी,झूठ फरेब सब तो बढता ही जा रहा हैं । बेचारे मीडियम क्लास के आदमी के चारो ओर मुंह बाये खड़ी है । सामाजिक आर्थिक राजनैतिक एवं पर्यावरण प्रदूपण की समस्यायें दिन पर दिन बढती जा रही हैं । इनके निदान के लिये तुम जैसे हर समझदार एवं सम्पन्न आदमी को कुछ ना कुछ तो करना चाहिये !
ओम – हर आदमी को अपना फर्ज निभाना पडेगा । जंगल जीव एवं पर्यावरण की सुरक्षा के लिये आगे आना होगा ।
सेवकदासः ओम आपकी बातो से तो लग रहा है कि आप अपने फर्ज पर खरे उतर रहे हैं । कोई ना कोई त्याग जरूर कर रहे हैं ।
ओम– प्रचार पाने के लिये कुछ भी नही कर रहा हूं । देश का नागरिक होने के नाते रोगियों को ज्वारे का रस का इन्तजाम, पेड पौधे लगाकर एवं आर्थिक सहयोग प्रदान कर पर्यावरण को सुरक्षित रखने का प्रयास साथ ही गोसेवा हेतु कुछ दान कर लेता हूं बस..
सेवकदास– ओम भईया देश, समाज और पर्यावरण को तुम्हारे जैसे लोगेा की जरूरत हैं ।

अनुभव

सुरेश–लोग कहते है कि पद और दौलत सबसे बड़ा दुनिया में जबकि ऐसा है नही ।
रमेश– पद और दौलत कैसे बड़ा हो गया ? कद की ऊंचाई तो अनन्त है ।
सुरेश– तुम्हारी बात में दम तो है परन्तु दबदबा तो पद और दौलत का है ।
रमेश–पद और दौलत से चाहत की भूख बढती है । आदमी लाश पर चढने से परहेज नही करता । कद सद्भावना से अभिवृध्दि होती है। पद

का अभिमान और अधिक दौलत की चाहत आदमी से आदमियत छिन लेती है ।

सुरेश–ठीक कह रहे हो भइया जर्नादन की तरक्की की राह में अभिमानियों ने खाईं खोद दिया था । बेचारा जर्नादन खाई तो नही पाट पाया रोटी कपड़ा मकान और सम्मान के लिय संघर्ष करता रहा पर उसने अपनी कलम के बदौलत ऊंचा कद तो हासिल ही कर लिया । वही दम्भी लोग जर्नादन के ऊंचे कद को नमन करते है ।

रमेश–कद में सनतोष है पद और दौलत में असीमित भूख .....

सुरेश–पद और दौलत अस्थायी है । कद स्थायी है और दुनिया भर की दौलत से श्रेष्ठ है । ऊंचा कद आदमी को भगवान के समतुल्य बना देता है खरा अनुभव तो यही कहता है।

मदद

फुलकुमारी के बच्चेदानी कैंसर के आपरेशन के घाव अभी हरे थे ।इसी बीच उसके पिताजी आ गये । मुसीबत के समय पिताजी को पाकर वह बहुत हुई । पिता घुम्मन बेटी के सिर पर हाथ फरेते हु बोले बेटी नेमीचन्द कुछ रूपया दिया था क्या ?

फुलकुमारी– दिये तो थे तीन हजार । वह वह कर्ज दिया था क्या रमायन भईया ने ।

घुम्मन– हां बीटिया कहते हुए सिर नीचे कर लिये ।

फुलकुमारी–कराहते हुए उठी और दूसरे कमरे में गयी तीन हजार रूपये पिता के हाथ पर रखते हुए बोली गिन लो पिताजी भइया को दे देना और कह देना सूद के कितने रूपये हुए बता देगे ।वह भी दे दूंगी । भइया के खैरात की जरूरत नही है मेरे जेठ जेठानी सब देख रहे है । आपरेशन के रूपये का भी बन्दोबस्त कर दिये थे पर शहर से पैसा आने में डाक की वजह से कुछ देरी हो गयी। भइया के दिये तीन हजार में मेरा आपरेशन हो सकता था क्या ? भइया को मदद के लिये मेरी ओर से धन्यवाद कह देना पिताजी ।

घुम्मन–बीटिया मैं शर्मिन्दा हूं । तुम्हारी मदद नही कर सका । बेटवा किया भी वह भी कर्ज देकर ।सप्ताह बित नही मुझे तगादा के लिये भेज दिया ।बेटी मैं तो जीते जी मर गया भगवान तुम्हारी मदद करे कहते हुए बेटा रमायन के घर ऐसे गये कि फिर कभी लौटे ।

नेता

पापा अब मैं नहीं पढूंगा जितेन्द्र एक झटके में कह गया ।
बिपिन– क्यों नही पढोगे बेटा । मुझे तो तुमसे बहुत उम्मीदे है । पढ लिखकर बडा अफसर बन जाता तो मेरी मुराद पूरी हो जाती ।
जितेन्द्र–पापा पढाई बहुत महंगी हो गयी है । आप छोटी सी तनख्वाह में इतना बडा परिवार कैसे चलाते हो सोचकर डर जाता हूं । पापा आगे पढूंगा तो फीस कैसे भर पाओगे यह भी चिन्ता का विषय है ।पापा ना मरेगा सांप ना टूटेगी लाठी । पढाई पर होने वाला खर्चा भी बच जायेगा और आपकी मुराद भी पूरी हो जायेगी ।
बिपिन–ऐसी कोन सी जादू की झड़ी तुम्हारे हाथ लग गयी बेटा ।
जितेन्द्र–अभी तो नही लगी है पर लग जायेगी ।
बिपिन– वो कैसे ?
जितेन्द्र–पापा नेता बनने की सोच रहा हूं । अरे अपने देश के बडे मन्त्री कौन से बहुत पढे लिख है ।दसवी बारहवी पास फेल मन्त्री बन जाते है । बेचारे अच्छे पढे लिखे चपरासी तक की नौकरी नही पा रहे है ।बडी बडी डिग्रियों को घुन खा रहे है । पापा बडी बडी डिगियां होने के घूस भी देना होता है । वह भी तो अपने पास नही है । नेता बनने में कोई न बडी डिग्री की जरूरत पडती है ना घूस की । कमाई भी बहुत है । एक बार मन्त्री की कुर्सी हाथ लग गयी तो कई पीढियों का इन्तजाम हो जायेगा । जनता पागलों की तरह पीछे भागती है उपर से । लोग जयजयकार करते नही थकते । पापा नेता बन जाने दो।

।। मुट्ठी भर माटी ।।

सालों कैसर की वजह से मौत से लड़ रहे पडोसी लालानरायन आखिरकार आठ मई को हार गये । मै भी दफ्तर से छुट्टी मैय्यत में शामिल होने के लिये पहुंचा । लालानरायन के हित–मित्र इक्ट्ठा हो रहे थे । उनके रिश्तेदार गांव और शहर से मुट्ठी भर माटी देने के लिये चल पडे थे ।लाश को बरफ के हवाला कर दिया गया था ।औरते बच्चे रो रोकर थक चुके थे । सन्नाटा पसरा हुआ था रह रह कर मिसेज लाला के रोने की आवाज सन्नाटे को चीर रही थी । इसी बीच लालानरायन के बहुत पुराने और सुख के साथी की पत्नी छुपते छुपाते एक बालक को बालक को इशारे से बुलायी और बोली जा बेटा किसी बूढडे से पूछकर आ कि

लाश कब मुक्तिधम जायेगी और वे एक मकान की आड़ में दुबक गयीं ।

बालक दौड़कर गया एक बुजुर्ग व्यक्ति से पूछकर आया और जोर से बोला आण्टी कल सुबह ।

दूसरे दिन मृतक लालानरायन की देह अग्नि को समर्पित तो हो गयी पर न तो उनके कोई सुख के साथी दिखे जिनकी तारीफ करते लालानरायन नही थकते थे । हजारो मकान वाली कालोनी से गिनती के पांच लोग शामिल हुए । नरोत्तम की बात सुनकर पुरूषोत्तम के मुंह से निकल पडां वह रे मतलबी सुख के साथी एक मुट्ठी मांटी देने भर को ना हुए ।

कसम

रामू पेट में भूख और दिल मे अरमान पालकर पक्के इरादे के साथ शिक्षा हासिल किया था । रामू अधिक पढा लिखा होने के साथ ही काम भी ईमानदारी और पूरी निष्ठा के साथ करता था । उसे उम्मीद थी कि वह कठिन मेहनत और शिक्षा के बलबूते ऊंची उड़ान भर लेगा । लेकिन ऐसा नही होने दिया कमजोर का हक मारने वालों ने । एक दिन सुहाने मौसम का जश्न मन रहा था कई बोतलों की सीलें टूट चुकी थी कई मुर्गे उदरस्थ हो चुके थे । जाम का जश्न सिर पर चढकर बोल रहा था ।अफसर चिकनकुमार अफसरों के सुप्रीमों की गिलास में नई बोतल का दारू उड़ेलते हुए बोले सर रामू का पर नही कतरें तो बहुत आगे निकल जायेगा ।

सुप्रीमो–कभी नही .....उखड़े पावं रामू चौथे दर्जे का है चौथे दर्जे से आगे नही बढ पायेगा चिकनकुमार मैं कसम खाता हूं ।बस क्या इतने में मेजे थपथपा उठी ।

सहारा

दुखनन्दन बहुत महंगा जूता पहने हो । कोई लाटरी लग गयी क्या ?

दुखनन्दन –विनोदबाबू हमारी खुशी से कोई तकलीफ हुई क्या आपको ।

विनोद–तकलीफ क्यो होगी भला । महंगा जूता पहना है तो कह दिया पहले तो कपड़े भी अच्छे नही पहन पाते थे । देखो अब तो रोज रोज कपड़ें बदल कर आते हो कालरदार नेताओ सरीखे कोट पहनने लगे हो ।

दुखनन्दन–मेरी मेहनत रंग लायी है तो खा पहन रहा हूं ।

विनोद– कहना तो नही था पर बात चली है तो कह ही देता हूं । तुमसे बड़ा तो मैं हूं तनख्वाह और दूसरी सुविधायें भी मुझे ज्यादा है। तुम्हारा खर्चा बडा है ।तुम्हारी दवाई पर ज्यादा पैसा खर्च होता ।तुम इतना सब कुछ कैसे मैनेज कर लेते हो दुखनन्द ।

दुखनन्दन–विनोद बाबू मेरा जूता और पहनावा देखकर चक्कर आ गया । अभी तो आगे बहुत कुछ देखना बाकी है दिल मजबूत करके रखना । बीटिया नाम रोशन करने लगी है बेटे तो उम्मीदें है ही विनोदबाबू

विनोद–बीटिया सहारा बन रही है ।

दुखनन्दन–हां.....

सगुन

मानसिंह– लेखक साहब प्रणाम । नई किताब के दीदार कब होगें ?

लेखक–जल्दी होगे ।

मानसिंह–किताब तो छप गयी है । मैने तो ऐसा ही सुना है ।

लेखक–ठीक सुना है भइया । विमोचन होना बाकी है ।

मानसिंह–साहित्य समाज का आईना होता ही नहीं आईना दिखाता भी है । आपकी किताब से भी ऐसी ही उम्मीद है मुझे ।

लेखक–आपकी उम्मीद पर मेरी किताब खरी उतरे हमें भी ऐसी ही उम्मीद है ।

मानसिंह–महोदय जब विमोचन हो तो मुझ साहित्य–प्रेमी को जरूर याद करना ।

लेखक–आप जैसे पाठक तो हमारी दौलत है मानसिंह भाई ।

मानसिंह–महोदय ये 501 रूाप्या सगुन के तौर पर रखिये किताब विमोचन के बाद ले लूंगा कहते हुए मानसिंह चल पड़ा।

मानसिंह के साहित्य प्रेम को देखकर लेखक महोदय नतमस्तक हुए बिना नहीं रह पाये । लेखक के अपनत्व एंव स्नेह और मानसिंह के साहित्य प्रेम को देखकर मौजूद लोग बोल उठे आज भी साहित्य प्रेमियों की कमी नही हैं ।

गिरा हुआ आदमी

राजप्रसाद ड्राइवर की नौकरी करते थे । उनके लटके झटके जमीदारो जैसे थे ।उनकी पत्नी कलाबाई को उच्च जाति के लोगों को राखी का भाई बनाने का बड़ा शौक था । राजप्रसाद को आस–पड़ोस के लोग बाबू साहब

कहते थे। देवनाथ को राजप्रसाद के रूतबे से जलन होती थी । वे एक दिन लोगों की भीड़ से घिरे हुए राजप्रसाद को बुलाये ।
राजप्रसाद जमींदार के ठाटबाट में हाजिर हुए । उन्हे देखकर देवनाथ बाबू बोले राजप्रसाद बाबू से मिलिये । जमींदार खानदान से तालुक रखते है ।वे राजप्रसाद को बैठने का इशारा करते हुए बोले राजप्रसाद बाबू– आपके पिताजी लटकदेव जमींदार थे ।
राजप्रसाद–हां देवनाथ बाबू ।
देवनाथ–एकदम झूठ.....
राजप्रसाद–यादव टोला के पास ही तो हमारा पैतृक घर है ।
देवनाथ– एक और झूठ ।अरे सच बता तू कौन सी जाति का है ।
राजप्रसाद–जमींदार हूं । कोई शक है क्या ?
देवनाथ– हां । जमींदार तो तू हो नही सकता ?
राजप्रसाद–यादव हूं .....
देवनाथ–तू बहुत गिरा हुआ आदमी है ।छोटी जाति का होकर बड़ी जाति का ढोंग करता है । तुम्हारी जाति के तो सन्तशिरोमणि रविदास थे । डां0 अम्बेडकर साहब थे जिन्हे दुनिया पूज रही है और भी बहुत महान लोग है ।तुम्हे तो अपनी जाति पर स्वाभिमान होना चाहिये । जाति नही कर्म महान बनाता है आदमी को ।
राजप्रसाद–देवनाथ बाबू किसी से कहना नहीं ।
देवनाथ–अरे बाबू साहब अब कितना नीचे गिरोगे ? कहने को बाकी क्या रह गया है ?

बद्नजर

ब्रांच मैनेजर साहब के पद के अनुरूप नयी कुर्सी आयी गयी । पुरानी कुर्सी अच्छी एवं अच्छी दशा में थी ।ब्रांच मैनेजर साहब का प्यार सेक्रेटरी के प्रति उमड़ गया । वे सेक्रेटरी से बोले दयावन्त अब पुरानी कुर्सी का उपयोग तुम करो । तुम्हारे कार्य के अनुरूप मुविंगचेयर है ।साहब के आदेश का पालन दयावन्त ने किया पर यह बात दयावन्त से तनिक बड़े खुरापाती मैंनेजर मंगत को घाव कर गयी ।वे दफतर में आने वाले आगन्तुक से कहते ना थकते कि देखो एक टाइपिस्ट साहब की कुर्सी पर बैठा है मैंनेजर जैसे मै मैंनेजर होकर भी मुविंगचेयर से दूर हूं । बद्नजर मंगतसाहब की ऐसी बुरी नजर लगी

कि दयावन्त की रीढ़ का दर्द शुरू हो गया । दयावन्त को कुर्सी के परित्याग के लिये ब्रांचमैंनेजर साहब से अनुरोश करना पड़ा । दयावन्त के परित्याग से मंगत साहब को जैसे अपार खुशी मिल गयी ।

दगा

कुछ कहने से पहले राघव धड़ाम से गिर पड़े ।
माधव उठाकर बैठाये । दौडकर पानी लाये । गिलास राघ के मुंह में लगाते हुए बोली भइया बहुत गर्मी है बचकर रहा करों ।सूरज ढलने के बाद आ जाते।
राघव सम्भलकर बैठते हुए बोले बात गर्मी की नही है ।दोस्त के नाम पर ठगी की है ।
माधव–कहां कौन ठग गया ।
राघव–एक दोस्त...
माधव–दोस्त तो ठग नही हो सकता ।
राघव– बात तो ठीक कह रहे हो पर हमारे साथ जो ठगी हुई दोस्ती का मुखौटा लगाकर हुई है । दलीप भाई से विगत् साल जान पहचान हो गयी । यही जान पहचान दोस्ती बन गयी । इसी का फायदा उठाकर दलीप भाई मुझसे छोटी मोटी मदद लेते रहे मैं भी करता रहा । एक सुबह सुबह दलीप भाई का फोन आया कि मैं मुसीबत में हूं पांच हजार रूपये की मदद चाहिये । मैंने उनसे कह दिया पांच हजार का वादा तो नही कर सकता जितना हो जायेगा मैं लेकर हाजिर होता हूं ।
माधव– कितने रूपये दिये ।
राघव–हजार रूपये ।
माधव–अब क्या हुआ दलीप टोपी पहना गया।
राघव–हां भइया हमें ही नही और कई लोगो को दगा दे गया।

भूख

देवकरन नशे की हालत में ठूसते जा रहे थे जो कुछ खाना था दयावन्ती परस चुकी। देवकरन खाने के बाद थाली चाटने लगा तो दयावन्ती से नही रहा गया वह बोली और रोटी बना दूं क्या ?
देवकरन–नहीं रे तू ये बर्तन रख और सो जा..... लड़खड़ाते हुए देवकरन बोला और चारोखाना चित हो गया । कुछ देर के बाद कराहने

लगा । बेचारी दयावन्ती हथ पावं दबाने लगी । हाथ पांव दबाते ही खरटि मारने लगा ।जब दयावन्ती के हाथ थम जाता तो वह कराहने लगता । बेचारी दयान्ती रात भर देवकरन के सेवासुश्रुषा में लगी रही । भोर हुई नशा तनिक उतरी तो वह दयावन्ती को ऊंघती देखकर बोला राजू की मां रोटी खा ली ।

दयावन्ती–तुमने खा लिया ना....

देवकरन– मैने तो खा लिया ।

दयावन्ती–समझ्ाो मैने भी खा लिया ।

देवकरन–मतलब.....

दयावन्ती–औरत हूं ना बच गया तो खा लिया नही बचा तो नही खायी । औरत को भूख नही लगती ना....

इतना सुनते ही देवकरन की सारी नशा उतर गयी ।

बधाई

बधाई हो मोची भइया तुम तो बहुत उपर उठ गये ।

मोची–धन्यवाद महोदय आप कोई शब्दों के जादूगर लगते है ।

हां वही समझ लीजिये । मेरा नाम सेवकदास है ।

मोची–महोदय प्रसाद ग्रहण कीजिये ।

सेवकदास–मेरा सौभाग्य है कि महावीर जयन्ती के सुअवसर तर आपके हाथ से प्रसाद पा रहा हूं।

मोची–महोदय गरीब के पास सद्भावना की दौलत के सिवाय और कुछ तो होता नही । मौका आने पर पेट काट्कर दूसरों की मदद करने से भी गरीब पीछे नही हट्ता ।

सेवकदास–आपके सेवा भाव को नमन् करता हूं ।

मोची–महोदय मेहनत मजदूरी की कमाई से 101 जोड़ी चप्पले बूढी महिलाओं को बांटने का कार्यक्रम रखा हूं।

सेवकदास–भगवान आपकी कमाई में बरक्त बरसे। दूसरे आपसे सेवाभाव सीखे । महावीर जयन्ती की बहुत बहुत बधाईया मोची भइया कहते हुए सेवकदास गन्तव्य की ओर चल पड़ा । मोची भइया अपने नेक मकसद में जुट गया ।

लेपटाप

तालियों की गड़गड़ाहट से सभाकक्ष गूंज रहा था । विक्रय प्रतिनिधियों के मुखिया कई शुभ समाचार सुनाने के बाद वे सूचना क्रान्ति पर प्रतिनिाधियों का श्यान आर्कषित करते हुए बोले आज सूचना क्रान्ति का महत्व शहर गांव खेत खलिहान तक दिखायी पड़ने लगा है । इसका फायदा हमारी कम्पनी को भी हुआ है ।सूचनाक्रान्ति के महत्व को कम्पनी के आलाअफसरों ने बारीकी के साथ समझा है और आप लोगों को एक तोहफा शीघ्र देने की कार्रवाई शुरू कर दी है ।उम्मीद है इस तोहफे से आपका और आसान हो जायेगा।
तोहफे की बाद सुनक विक्रय प्रतिनिधियों के मन में गुदगुदी सी होने लगी । प्रतिनिधि प्ररसाद बाबू बोले साहब क्या तोहफा मिलने वाला है । साहब–लेपटाप .....
एक बार सभाकक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से नहा उठा ।इसी बीच प्रतिनिधि कन्हैया जी सभाकक्ष से बाहर निकल कर अपने आवास पर फोन लगा दिये । फोन पर वाइफ राधिका की आवाज सुनकर बोले राधे मैडम बधाई हो ।
राधिक–किस चीज की बधाई ।
कन्हैया–अरे भागवान लेपटाप कम्पनी की ओर से मिल रहा है । बेबी कहां है । राधिका बेबी को फोन थमाते हुए बोली लो बेबी पापा से बात कर लो ।
बेबी–पापा लेपटाप की बधाई ।
कन्हैया–बेबी आपको भी.....
बेबी–पापा लेपटाप का क्या करेंगें ।
कन्हैया–बेबी गेम खेलना और क्या ?

झांसा

साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रतिनिधि दोपहर के वक्त उपस्थित हुआ और गिड़गिड़ाते हुए बोला भाई साहब मेरी मदद कीजिये ।
मैने पूछा आप कौन है भाई ।
वह बोला मैं मनोहर हूं फला साप्ताहिक समाचार का प्रतिनिधि हूं । आपकी रचनायें मैं बराबर पढता रहता हूं कल्याणजी ।
कैसी मदद की दरकार है ।

मनोहर–कल्याणजी मेरा बेटा बीमार है । खून लेने आया था । सौ रूपये कम पड़ गये । पैथालोजी वाला उध्दार देने से सख्त मना कर दिया है ।
मैने सौ रूपये का नोट दिया और कहां चलो आपके साथ मैं भी चलता हूं अस्पताल तक ।
मनोहर– मैं जल्दी में हूं । अस्पताल भी दूर है एक झटके में कहकर वह फुरती के साथ चला गया ।
कई दिनों के बाद किसी काम से शहर गया । फला अखबार के दफतर का बोर्ड देखकर आफीस में प्रविष्ट हुआ। पता चला कि मनोहर नाम का कोई आदमी काम नही करता इस अखबार के लिये। कोई झांसा दे गया मेरे अखबार का नाम लेकर ।
मैं कुछ दिनों की छुट्टी पर था इसी बची मनोहर मेरे दफतर आया और मेरी शिकायत कर गया कि कल्याण बाबू कैसे इंसान है सौ रूपया के लिये शिकायत करने पहुंच गये । महीनों बाद मनोहर मालवा मिल की भीड़भाड़ वाली बाजार में दिखा। देखते ही उसके पास गया और बच्चे की बीमारी के बारे में पूछा तो वह बोला मर गया.... फिर भीड़ में ऐसे गायब हुआ कि फिर कभी मुंह नही दिखाया ।

आर्डर

गजाधर माथे का पसीना पोछते हुए मन ही मन बुदबुदाया क्या किस्मत हो गयी है हमारी सुबह से शाम तक पसीना बहाता हूं तरक्की की बयार मुझ तक पहुंचने नही दी जाती । साथ के लोग मैनेजर बन गये मामूली से कर्मचारी रह गये ।कर्मचारी से नये नये अधिकारी बने बिपन्नचन्द जगोधर के आगे चार–छःपेज रखते हुए बोले जल्दी टाइप कर देना । अर्जेण्ट है। साहब का आर्डर है ।
गजाधर –हर काम अर्जेण्ट होता है और करना हमें ही होता है ।
बिपन्नचन्द– बिदक गये नाक भौं सिकोड़ते हुए कम्प्यूटर पर ताश में भीड़ गये ।
सुदर्शन–क्या हुआ चन्द साहब । किससे बात कर रहे हो ।
बिपन्नचन्द–आ जाओ एक मैनेजर मैनेजर से बात कर ले....
सुदर्शन–क्यों नाराज लग रहे हैं ।

बिपन्नचन्द–छोटे लोग जबाब सवाल करने लगे है । देखो गजाधर को टाइप करने में जोर आ रहा है ।
सुर्दशन–अरे टाइप करना उसका काम है । करना ही पड़ेगा । अधिकारी हुक्म देने के लिये होते है ,करने के लिये नहीं।
बिपन्न– लो पंयादा मरा.....
इतना कहना था कि ठहाके से दफतर हिल गया ।

संवेदना

छोटेबाबू क्या समाचार है नयनबाबू से दूरभाष पर पूछा ।
नयनबाबू–बीस दिनों से बीमार चल रहा हूं । खटिया पर पड़ा हूं ।
छोटेबाबू–पुरानी बीमारी की वजह से या कोई दूसरी मर्ज लग गयी ?
नयनबाबू–पीलिया हो गयी है ।
छोटेबाबू– चिन्ता ना करो मैं वैद्यजी से दवा लेकर आता है । थोड़ा वक्त लगेगा बीस किलोमीटर का रास्ता है कहकर फोन रख दिये । नयन बाबू हेलो हेला करते रह गये ।
छोटे बाबू पीलिया की दवा लेकर दोपहर ढलते ढलते नयनबाबू के पास पहुंचे ।नयनबाबू का स्वास्थ देखकर छोटे बाबू की आखों से आंसू बह निकले ।
नयनबाबू–बीमारी है ठीक हो जायेगी ।
छोटेबाबू–जरूर ठीक होगी ये दवा गुड़ के साथ तीन दिन तक लीजिये पीलिया एकदम खत्म हो जायेगी ।
छोटे बाबू जल्दी से गिलास भर पानी पेट में उतारकर जल्दी जल्दी चाय उतारकर बोले भाई साहब मुझे इजाजत दीजिये । दूर जाना है किराये की साइकिल है । छोटेबाबू साइकिल उठाये और दौड़ पड़े मंजिल की ओर ।
नयनबाबू छोटेबाबू के परमार्थ के प्रति नतमस्तक थे जबकि छोटेबाबू से कोई खास न तो जान पहचान थी ना कोई खून का रिश्ता । भीड़ भरे शहर में और भी लोग जान पहचान के थे दूर पास के किसी ना किसी रिश्ते से तालुकात भी रखते थे पर मतलब की दौड़ ने संवेदनाहीन हो चुके थे । एक थे संवेदनशील और पर–पीड़ा समझने वाले छोटे बाबू.....
...

गवाह

चिडिंया आने घोसले की और लौट रही थी । गोकुल काम पर से आकर खड़ा ही हुआ था कि पुलिस उसके स्कूटर की जब्ती और उसकी गिरफतारी के लिये आ धमकी । गोकुल जुर्म जानना चाहा तो उसे एक औरत के एक्सीडेण्ट के केस का मुजरिम बताया गया ।

गोकुल सफाई देते हुए बोला– मुझसे किसी का एक्सीडेण्ट नही हुआ है । हां कुछ माह पहले एक छोटी बच्ची जरूर टकरायी थी जिसे तनिक खरोच आयी थी ।उसका इलाज मैंने करवाया था । बच्ची के परिजन तो काफी देर बाद आये थे। पुलिस केस का मामला भी नही था ।

पुलिसहवलदार–अधेड़ महिला है जिसके हाथ पांव टूटे है । कमर की हड्डी चटक गया है । ये एक्सरे और पच्चीस गवाहों की सूची है । एक्सीडेण्ट तुमने किया है ।हर मुजरिम झूठ बोलता है बचने के लिये । तुम भी पैतरेबाजी कर रहे हो ।

गोकुल–मुझसे एक्सीडेण्ट नही हुआ है । यह कोई साजिश है ।

पुलिस–कोर्ट में सफाई देना । आखिरकार गोकुल को गिरफतार कर लिया गया । स्कूटर जब्त कर लिया गया । धर्मशास्त्र पर हाथ रखकर सच्च के सिवाय कुछ नही कहने वाले गवाह झूठ के सिवाय कुछ नही कहे । बेचारे निरपराध गोकुल को अर्थ दण्ड के साथ सजा हो गयी, झूठी गवाही के आधार पर अवैध कमाई के लिये ।

मुराद

राहुल–पापाजी जाति और निवासी प्रमाण पत्र कैसे बना है ।

सुबोध–बेटा बन गया क्या यह कम है ?

राहुल–पापाजी कम तो नही है ।मेरा साल नही बिगड़ेगा कितने बेचारे कलेक्टर आफिस साल भर से चक्कर काट रहे है ।कई बच्चों के तो एडमिशन नही हो पाये है । सरकारी प्रमाण पत्र की वजह से । मेरा छः महीने की भगदौड के बाद भी नही बनने की उम्मीद थी फिर कैसे बन गया ।

सुबोध–सरकारी नियम कायदें के आधार पर साहब और बाबू लोग बाल की खाल निकालने लगे तो आसान सा दिखने वाला काम भी नही हो सकता । ये सरकारी प्रमाणपत्र पहले बन जाते पर हम तो सच्चाई का दामन पकड़े हुए थे ।सच्चाई को झुकना पड़ा दूसरा रास्ता अख्तियार करना पड़ा ।

राहुल– पापाजी इसका मतलब..... ?
सुबोध–हजार रूपये का घूस ।
राहुल–पापाजी ।इतना भ्रष्ट हो गये है मोहकम्में । सरकार का फर्ज है हमें जाति, निवासी, आय अथवा अन्य प्रमाण पत्र दे । सारा भारत एक है कही से भी बना हो प्रमाण पत्र हर जगह मान्य होना चाहिये ।
सुबोध–प्रक्रिया बहुत टेढी है । इसी का फायदा सम्बन्धित बाबू हो या साहब उठाते है।जनता ठगी जाती है । आमजनता को तो सभी ठगते है ।
राहुल–सच पापाजी घूसखोरी देश को खोखला कर रही है ।यदि मैं इस लायक बन गया तो घूसखोरो को चौराह पर लाऊंगा । ईमानदारों का अभिनन्दन सार्वजनिक स्थान पर जनता जर्नादन से करवाऊंगा ।घूसखोरी का पैसा तो आदमी को हैवान बना देता है ।
सुबोध–बेटा भगवान तेरी मुराद पूरी करें ।

बदलाव

परेन्द्र के परिजन नरेन्द्र को किसी फरिश्ता से कम ना समझते थे । वहीं परेन्द्र के परिजन परेन्द्र की नौकरी लगते ही बिसार बैठे परेन्द्र भी नरेन्द्र की चौखट तक आने में खुद का मानो अपमान समझने लगा था पद और दौलत पाते ही। कुछ बरस पहले के दुर्दिन को भूल गया था जब वह शहर में भूखा प्यासा मारा मारा फिर रहा था ।भीड़ भरे शहर में कोई सहारा न मिला था नरेन्द्रबाबू ने अपने घर में शरण दिया कई सालों तक खानखर्च उठाया । नौकरी तक का बन्दोबस्त हाथ जोड़जोड़ करवाया ।वही परेन्द्र दीवाली के कई दिनो के बाद मिलने आया । बैठा भी नही कि जाने का कहने लगा । मिसेज नरेन्द्र बोली भइया दीवाली मिलने आये हो तो मुह तो मीठा करके जाओ । परेन्द्र किसी की एक ना सुना बोला जरूरी काम है । मोबवईल कान पर लगाया गाड़ी स्टार्ट किया नेकी के मुंह पर धुआं उड़ाकर चला गया ।
नरेन्द्र के घर में पहले से विराजमान मेहमान आश्चर्य चकित थे परेन्द्र में आये बदलाव को देखकर और नरेन्द्र आहत ।

त्याग

सुलक्षणा ब्याह कर आते ही ससुराल की ध्वस्त माली हालत सुधारने की पूरी कोशिश में जुट गयी । पति सतीश गृहस्ती का गाड़ी को लय देने के लिये परदेस की ओर रूख कर दिये । दो जुन की रोटी का इन्तजाम

बड़ी मुश्किल से हो पा रहा था इसी बीच सतीश के छोटे भाई हरीश के परीक्षा फार्म भरने की आखिरी तारीख आ गयी । घर में फूटी कौड़ी ना थी । हरीश के पिताजी घर की हालत देखकर सतीश को कोसने लगते कहते ससुरा कमाने गया है । एक पैसा दे नही रहा है ।घर का खर्चा बढता जा रहा है ।बेटवा का फार्म भरने का इन्तजाम नही हो रहा है ।वह शहर में ऐश कर रहा है । सुलक्षणा को काटो तो खून नही ।हरीश परीक्षा फार्म न भर पाने की वजह से काफी दुखी था ।सुलक्षणा बेरोजगार पति की हालत को जानकर व्यथित थी । वह आसूं पीते हुए अपने गले से पाव भर की चांदी की हंसुली निकालकर सासुमां के हाथ पर रखते हुए बोली ले जाओ अम्मा गिरवी रखकर देवरजी का फार्म भरवा दो पैसा होगा तो छुडवा देना । सुलक्षणा के त्याग से सासुमां आश्र्चचकित थी । खैर हरीश फार्म भरा अच्छे नम्बरों से पास भी हुआ पर सतीश बाबू को नौकरी मिलने से पहले ही सुलक्षणा के ब्याह की इकलौती निशानी पाव भर की चांदी की हंसुली साहूकार की भेंट चढ गयी ।

सगाघाव

बेरोजगारी से बुरी तरह झुल रहे प्रियेश को नौकरी के सिलसिले में राजधानी जाना पड़ा । वहां प्रियेश के ससुर अच्छे ओहदे पर कार्यरत् थे । प्रियेश का मन्तव्य पूरा तो नही हुआ । उसके पास वापसी तक का किराया भी नही बचा । ससुरजी की बात प्रियेश को सगाघाव दे गयी । हताश प्रियेश अपने बहनोई जो छोटी सी फैक्टरी में लोहा काटने का काम करते थे के पास गया पर उनकी दशा देशकर जबान नही खुली । बहनोई सरताज प्रियेश की दशा को समझ गये सौ रूपया का नोट पाकेट में डालते हुए बोले बोले बाबू रास्ते में कुछ खा लेना । प्रियेश बहनोई का मन ही मन हार्दिक आभार मानकर चल पड़ा एक और सगाघाव दिल पर लेकर ।

नैतिकता

डां0साहब मरीजों का चेकअप तलीनता के साथ कर रहे थे । क्लीनिक के बाहर काफी भीड़ भी थी । फोन या मोबाइल बज जाता तो डां0साहब खिंझ जाते । डां0साहब की मोबाइल पर बात खत्म ही नही हुई कि फिर बज उठी ।डां0साहब चैम्बर से बाहर निकले बुर्जुग के

सामने नतमस्तक हुए और सहारा देकर अन्दर ले गये ।बुजुर्ग व्यक्ति के साथ छः लोग और अन्दर चले गये । सभी व्यक्तियों के चेकअप में तीन घण्टे टूट गये। महीनों पहले एप्वाइण्टमेण्ट लेकर आये दूरदराज गांव के लोग सूरज उगने से पहले से बैठे थे उनमें से श्यामबाबू का नम्बर पहला ही था ।

लम्बे इन्तजार के बाद चैम्बर में प्रविष्ट हुए । श्यामबाबू को देखते ही डां0 साहब बोले सांरी श्याम बाबू आपको कष्ट हुआ । बुर्जुग व्यक्ति कोई और नैतिकता का पाठ पढाने वाले नही हमारे गुरू थे। वे खुद का नही अन्य छः लोगों का चेकअप करवाने आ गये बिना सूचना के । बाहर से आये मरीजों के बारे में तनिक भी नही सोचे । उपदेश देने वाले ही नैतिकता का दामन छोड़ देगे तो क्या होगा ?

वेश्या

चौराहे पर चार अपरिचित लोगों को चर्चारत् देखकर चुन्नीलाल की चुन्नी ठनक उठी । वे थोड़ा ठिठके। एक व्यक्ति बोला यार कुछ कालोनाइजर वेश्या से भी गिर गये है ।

दूसरा–क्या कह रहे हो यार ।

पहला व्यक्ति–ठीक कह रहा हूं ।

तीसरा–क्या ठभ्क कह रहे हो । कुछ समझ में नही आ रहा है ।

चौथा व्यक्ति–समझा दो भाई हुजत् क्यों कर रहे हो राह चलते लोग सुन रहे है ।

पहला व्यक्ति– सुनने दो कहां हम लोग असामाजिक काम करने की योजना बना रहे है । वेश्या और कालोनाइजर में अन्तर की बात कर रहे है ।

दूसराव्यक्ति –बताओगे भी की भाषण देते रहोगे ।

पहलाव्याक्ति–वेश्या तो वेश्या है अपने कर्म पर खरी उतरती है । कुछ कालोनाइजर एकदम दगा कर जा रहे है ।जहां खड़े है उसी कालोनी की दुर्दशा देखो ना सड़क है,ना दुरूस्त चैम्बर लाइन, ना ही स्ट्रीट लाइट और पानी तो नलों से टपकता ही नही ।बेचारे रहवासी घर के सपने में धोखा खा जाते है ।

चौथा व्यक्ति चुन्नी की तरफ इशारा करते हुए बोला क्यो जेण्टलमैन कौन दगाबाज है वेश्या या कालोनाइजर । चारो एक साथ हंस पड़े । चुन्नीलाल के पैर गतिमान हो उठे ।

रिश्तेदारी

गली के गुण्डे नपुंसक हो गये । बाहर के गुण्डे जयराम और रामराज को अधमरा कर चले गये पर अपनी अपनी मांद से बाहर नही निकले । कुछ देर पहले यही गुण्डे रामराज के साथ बैठकर ठहाके लगा रहे थे । धीरेन्द्र कैसे बेवफा लोग हो गये है बीचबचाव तक नही करने आये ।

दीपेन्द्र–यही गली के गुण्डे आप जैसे नेक इंसान को भद्दी भद्दी गालियां दिये थे ।कटार लेकर मारने तक को आ गये थे सिर्फ इसलिये की आपने खटारी बदमाश अपने घर के सामने चिल्लाचोट करने से माना कर दिया था ।ये गली के गुण्डे खटारा से रिश्तेदारी निकाल कर आपके दरवाजे तक चढं आये थे मारपीट करने को उतारू थे ।वो खलासी तो ईंटा लेकर दौड़ रहा था,वो लड़की सरीखे बाल बावा वो नर्स का बेटा ,वो मोटा भैंसा और सभी का खून खौल रहा था शराफत के खिलाफ । जिस रामराज की दुकान में घण्टों बैठे रहते थे चाय–पानी करते थे उसे लहूलुहान होता देखते रहे कितने नपुंसक हो गये है ये गली के गुण्डे। ।गुण्डों को रिश्तेदार मानते है । शरीफ आदमी की पीठ में छुरा घोंपते हैं ।

धीरेन्द्र–सभ्य समाज के दुश्मन हैं गुण्डे लोग ।

ब्रेड

राघव पड़ोस के विमल किराना से ब्रेड का पैकेट लाया और बोला मम्मी ब्रेड कीचन में रख दिया हूं । आप सेंक दो जल्दी । स्कूल जाने का समय होने वाला है ।

लक्ष्मी–बेटा तैयार हो जाओ ब्रेड सेंकने में ज्यादा समय नही लगेगा ।मैं कीचन में जा रही हूं ।

राघव–ठीक है मम्मी ।

लक्ष्मी– बेटा राघव ब्रेड का पैकेट बड़ा लाने को बोली थी ना । अरे ये तो सड़ी भी है ।

राघव–बोला तो था लेकिन अंकल अच्छी है कहकर दिये है ।

लक्ष्मी–वापस कर बड़ा पैकेट ला दो ।
राघव भागा भागा गया पर विमल ने मना करते हुए बोला जा अपने मां बाप को बुलाकर ला ।राघव रोता हुआ घर आया । मिसेज लक्ष्मी और सत्यब्रत दुकान पर गये । विमल चिल्ला कर बोला आ गये तुम लोग मार करने । दो रूपये की ब्रेड खरीदते हुए उपर से मग्गजमारी करते हो ।जा न तो तेरा पैसा दूंगा आर नही ब्रेड जो करना हो कर लेना । विमल ऐसा ही किया । मवाली विमल के रौद्ररूप को देखकर सत्यब्रतबाबू और मिसेज लक्ष्मी वापस आ गये । रहवासियों के बीच कानाफुसी होने लगी कि विमल किराना स्टोर है या पड़ोसियों को लूटने का अड्डा ।

सफेदपानी

देवेन्द्र–गिलास में क्या रखकर जा रही हो शुभा ।
शुभा–जेठजी दूध है । पी लेना ।
देवेन्द्र–गांव का दूध हजम ही नही होता । क्या पीकर करूंगा ।
शुभा–हो जायेगा । पड़ोसवाली जेठानी के यहां से मंगवायी हूं पाव भर ।
देवेन्द्र–अरे बाप रे ये दूध है कि सफेद पानी ।
शुभा–क्या ?
देवेन्द्र–भाभी ने ऐसा दूध दिया है पैसा लेकर ।
शुभा–हां रिश्ता–नाता भूल गयी है । धंधा ही उनका नाता रह गया है तभी तो बीमार खून के रिश्ते के व्यक्ति को सफेद पानी बेच रही है ।वे भी तो इसी घर की है । परिवार में दो फांड़ करवा दी । सगे का गला काट रही है ।
देवेन्द्र–खुश है तो खुश रहे । दूध मैं नही पीउूंगा । मेरे लिये दूध अब ना लाना । हां ये बात किसी से कहना नही ।
शुभा –क्या जेठजी आप खून के रिश्ते पर मर रहे है । एहसनातले दबी पड़ोसवाली जेठानी दूध की जगह सफेद पानी हमें बेच रही है वह भी बाजार से ज्यादा कीमत में ।

घरमंदिर

बिहारी दादा अपना सारा जीवन भाई भतीजो पर स्वाहा कर दिये खुद के लिये कुछ नही बना पाये ।बेटा ईश्वरचन्द मां बाप की बरसों पुरानी

पक्के मकान की ख्वाहिश तो पूरा कर दिया । घर पर नजर लग गयी । लोग भूतहा कहने लगे । बिहारी दादा घबराकर दाढ़ीबाबा तान्त्रिक के पास गये । दाढ़ीबाबा ने घर में भूत पर सहमति जतायी । घर से भूत निकालने की तारीख निश्चित कर दिये । निर्धारित समय और तारीख बिहारी दादा ने पूरी बस्ती के लोगो को इक्ट्ठा किया । दाढीबाबा आते ही घर के अन्दर वाले हिस्से में दक्षिण और पूरब के कोने में एक चौकोर निशान लगाया और पांच फीट गहराई तक खोदने को हुक्म देकर वे वही पास में बैठकर तान्त्रिक क्रियायें करने लगे ।
दाढी बाबा के कहे अनुसार पांच फीट की खुदाई पूरी हो गयी तब दाढी बाबा ने हाथ से नीचे की मिट्टी हटाने का हुक्म दिया । कुछ मिट्टी बाहर निकालते ही लालरंग के कपडें से बंधा मिट्टी का घड़ा उपर आने लगा और घर में घुआं भरने लगा । मिट्टी हटा रहे और जमा लोग भागने लगे । दाढीबाबा आव देखे ना ताव गढडे में कूदकर घड़े को काबू में किये । कुछ देर के बाद माहौल सामान्य हुआ । तब दाढीबाबा ने पूरी बस्ती वालों के सामने घड़े पर से लाल कपड़ा अलग किया । घड़े के मुंह को खोला जो अच्छी तरह से पैक किया गया था । फिर घड़े मे से दिल्ली के सोने चांदी के व्यापारी की एक प्लास्टिक की डिब्बियां निकली जिसमें श्मशान की राख और आदमी की हड्डी निकली,सात बड़ी बड़ी सुईया,शाही का कांटा,नीबूं,लौंग,नाव की कील एवं अन्य ढेर सारा जादू टोने का सामान निकला ।सारा सामान दाढीबाबा ने पुनः बांध लिये और बोले बर्बाद और तुम्हारे परिवार की मौत का जाल तुम्हारे अपनों ने बिछाया था ।बस्ती वालों की नजर बिहारी के भतीजे चनटु और उसकी घरवाली फूलमती को ढूढेन लगी वे लोग नदारत थे ।
दाढीबाबा बोले बिहारी भइया अब कोई कुछ नही बिगाड़ सकता । भूतहा घर मंदिर हो गया कहते हुए अपनी जांघ में सुई घुसा दिये । घरती पर खून टपकने लगा। इतने में शोर मच गया कि चनटु की घरवाली अचेत होकर गिर गयी है,उसका दांत लग गया है । सारी भीड़ चनटु के घर की ओर दौड़ पड़ी ।

द्वेष

दयानाथ की मेहनत मजदूरी की कमाई से बेटा रामेश्वर ग्रेजुयेट की पढाई पूरी कर नौकरी की तलाश में निकल पड़ा । रामेश्वर को शहर में पग पग पर ठोकरें खानी पड़ी और जातिभेद का जहर पीना पड़ा ।लम्बे अन्तराल तक ठोकरे खाने के बाद रामेश्वर को नौकरी मिली । वह नौकरी करते पढाई भी जारी कर दिया । बड़ी बड़ी डिग्रियां तक हासिल कर लिया । पदोन्नति के लिये अर्जियां भी खूब दिया पर द्वेष के पोषकों ने तनिक भी आगे बढने नही दिया । रामेश्वर को खूब सताया गया । कुछ लोग तो खुलेआम खिलाफत करते । अवधप्रताप साहब ने तो यहां तक कह दिया कि रामेश्वर जैसे छोटे लोगों को आगे बढने में हम बड़े लोगो की कुशल नही। जितना हो सके ऐसे लोगों को दबाकर रखने में ही हमारी भलाई है । बेचारे निरापद रामेश्वर के भविष्य और उसके मां बाप के ख्वाबों का बलात्कार कर दिया द्वेष के पोषकों ने ।

चैन

नशेमन दादा नशे की ऐसी बुरी लत में फंस गये थे कि उन्हे खुद के जीवन से भी मोह न था ।मौके बेमौके बेटे बहू को सार्वजनिक रूप से बेइज्जत करने से नही चूकते थे । बे बड़ी शान से कहते बेटो को पढाया लिखाया । अब कमा रहे है । मेरा शौक पूरा करने का वक्त आ गया है । कोई धन दौलत साथ लेकर गया है कि मैं ले जाऊंगा ।जबकि बेटे की आर्थिक समस्यायें मुंह चिढा रही थीं । नशेमन दादा को कोई सरोकार न था आर्थिक और पारिवारिक समस्यओ से । सरोकार था तो बस शराब गांजा और दूसरे नशाखोरी की चीजों से ।नशेमन दादा के उपर सारे नशा निषिध्द के तरीके फेल हो गये थे ।बेटे की कसम भी नही रोक पायी नशेमन दादा के मद्यपान के शौक को ।

बेटे बहू पोते पोती सब चिन्तित थे नशेमन दादा के स्वास्थ्य को लेकर,बडा आपरेशन झेल चुके उनके फेफेड़ो को लेकर और आंत को लेकर। नशेमनदादा को तनिक भी फिक्र नही थी न खुद की ना बेटे बहु और ना पोते पोती की उन्हे फिक्र थी तो बस दारू गांजा के इन्तजाम की। वे हर आने जाने वाले से कहते देखो मेरे दोनों बेटे कमा रहे हैं ऐश कर रहे है ससुरे, मुझे चैन से पीने भी नहीं देते ।

कब्जा

पलटबाबू–शिक्षा विभाग की नजर कालूमल के स्कूल पर ना जाने क्यों नही पड़ती छोटा सा घर बड़ा स्कूल चला रहा है ।

बजरंग–शिक्षा विभाग तो दूर है । पास की देखो दो सौ लोग जिस बोरिंग से पानी पी रहे थे । उसी बोरिंग का पानी अब दो घरों तक नही पहुंच रहा है ।कालिया नाग का तरह बोरिंग पर फन फैलाये बैठा रहता है । लोग प्यासे मर रहे है ।ये नाग पानी में डूबकर भी नही मर रहा है ।

पलटबाबू–कालूमल तप,सेवा और त्याग को त्याग का मतलब का पुजारी बन बैठा है ।

बजरंग–सइंयां भये कोतवाल डर काहे का । कालोनाइजर रिश्तेदार है। कालोनी की बोरिंग पर कब्जा कर बैठा है ।

पलटबाबू–दूसरों को तकलीफ देने वाले ज्यादा दिन सुखी नही रह पाते ।

कुछ दिन बाद बजरंग हाफते हुए आये और पलटबाबू से बोले भइया आपकी देववाणी सही साबित हो गयी । कालूमल दिवालिया हो गया । स्कूल बिक गया । ठगी की गिरफ्त में आ गया । पुलिस तलाश रही है ।

पलटबाबू–नाग की नाक में नकेल डल गयी । सभी कब्जेां से हाथ धो गया ।

सदमा

द्वेष से पोषित लोग आदमियत को रौदने में तनिक देर नही करते ।इस बात के सुलगते गवाह थे भौंकूसाहब । एक विभागाध्यक्ष के कहने पर गेम खेल रहे भैांकूसाहब से करूणदेव बोले सर कुछ देर के लिये कम्प्यूटर खाली कर देगे क्या ? साहब ने एक खास और अर्जेण्ट रिर्पोट बनाने को कह रहे हैं ।

भौंकसाहब पागल हाथी की तरह उठ खड़े हुए करूणदेव को मारने के लिये । गाली देते हुए बोले साले यहां से जल्दी निकल नही तो लात देता हूं ।

भौंकूसाहब के नीच और अमानवीय व्यवहार को देखकर दफतर के कर्मचारी अचम्भित थे और करूणदेव सदमें में ।

रोटी

स्कूल प्रिसिंपल किरन बाई से बोली अल्पना मैडम अभी तक नही आयी । किरन बाई सहमति में सिर हिला दी ।

अल्पना मैडम कुछ देर के बाद हांफते हांफते आयी । किरनबाई से पूछी मैडम ने मेरे बारे में नही पूछना ना ।

किरनबाई –मैडम अभी तो प्रिसिंपल मैडम की कोर्ट में जाओ ।

अल्पना मैडम को देखते ही प्रिसिंपल मैडम विफर पड़ी और बोली अल्पना मैडम नौकरी छोड़ दो । जब चाहो मुंह उठाये चले आओ । ऐसा नही चलेगा ।

अल्पना–सांरी मैडम । घर के हालत खराब हो गये है । आज तो हद हो गयी सासु ने पहले चूल्हे पर कब्जा कर लिया ससुर के जल्दी जाने का बहाना करके ।रोटी बनाने में देर हो गयी ।

प्रिसिंपल–मैडम–साससससुर अलग बनाते खाते है।एक ही कीचेन – यानि एक तवा दो रोटी ।

अल्पना–एस मैडम ।

प्रिसिंपल मैडम–आप टीचर है ।

अल्पना–एस मैडम ।

प्रिसिंपल–आप जैसी मैडम क्या शिक्षा देगी खाक ? बूढी सास कांपते हाथ से रोटी बना रही है । जब आपके बेटे बहू ऐसा सलूक करेगे तब क्या होगा ? जरा सोचो । क्या अपने फर्ज के साथ न्याय कर रही है ?

मिठाई

सूरज डूबने की तैयारी में था । दीवाली की सजावटी बत्तियां रोशनी बिखेरने की । इसी वक्त फोन घनघना उठा । मिसेज अनीता ने फोन उठाया । दूसरी तरफ से आवाज आयी मैं बिहारी बोल रहा हूं– त्रिवेणी है।

मिसेज अनीता–बाजार गये है ।

बिहारी– आये तो कह देना परवेश साहब के घर से दीवाली की मिठ।ई ले लेगा। स्टाफ के चारों ने ले ली है । त्रिवेणी की मिठाई साहब के घर है ।

मिसेज अनीता– ठीक है कह दूंगी । बहुत देर हो चुकी है ।

बिहारी–साहब का आदेश मुझे मिला है । मैने बता दिया ।
अनीता त्रिवेणी के आते मिठाई की बात बतायी । वह बोला सब नौटंकी है । मिठाई ,कल खरीद नही गयी । आज खरीदी गयी है अपनों को लाभ पहुंचाने के लिये ।
त्रिवेणी–छुट्टी का दिन है इन्सीडेण्टल एलाउन्स मिलेगा उपर से और कुछ। मुझ को छोड़कर बाकी लोगो की ओवर टाइम में अच्छी कमाई हो ही जाती है । कमाई रूतबेदार लोग करते है । काम मुझे करना पड़ता है। दीवाली की मिठाई पर भी नजर लग गयी।
मिसेज अनीता–भगवान सब देख रहा है । दुखी ना होओ । कल दफतर जाओगे तो मिठाई लेते आना ।
त्रिवेणी–कल मिले तब ना ।
मिसेज अनीता चलो पूजा कर लेते है । सब तैयारी हो गयी है।
त्रिवेणी–अनीता पूरे घर परिवार के साथ पूजा पाठ किये । पूजा का कार्य सम्पन्न हो जाने के बाद त्रिवेणी ब्रांच प्रमुख परवेश साहब को फोन पर दीवाली की बधाई दिया । साहब ने मिठाई का नाम तक नही लिये । दूसरे दिन त्रिवेणी दीवाली की मिठाई लेना चाहा तो साहब बोले कैसी मिठाई ? इम्पलायी दीवाली स्वीट फण्ड से खरीदी गयी त्रिवेणी के हक की मिठाई भी परवेश साहब डंकार गये । उखड़े पांव छोटा कर्मचारी त्रिवेणी से रहा नही गया वह बोला साहब और भी कुछ मेरे हक का हड़पने को बचा है क्या ?

हवस

खाकीबाबू रिटायर होने के दो साल के अन्दर ही चल बसे ढेर सारी जमीन–जायदाद,ढेर सारा रूपया भरापूरा बिखण्डित परिवार छोड़कर ।खाकी बाबू की कुल चार सन्तानें थी तीन बेटा एक बेटी । खाकी बाबू एकलौती बिटिया के साथ कभी न्याय नही किये । हां नैतिक एवं कागजी कत्ल कई बार कर चुके थे ।खाकीबाबू पुत्रप्रेम में बावले थे, पुत्रों को राजा बनाने की हवस सवार तो थी पर पुत्रों को खुद के पांव पर खड़ा होने लायक नही बना पाये थे । इसके गम के साथ पहली पत्नी की मौत का थोड़ा गम था । इस गम को कम करने का इन्तजाम रिटायर होते होते कर लिये थे ।दूसरी पत्नी की वजह से परिवार में उठे तूफान की झंझावतों से खाकी बाबू सम्भल नही पाये

एक दिन सदा के लिये उनका दिल धड़कना बन्द कर दिया ।नगदी–जमीन–जायदाद के बंटवारे का मामला कोर्ट पहुंचा । खाकी बाबू के तीनों बेटे और दूसरी पत्नी को वारिस माना गया । एकमात्र लड़की का कानूनन कत्ल कर दिया गया खाकीबाबू के बेटो और दूसरी पत्नी की मिलीभगत से । इस कागजी एवं कानूनी कत्ल पर कोर्ट ने भी मुहर लगा दी सिर्फ रकम की हवस की रक्षा खातिर ।

होली

होली मुबारक हो अकेला बाबू । खुशलालजी पीछे क्यों खड़े हो रंग,अबीर गुलाल से रंगो अकेलाबाबू को सारे गम रंग जाये ।
अकेलाबाबू लीजिये मुंह मीठा कीजिये । बहुत हो गया रंग गुलाल ।
खुशलालजी–हां प्यास लगी है ।
प्रेमबाबू–पानी क्या । चलों भांग पीलाता हूं ।
खुशलालजी–मांता जी नम्बर में गुजरी थी ।पहली होली पर रंग डालने आये हो भाग पीला रहे हो ।
प्रेमबाबू–यहां नही हमारे घर तो पीओगे ।
खुशलाल–बाद में देखी जायेगी । अकेलाबाबू आपके दफतर के लोग आकर गये क्या ?
अकेलाबाबू–आये नही तो जायेगे कहां ?
खुशलाल–क्या ? पहली होली पर नहीं आये । मांताजी की मौत के बाद भी तो नही आये थे । रंग डालने भी नही आये ।
प्रेमबाबू–समझा ,जातिबंश के भेद को खत्म करना होगा ।
खुशलाल मालवी में बोले–कसा आदमी ओण हैं,जो दुखिया के सा नी दे । असो नी करनो चइये । सचु नेठु जनावर लोग हे । अकेलाबाबू होली बहुत बहुत मुबारक हो ।

छुरी

अभिमान आदमी को खा जाता है। कंस,हिरण्याकुश एवं अन्य अभिमानियों के अभिमान के नतीजे को जानते हुए भी हलकू साहब के सिर चढकर बोलता था अभिमान । हलकू साहब की किस्मत ने साथ दिया वे तरक्की करते करते बड़े जिम्मेदार पद पर पहुंच गये पर उन्हे पद की गरिमा से तनिक सरोकार न था । हलकू साहब की तरक्की

दूसरो के लिये खजूर की छांव साबित हो रहा थी और व्यवहार बबूल की छांव । हलकू साहब पदोन्नति से ओवर लोडेड होर आपा खोने लगे थे जैसे पांच किलों की प्लास्टिक की थैली में पच्चीस किलो का वनज ।

हलकू साहब की आदत से छोटे बड़े सभी परिचित थे ।एक दिन अक्षरांशबाबू ने महीनों से लम्बित अपने भुगतान के लिये अनुरोध क्या कर दिया जैसे कोई भरी अपराध कर दिये । हलकू साहब अक्षरांशबाबू के अनुरोध को रौंदते हुए बड़ी बदतमीजी ो बोला तुम्हारा भुगतान अब नही हो सकता जो करना चाहो कर लेना ।

हलकू साहब की अभद्रता एवं अमर्यादित धौंस से अक्षरांशबाबू के माथे से पसीना चूने लगा क्योंकि उन्हे अतिआवशक कार्यवस रूपये की शख्त आवश्यकता थी ।अक्षरांशबाबू की रोनी सूरत देखकर सहकर्मी एक स्वर में बोल उठे हलकू साहब की पदोन्नति क्या हुई वे तो कसाई की छुरी हो गये ।

समझौता

बेटे के ब्याह से ज्यादा खुशी धुयेन्द्र बाबू को मिलने वाले दहेज से हो रहा थी । लम्बी बाट जोहने के बाद तो तैयार हुई थी दहेज की फसल ।बड़े अरमान के साथ धुयेन्द्र बाबू ने बेटा तपेन्द्र का ब्याह तय किया था।ब्याह की खबर लगते ही तपेन्द्र ने मना कर दिया ।बडी समझााइस के बाद तैयार तो हुआ पर इस शर्त पर कि वह लड़की खुद देखेगा । छाती पर पत्थर रखकर दोनों पक्ष राजी हुए ।तपेन्द्र लडकी देखने गया । लड़की देखते ही मना कर दिया कई इल्जाम लगाकर ।

तपेन्द्र की इंकार से धुयेन्द्र बाबू की फसल पर ओले पड़ने लगे ।धुयेन्द्र बाबू किसी भी कीमत पर मालदार पार्टी को जाने नही देना चाह रहे थे । वे दहेज की अच्छी फसल को काटने के लिये तपेन्द्र से छोटे बेटे सतेन्द्र के ब्याह का प्रस्ताव लेकर पहुंच गये ।बधु पक्ष ने भी सहर्ष इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

बाप की छूछी आन,मान ,शान और दो परिवारों की कानूनी तकरार, बर्बादी और दहेज के बढते वजन को देखकर सतेन्द्र ने अपनी उम्र से बड़ी लडकी से ब्याह के समझौते पर स्वीकृति दे दी ।

प्रर्दशन

हरखू– एक बात समझ में नही आती है ।
बरखू– कौन सी बात.....
गली गली में हलचल मचाते मचाते राजनीति की डोर पकड़कर जब मन्त्री बन जाते है तब उनकी सुरक्षा इतनी क्यो बढ जाती है ।
बरखू–अरे हरखू ये तिकड़मबाज लोग होते है । देश और जनता की गाढी कमाई पर अपने वर्चस्व का नंगा प्रर्दशन करते है ।तुम्ही बताओ जिस जनता के बीच निर्कुश रहते थे उसी जनता का खून पीकर पलते थे और ये तिकड़म बाज इस जनता का हितैशी बनते नही थकते थे । और तो और जनता ही तो चुनकर नगर निगम से लेकर संसद तक भेजती है । भला ऐसे जन सेवकों की हत्या कौन और क्यों करेगा ।
हरखू–अच्छा तो गरीब देश के मन्तियों मुख्यमन्तियों की सुरक्षा में लगे हजार पांच सौ कमाण्डों ,सरकारी मिशनरियों और जनता की गाढी कमाई का दुरूपयोग रूतबा और ताकत का नंगा प्रर्दशन है ।

बहुरूपिया

पड़ोसी भगवान होता है केदारबाबू सुना है आपका पड़ोसी हैवान हो गया है।
सच कह रहे हो कमलबाबू मैय्यत की खबर कुछ पडोसी कान तक नही पहुंचने देते सुना था ।उदय नारायन जैसे पड़ोसी तो आबरू लूटने पर उतारू हो गये है । भला हो दलीपभईया का जो पत्नी की आवाज पर दौड़े चले आये । उदय नरायन के घर में घुस गये इतने में उसका बेटा पीली कमीज उतार कर गेरूवा वस्त्र पहन कर पूजा करने लगा ।
केदारबाबू–उदयनरायन और उसका परिवार तो बहुरूपिया लगता है। शरीफ पड़ोसी की इज्जत का तमाशा बना रहा है । पड़ोसी के घर में सेंध मारने लगा है । कैसे हैवान किस्म के लोग है ।
कमलबाबू–सभी उदयनरायन और उसके परिवार जैसे नही है भले लोग भी है कालोनी में। जैसे एक सड़ी मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है वैसे उदयनरायन जैसे पडोसी पूरी कालोनी को बदनाम कर रहे है ।

केदारबाबू–सावधान रहना होगा । पड़ोस में उदयनरायन जैसे हैवान बसने लगे है ।कब रूप बदल लें चौकन्ना तो रहना होगा पड़ोसी बहुरूपियाओं से कमलबाबू.....

चश्मा

सुरभि–बाबू क्या हुआ । आंख में कोई तकलीफ है ।बार बार आंख पर जोर दे रहे हो ।

रमनदास–बीटिया तू दो दिन के लिये मायके आयी है । तू मेरी तकलीफ की चिन्ता क्यों कर रही है । ये सांड़ सरीखे बेटे तो है ना । सुरभि–बाबू नाराज क्यों होते हो । मैं भी तो आपकी ही बेटी हूं हां बेटो जैसा हक मुझे समाज ने नही दिया है । ये बात अलग है ।

रमनदास–बेटी तू फिकर ना कर कहते हुए कमरे में गये और टूटा हुआ ऐनक आंख पर रखकर सम्भालते हुए बोले बेटी तू बहुत कमजोर लग रही है सब कुशल मंगल तो है ना ।

सुरभि–हां बाबू मैं परदेस मे अपने परिवार में खुश हूं पर तुम खुश नही लग रहे हो । तुम्हे टट्टी पेशाब जाने में दिक्कत आ रही है ना । पांच साल पुराना चश्मा टूट गया है । रमनदास– हां बेटी कहकर वे पीठ में सटे पेट को दबाते हुए दहाड़ें मारकर रो पड़े ।

देवचन्द–बहन तू तो बाबू की आदत को जानती ही है तुमको देखकर स्वांग रच रहे है ।

सुरभि खटिया पर पड़े बूढे को उठाकर आंख के डांक्टर के पास ले गयी। चश्मा बनवायी । रमनदास आंख पर चश्मा रखते ही बोले बेटी सदा सुखी रह । मेरी अंधी आंखों में कुछ रोशनी आ गयी ।

दहेज की कार

सुबह सुबह टेलीफोन की घण्टी सुनकर रंजना दौडी दौड़ी गया और रिसीवर उठा कर हेलो बोली सिसकते हुए राखी बोली रंजना मुझे बहुत डर लग रही है।

रंजना– क्यों

राखी–पडोसी वाली रीना भाभी ने जहर खा कर जान दे दी ।

रंजना–अरे बाप रे जल्दी ही तो शादी हुई थी । रीना भाभी भला जहर क्यों खा ली ।

राखी– कार के लिये ।प्रमोद भईया रीा भाभी से मायके से कार लाने की जिद पर अड़े थे । रीना भाभी अपने पिता की आर्थिक तंगी से अवगत थी । इसलिये कार की मांग को अपने पिता के कानों तक नही पहुंचने दी और दहेज की बलिबेदी पर लटक गयी । मुझे भी डर लगने लगा है मेरी भी शादी तो नचदीक आ रही है ।

रंजना–क्या कार के लिये जान दे दी ? लड़कियों को दहेज के लिये जान देने की जरूरत नही है । दहेज लोभियों को सबक सीखाने की जरूरत है । अरे कब लड़कियां दहेज के मुकाबले के लिये तैयार होगी ।

राखी–रंजना बहन तुम्हारी नसीहत को याद रखूंगी और बुरा समय आने पर डंटकर मुकाबला करूंगी । जान कतई नही दूंगी । आज की नारी इतनी कमजोर तो नहीं।

चन्दा

वरदायिनी नगर के आखिरी छोर की सड़क डरावनी नगर के लिये विभाजक रेखा थी । वरदायिनी नगर के आखिरी छोर पर बसे लोग डरावनी नगर के लोगों के लिये अजनबी और वरदायिनीनगर के लिये पिछवाड़े के लोग थे । गर्मियों के दिनों में नगर निगम के टेंकर तक का पानी डरावनी नगर के लोग नहीं पहुंचने देते । वरदायिनी नगर के लोग प्यासे गले से कोसते रह जाते पर धार्मिक उत्सवों के नाम पर डरावनी नगर के रहवासी संघ के नेता वरदायिनीनगर के लोगो से चन्दा उगाहने में तनिक भी ना हिचकिचाते थे । डरावनीनगर के नेताओं के रवैये को देखकर बाबू ईमानचन्द के मुंह से आखिरकार निकल ही गया कैसे नेता लोग है पानी की बूंद तक टपकने नही देते चन्दा मांगने के लिये छाती उतान किये चले आते है हया ताख पर रखकर ।

ढाठी

कुसन्तदुधार –अरे वो किशोरवा जा तू भी एक गिलास ला । ले ले एक पैग । तर जायेगा । देख रहा है बड़े बडे लोग तैर रहे है । छोटे लोग तो बड़ो की कृपा से ही तरते है । मालूम है ना ।

किशोर–हां सर अच्छी तरह मालूम है। पैग नही ले सकता सर.....

कुसन्त– क्या..... ?

किशोर– मै नही पीता सर.....
कुसन्त साहब ने किशोर के इस इंकार को बदतमीजी मान लिया । तथाकथित श्रेष्ठ और शीर्ष पर बैठे मानवता की छाती में कील ठोंकने वालों के कान भर दिये। मेहनतकशों के दुश्मन अभिमानियों ने निर्दोष किशोर के सपनों को ढाठी देकर इत्मीनान से जाम टकरा लिया ।

अगुवाई

गुमान–रोशनबाबू तुमने बिरादरी की नाक कटवा दी ।
रोशन–वो कैसे बाबू.....
गुमान–बेटी का ब्याह छोटी जाति में करके ।क्या अपनी बिरादरी में लड़को का अकाल पड़ गया था ।
रोशन–दहेज की भारी मांग कहां से पूरी करता ।अमित और गीता एक दूसरे को बचपन से चाहते थे । गीता बहुत खुश है अमित को हमसफर पाकर । लड़का उच्च पढा लिखा है । अच्छे जांब से है । गुमान बाबू मैने बीटिया का ब्याह से दो निशान देश और समाज के भले के लिये साधे है ।
गुमान– वो क्या है रोशन.....
रोशन–दहेज की असाध्य बीमारी का तोड़ दूसरे सामाजिक समानता की स्थापना ।
गुमान–मतलब रोशन बाबू तुम्हारी अगुवाई में मुझे भी बीटिया का ब्याह करना होगा ।
रोशन–शुभ कार्य के लिये मैं तैयार हूं गुमान बाबू.....

सुरक्षा

बोलरियों बेचारे की जान ले ली । यह खबर हाई–वे के किनारे बसे गांव के घर घर में पहुंच गयी ।अपने परिजन की फिक्र में सभी गांववासी हाई–वे की ओर दौड़ । बोलरियों कुछ दूर सड़क के किनारे गढडे में जा गिरी थी मोटर साइकिल सवार अधेड़ का एक पैर चूर चूर हो चुका था वह मरणासन्न तड़प रहा था। गांव वालों की दौड़ धूप से घायल व्यक्ति के परिजन दो घण्टे के अन्दर आय,पुलिस आया खानापूर्ति हो गयी । बेचारे परिजन अस्पताल लेकर भागे पर डांक्टरों ने हाथ खड़े कर दिये। बेचारे परिजन मौत से जूझ अधेड़ व्यक्ति को

लेकर शहर के अस्पताल की ओर भागे । बोलरियों में सवार तीनों लोग मजे से चले गये । हाईवे से सटे गांव वालों के माथे पर चिन्ता की लकीर साफ साफ झलक रही थी अंध एवं द्रुतगति से बेलगाम दौड़ रहे वाहनों से अपने और अपने परिजनों की सुरक्षा को लेकर ।

अन्तिम इच्छा

शिवलाल गले में प्राण अटकने से पहले बेटों और दूसरी पत्नी मंथरीदेवी के सामने अन्तिम इच्छा प्रगट कर दिये । अन्तिम इच्छा के खुलासे के कुछ दिनों बाद उनका सांसे सदा के लिये थम गयी। मंथरीदेवी ने शिवलाल द्वारा छोड़ी गयी चल–अचल सम्पति में बराबर का हिस्सा ले ली । बाप की अन्तिम देवस्थान के निर्माण की मशविरा बेटो ने ताऊश्री सफेदीदास के सामने मंथरीदेवी से की तो वे एकदम से पल्ला झाड़ ली और बोली तुम चारचार सांड़ जैसे बेटे अपने बाप की अन्तिम इच्छा भी पूरी नही कर सकते ।

मंथरीदेवी के रवैये को देखकर सफेदीदास बोले शिवलाल तुमसे बुढौती में ब्याह इसलिये कर लिया की तू लावारिस ना मरे । साल भर भी चैन की रोटी नही खा पाया बेमौत मर गया । मंथरी तुमने एहसान के साथ दगा किया है सिर्फ दौलत हड़पने के लिये की थी । अरे तू इन उखड़ेपांव बच्चों की सौतेली मां ही नही शिवलाल की सौतेली पत्नी भी साबित हो चुकी हो ।

आवण्टन

बसन्तबाबू को नमस्कार करते हुए राजकुंअर प्रधान द्रुतगति से आगे बढ गये । प्रधानजी को न रूकता देखकर बसन्त बाबू बोले अरे प्रधान तनिक तो रूकों ।

प्रधान–भाई साहब प्रधानी का बोझ तनिक चैन नही लेने देता । गांव में विकास की बाढ आ गयी है । गांव में सीमेण्ट कांकरीट की पक्की सड़क,बिजली का जाल तो देख ही रहे है । कुछ ही दिनों टेलीफोन/इण्टरनेट की लाइन में बस्ती में आ जायेगी । शुरूवात भी हो गयी है ।मरने की फुर्सत नही है ।

बसन्तबाबू–प्रधानजी बहुत अच्छा काम कर रहे हो । भूमि आवण्टन कब करवा रहे हो ?

प्रधान– बहुत पहले का हो गया है । आपको पता नही खैर पता भी कैसे होगा आप शहर में जो रहते है ।
बसन्त–पता है । सिर्फ चार लोगों को एक एक बीसा जमीन मिली है । प्रधानजी आवण्टन नही लीपापोती हुआ है । भूमिहीनों के साथ धोखा हुआ है। क्या गांव समाज की जमीन इतनी ही है ।प्रधानजी गांव में इतनी जमीन है कि बस्ती का हर भूमिहीन गरीब खेतिहर मजदूर परिवार दो दो बीघा जमीन का मालिक बन सकता है । यदि आप चाहे तो । गांव के दबंग लोग कही खलिहान कहीं घुर तो कहीं पेड़ पौधे लगाकर कब्जा किये हुए है।दबंगों के बच्चों को खेलने के लिये एकड़ों में जमीन है । गरीबों की रोटी रोजी का इन्तजाम नही । यह तो सरासर अन्याय है । भूमिहीन गरीब खेतिहर मजदूरों की सुधि लो प्रधानजी.....
प्रधान– मजदूरों के वोट से मैं प्रधान नही बना हूं कहते हुए विकास के नाम पर घूल झोंकने वाले वही प्रधानजी जो आवण्टन करवाने का वादा किये थे भाग खड़े हुए । प्रधानजी की राजनीतिज्ञ पैतरेबाजी से बसन्तबाबू तो अवाक् रह गये ।

ब्याह की बेदी

राजेशबाबू नमस्कार.....
नमस्कार प्रतापबाबू बहुत दिनों के बाद दर्शन दिये ।
राजेश तीन दिन पहले तो मिले थे यहीं।
प्रताप–मेरी यादाश्त लगता है कमजोर होती जा रही है ।
राजेश–प्रताप बाबू आप बड़े लोग है । यह तो हमारा सौभाग्य है कि आप हमें दिल से दोस्त मानते है ।
प्रताप– आप दोस्तो पर तो जीवन कुर्बान कर दूं । बताइए किसी काम से आये है । जल्दी में हूं मन्त्रीजी का बुलावा आया है ।
राजेश–हां ..... ।
प्रताप–काम बताइये राजेश बाबू आपका काम नही होगा तो किसका काम होगा । मन्त्री पुत्रवत् व्यवहार करते हैं ।
राजेश–ट्रांस्फर रूकवाना है बस साल भर के लिये। एक लड़की का जीवन बन जायेगा प्रतापबाबू बड़े पुण्य का काम है। मदद कर दो दोस्ती की खातिर राजेशबाबू.....

मतलबी प्रतापबाबू कान खुजलाते हुए गहरी सांस लिये फिर कुछ देर के बाद राजेशबाबू को दूसरे का पता बता कर फर्ज की इतिश्री कर लिये ।

अन्तोगत्वा ट्रान्स्फर नही रूका। एक लड़की का भविष्य ब्याह की बेदी पर कुर्बान हो गया इंजीनियरिंग की पढाई बन्द हो गयी । प्रतापबाबू का दोस्ती के नाम पर छल राजेशबाबू को सदैव सालता रहा ।

औलाद का सुख

कैसे हो बाबा नयन ने औपचारिकता बस पूछा ।

सुखलाल–ठीक हूं बेटा कहते हुए गमछे से मुंह ढंक लिये ।

नयन–बाबा ये क्या आप रो रहे हो ।

सुखलाल–बेटी अब यही मेरी किस्मत है । घरवाली ने बहुत साल पहले नाता तोड़ लिया । बेटों को मैने मां बाप दोनों का प्यार दिया। पढाया लिखा बेटे अपने पैर पर खड़े भी हो गये । वही बेटे मेरा परित्याग कर अपने अपने बाल बच्चों को लेकर अलग दुनिया बसा लिये । मैं रोटी के टुकड़े की बाट जोहता रहता हूं ।

नयन– बाबा क्या आपके कमासुत दो वक्त की रोटी तक नही देते ?

सुखलाल–देते है बेटा अपनी बारी पर..... पर बारी आते राशन खत्म हो जाता है । एक वक्त आधा पेट तो दूसरे वक्त वह भी नही । मेरी हाल तो कुत्ते की तरह हो गयी है । ऐसी औलाद का क्या सुख.....

नयन–बाबा आपकी औलाद जो सुख आपको दे रही है वही उसे भी मिलेगा होगा ।

मुक्ति

अवधेश–क्यों चेहरा उतरा हुआ है ।

विनय– घर के आसपास की दुकानों ने दिन और रात का चैन छिन लिया है। बच्चे रात भर परीक्षा की तैयारी में लगे रहे । सुबह लाइट जाने पर कुछ देर के लिये सोने गये । इतने में मेरे दरवाजे के सामने दूधकी दुकान वाले के जानपहचान की कार एच.डी.1864 कानफोड़ फुहड़ शोर मचाते हुए खड़ी हो गयी । आवाज इतनी तेज थी कि लग रहा था कि कान में कोई भोपू बजा रहा हो ।

विनय– मना क्यों नही किया।

अवधेश–मैने ड्राइवर से कहां भईया थोड़ी आवाज कम कर लो ।
विनय–कम नही किया क्या ?
अवधेश–आवाज कम करना तो दूर वह तो मुझे ही चुप रहने के लिये अंगुली दिखाने लगा।
विनय–सच अमानुष लोग शरीफों का जीना हराम कर दिये हैं ।ऐसे लोगो की तो बस एक दवा है ।
अवधेश–वह क्या ।
विनय–आस पड़ोस के लोग इक्ट्ठा होकर जूते लगाओ और पुलिस को सौप दों ।
अवधेश–काश ऐसी जागरूकता आ जाती तो हर प्रदूषण से मुक्ति मिल जाती ।

घुडकी । लघुकथा।

रामबरन,का भुगतान महीनें बाद भी नही हो रहा था कभी बजट नही है तो कभी एकाण्ट आफिसर नही है का बहाना बनाकर साहब लोग पल्ला झाड़ लेते। बेचारा रामबरन अपने घर –परिवार के खानखर्च की कटौती कर दफतर के चाय–पानी आदि की व्यवस्था कर रहा था क्योकि ये व्यवस्था चपरासी के जिम्मे थी । इसी बीच क्षेत्र के बडे अधिकारी आ गये कार्यालय प्रमुख के आदेशानुसार चपरासी रामबरन ने चाय नाश्ते की ब्यवस्था कि पर वह स्कूटर में पेट्रोल नही भरवा सका । कुछ देर बाद छोटे दर्जे के अधिकारी विद्रोही साहब रामबरन से बीस रूपया पान के लिये झटक लिये खुल्ले नही होने का बहाना करके । रामबरन की पीड़ा जबान पर आ गयी वह बोला सचमुच कुछ साहब लोग पद और दौलत की बन्नरघुडकी छोटे कर्मचारियो पर रौब जमाने के लिये दिखाते है ।
नन्दलाल भारती

फैसला

मुखबिर की सूचना पर राघवगढ़ के थाना इंचार्ज बृजमोहन साहब क्षेत्र के चपे–चपे पर पहरा लगा दिये।उनकी जागरूकता की वजह से सफेदरंग की कार चक्रव्यूह में फंस तो गयी पर चालक भागने में कामयाब हो गया । गोलीबारी से घबराकर खेत में काम कर रहा कृषक युवक उखड़े पांव भागने लगा । तनिक भर में भागते हुए युवक

की छाती पुलिस की गोली से छलनी हो गयी । सफेद कार से पैसठ किलो अफीम बरामद हुई । कृषक युवक ड्राइवर घोषित हो गया। बृजमोहन साहब को एक लाख पैसठ हजार का अवैध पुरस्कार मालिक से प्राप्त हुआ । भगवान के फैसले के अनुसार बृजमोहन साहब पेशी पर जाते समय एक्सीडेण्ट में वहीं मारे गये जहां कृषक युवक को गोली मारी गयी थी ।

गुलामी

सुरभि–पापा ये सब चिड़िया उड़ा दो ।
दिवाकर–क्यो बेटी.....
सुरभि–पापा बेचारी सब रोती रहती है ।
दिवाकर–बेटी रोटी नहीं है सब मिलकर गाती है। पंक्षियों की चहचहाट कानों को सकून देती है । कितने महंगे पिजड़े में ये पंक्षियां रह रही है । बढिया दाना पानी इनको मिल रहा है । ऐसा ठाट कहां मिलेगा इन पंक्षियों को ।
सुरभि–पापा खुला आसमान ही इनके लिये उत्तम है । भले ही दुनिया की सबसे कीमती धातु रोहेलियम के पिजड़े में रखे । सोने की थाली में दाना और चांदी के कटोरे में पानी दें पर है तो कैद में ना ।
दिवाकर–क्या..... ?
सुरभि–हां पापा देश भी तो ऐसे ही कैद था अंग्रेजो के हाथ.....
दिवाकर–हां बेटी।
सुरभि– पापा पंक्षियों को आजाद कर दो । मुझसे इनका रोना बर्दाश्त नही होता। गुलामी आदमी को अच्छी नही लगती तो क्या इन पंक्षियों को लग रही होगी।
बेटी सुरभि की बात दिवाकर के दिल पर चोट कर गयी और हजारों रूपये से खरीदी पंक्षियों को गुलामी से मुक्त कर दिया ।

दीया

आशुतोष–पिताजी जब से मेरी आंख खुली तब से ही आपको नेकी,परमार्थ,सद्भावना और समानता के लिये संघर्षरत् देखा है पर पिताजी.....
दुखहरन– पर क्या बेटा ...

आशुतोष–स्वार्थ आदमी के सिर चढकर बोल रहा हैं। सद्भावना के दर्शन तो होते नही हां जाति,सम्प्रदाय,धर्म का विषधर दौड़ा दौड़ाकर डंस रहा है। जमाने की फिक्र छोड़कर खुद की फिक्र करो पिताजी ।

दुखहरन–कोसने से बुराई खत्म नही होगी चाहे सामाजिक हो या आर्थिक या राजनैतिक । बुराई के खिलाफ तो आवाज बुलन्द करना ही होगा ।

आशुतोष–लोग उन्मादी हो गये है । स्वार्थ,धार्मिक–जातीय वैमनस्यता, उग्रवाद और बम के धमाके ने सारी उम्मीदें तहस नहस कर दिये है।चहुंओर अंधेरा घिर चुका है ।

दुखहरन–बुराई परास्त होती ही है । आतंक का हर अंधेरा छंटेगा । अंधेरा को चीरने के लिये सद्भावना का दीया तो जलाये रखना होगा।यही सच्चे आदमी की असली पूंजी है ।

आशुतोष– सद्भावना का दीया जलाये रखने का वचन देता हूं पिताजी ।